भाष्य विज्ञान

लेखक
डॉ० रामराज डेविड

आभार

सर्वप्रथम मैं परमेश्वर का धन्यवाद करता हूं कि उसने मुझे अपनी बुद्धि और समझ प्रदान की कि मैं भाष्य विज्ञान   पर कुछ लिख सकूं। तत्पश्चात मैं अपने शिक्षकों के प्रति आभार प्रकट करना चाहता हूं जिन्होंने मुझे इतनी गहनता से वचन की शिक्षा प्रदान किया। जिन्होंने मुझे यह पुस्तक लिखने के लिए प्रेरित किया। में उन सभी व्यक्तियों का आभारी हूं जिन्होंने पुस्तक के लेखन, संशोधन, टाइपिंग, और अंतिम रुप देने में, मुझे सहयोग प्रदान किया। उन मित्रों का भी मैं आभारी हूं जिनका स्नेह और सहयोग मुझे हमेंशा मिलता रहा।

Creation Autonomous Academy

विषय सूची

विषय **सूची**

भूमिका		5
अध्याय-1	अध्ययन की आवश्यकता	6
अध्याय-2	पुस्तक का ढांचा	10
अध्याय-3	अध्ययन के सामान्य तरीके	11
अध्याय-4	अध्ययन हेतु आवश्यक सामग्री	13
अध्याय-5	अध्ययन के सामान्य सिद्धान्त	14
अध्याय-6	अध्ययन के महत्वपूर्ण सिद्धान्त	18
अध्याय-7	शिक्ष को लागू करना	21
अध्याय-8	खण्ड का अर्थ निकालना	23
अध्याय-9	मनन अध्ययन विधि	26
अध्याय-10	अध्याय अध्ययन विधि	33
अध्याय-11	चरित्र गुण अध्ययन विधि	39
अध्याय-12	विषय वाक्य अध्ययन विधि	46
अध्याय-13	जीवनी-आत्मकथा अध्ययन विधि	52
अध्याय-14	विषय अध्ययन विधि	60
अध्याय-15	शब्द अध्ययन विधि	67
अध्याय-16	पुस्तक की पृष्ठभूमि अध्ययन विधि	74
अध्याय-17	पुस्तक सर्वेक्षण अध्ययन विधि	80
अध्याय-18	अध्याय विश्लेषण अध्ययन विधि	89
अध्याय-19	पुस्तक की संरचना -बनावट अध्ययन विधि	97
अध्याय-20	एक-एक पद का विश्लेषण अध्ययन विधि	102
अध्याय-21	प्रेरक बाइबल अध्ययन विधि	105
परिभाषिक शब्दावली		113
पुस्तक संदर्भ- ग्रंथावली- बिब्लियोग्राफी		115

Creation Autonomous Academy

भूमिका

आज कल प्राथमिक कलीसिया के समय के विश्वासियों की तरह से अध्ययन की आदत कलीसिया में नहीं रह गयी है। अधिकांश लोग या तो निरक्षर हैं या फिर व्यस्तता का बहाना कर परिश्रम पूर्वक अध्ययन नहीं करना चाहते हैं। जो अध्ययन करते भी हैं वे विभिन्न कारणों से अध्ययन करते हैं, न कि परमेश्वर की मधुर अवाज को सुनने के लिए।

लोग बाइबल को कई कारणों से पढ़ते हैं। कुछ परमेश्वर के विषय सूचना प्राप्त करने के लिए पढ़ते हैं या स्वयं के विषय जानकारी प्राप्त करने हेतु पढ़ते हैं । लोग ऐतिहासिक तथ्य को मालुम करने के लिए पढ़ेंगे या किस प्रकार सफलतापूर्वक जीवन जीने के लिए पढ़ेंगे। वे ये सब चीजें बाइबल में पा सकते हैं। परन्तु यही प्रारम्भिक कारण नहीं कि क्यों परमेश्वर ने हमें अपना वचन दिया है।

जब हम बाइबल को जैसा परमेश्वर चाहता है उस तरीके से पढ़ें; तो हम पृष्ठों पर केवल शब्दों को नहीं देखेंगे। हम महान और सर्वशक्तिमान को नीचे झुककर हमारी आंखों में देखते हुए या हमारे कानों में फुसफुसाते हुए देखेंगें।

परमेश्वर का मुख्य अभिप्राय हमें बाइबल देने का यह नहीं कि हमें वह सूचनाएं दे परन्तु स्वयं अपने आपको हमारे लिए दे दे।

दुर्भाग्यवश इस अदभुत अनन्त प्रगटीकरण को जो बाइबल कहलाती है, बहुत से मसीही या तो अनदेखी करते हैं। या फिर इसे बड़े हल्की तरह से लेते हैं। बहुत से अगुवे सेवकाई की मांग से इतने अधिक व्यस्त हो जाते हैं कि वे इस कीमती साधन की अनदेखी करते हैं। दूसरे कुछ ढीले -ढीले या अनुशासनहीन हैं।

कुछ विश्वासियों ने कभी भी व्यवहारिक निर्देश नहीं पाए कि बाइबल को उचित तरीके से कैसे पढ़ना या अध्ययन करना चाहिए। ऐसी स्थिति में इस विषय पर हिन्दी में सामग्री भी उपलब्ध नहीं है। जो कुछ उपलब्ध है भी वह नगन्य है और आम विश्वासी की पहुंच से बाहर है।

यह अध्ययन इस बात पर ध्यान केन्द्रित करेगा कि किस प्रकार ठोस व्यवहारिक,जीवन परिवर्तन करने वाली, बाइबल पढ़ने वाली आदत को विकसित किया जाए।

‘बाइबल अध्ययन विधि’ नामक यह पुस्तक अनेक वर्षों के अध्ययन-मनन, अध्ययन-अध्यापन के उपरान्त हिन्दी भाषी लोगों की आवश्यकता के अनुसार तैयार की गयी है। यह पुस्तक अध्ययन प्रेमियों, छात्र-छात्राओं, और अगुवों के अन्दर वचन अध्ययन की आदत डालने एवं विश्वास की बुनियाद को मजबूत करने के लिए लिखी गयी है।

यह पुस्तक सभी पाठकों के लिए सरल, रोचक एव व्यवहारिक है। इसमें प्रत्येक विधि को अध्ययन के नमूने के साथ समझाया गया है। पुस्तक में रेखाचित्र, चार्ट एवं उदाहरणों का समुचित प्रयोग किया गया है।

लेखक की इच्छा है कि अध्ययन करने वाले इस पुस्तक से सहायता प्राप्त करें। परमेश्वर से वार्तालाप करने के लिए, वचन में गहन अध्ययन के लिए , जीवन परिवर्तन के लिए, बाइबल का नियमानुसार, विधिवत, व्यवस्थित, व्यवहारिक अध्ययन हेतु इस पुस्तक का उपयोग करें। अध्ययन से प्राप्त परमेश्वर की शिक्षा को अपने जीवन में लागू करें। स्वयं स्वाद चखने के बाद औरों को चखाएं। यह अध्ययन जीवन पर्यन्त चलने वाला अध्ययन है। क्योंकि परमेश्वर का वचन असीमित है।

मैं तो वस्तुतः इस पुस्तक के प्रथम संस्करण को प्रस्तुत करने के द्वारा पाठकों के साथ अपने उस दर्शन को बांटना चाहता हूं, जो परमेश्वर ने मुझे दिया है। ‘प्रत्येक विश्वासी परमेश्वर के वचन को गम्भीरता से सुनने और उसका पालन करने वाला हो।’

Creation Autonomous Academy

अध्याय-1

अध्ययन की आवश्यकता

क-धर्मशास्त्र ऐसा करने की सलाह हमें देता है-

यहोशू को परमेश्वर ने बताया, व्यवस्था की यह पुस्तक तेरे चित से कभी न उतरने पाए, वरन इस पर रात-दिन ध्यान करना और जो कुछ लिखा है उसे करने की चौकसी करना तब तेरा मार्ग सिद्ध और जो कुछ तू करे वह सफल होगा। यहोशू 1:8

भजनकार ने भी कहा, तेरा वचन मैंने अपने हृदय में छिपा रखा है जिससे मैं तेरे विरुद्ध पाप न करुं। भजन 119:11

भविष्यद्वक्ता यशायाह हमें चिताता है, यहोवा की पुस्तक में से खोज करो और पढ़ो। यशायाह 34:16

पौलुस तीमुथियुस को बताता है, जब तक मैं न आऊँ, तब तक पढ़ने, उपदेश देने और सिखाने में लौलीन रह, उन बातों को सोचता रह, और उन्हीं में अपना ध्यान लगाए रह। 1 तीमुथियुस 4:13-15

और फिर पौलुस तीमुथियुस को सलाह देता है, अपने आपको परमेश्वर का ग्रहणयोग्य----ठहराने का प्रयत्न कर, जो लज्जित न होने पाए और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो। 2 तीमुथियुस 2:15

कुलुस्सियों की कलीसिया को पौलुस लिखता है, परमेश्वर के वचन को अपने हृदय में बहुतायत से बसने दो। कुलु० 3:16 और लूका प्रेरितों के काम की पुस्तक में बीरिया के यहूदियों को आज्ञा देता है कि ये लोग तो थिस्सलुनीकियों के यहूदियों से भले थे और उन्होंने बड़ी लालसा से वचन ग्रहण किया और प्रतिदिन पवित्रशास्त्र में ढूंढ़ते रहे कि ये बातें यों ही हैं, कि नहीं। प्रेरितों० 17:11

Creation Autonomous Academy

जबकि परमेश्वर वह परमेश्वर है जो अपने आपको हम पर प्रगट करने की इच्छा रखता है तो वह खामोश नहीं रहा है। सृष्टि से लेकर पूरे इतिहास में परमेश्वर ने अपने आपको बोलकर प्रगट किया है। परमेश्वर के सभी अभिप्राय और मनुष्य के लिए योजना केवल लिखत वचनों यानि बाइबल में प्रगट किए गए हैं।

परन्तु एक दूसरा कारण भी है कि हमें क्यों बाइबल का अध्ययन करना चाहिएः-

ख-बाइबल हमारी प्रतिदिन की आवश्यकताओं के लिए धन का भण्डार है-

यदि हम प्रतिदिन लगातार परमेश्वर के वचन के अध्ययन में अपने आपको लगाते हैं तो एक अदभुत फसल को काटने पाएंगे। यह फसल कई गुना होगी। इसे हम अपने व्यक्तिगत स्तर पर, पारिवारिक रुप में और उस सेवकाई में जिसे परमेश्वर ने हमें दी है तब फलवन्त होती हुई देख पाएंगे।

यदि हम अपने जीवन में परमेश्वर के वचन को बोते ही रहेंगे तो हमारे लिए बहुत से लाभ की गारन्टी दी जाती है। गला० 6:2-9 नीचे दी हुई सूची में कुछ आशीषें दी गयी हैं जो परमेश्वर के वचन के द्वारा आती हैं।

1-वचन हमारे उद्धार को सुरक्षित रखता है-

‘उस वचन को नम्रता से ग्रहण कर लो जो हृदय में बोया गया है और जो तुम्हारे प्राणों का उद्धार कर सकता है।’ याकूब 1:21 ‘इन सब बातों में स्थिर रह, क्योंकि यदि तू ऐसा करता रहेगा तो तू अपने और अपने सुनने वालों के लिए भी उद्धार का कारण होगा।’ 1 तीमुथियुस 4:16

2-यह आत्मिक बढ़ोत्तरी के लिए आवश्यक है-

‘नये जन्मे हुए बच्चों की नाईं निर्मल आत्मिक दूध की लालसा करो ताकि उसके द्वारा उद्धार पाने के लिए बढते जाओ।’ 1 पत० 2:2

3-यह आत्मिक सफाई करता है-

परमेश्वर के वचन में शुद्ध करने की ताकत है जो हमारे विचारों, भावनाओं, व्यवहार, उद्देश्य और इच्छाओं को शुद्ध करता है। इब्रा० 4:12 पौलुस कलीसिया को परमेश्वर के वचन के पानी से शुद्ध और पवित्र किए जाने का वर्णन करता है। इफि० 5:26 यीशु ने व्यक्तिगत शुद्धता के विषय यह कहते हुए इशारा किया ,‘तुम तो उस वचन के कारण जो मैंने तुमसे कहा है, शुद्ध हो।’ यूहन्ना 15:3

4-वचन आत्मिक स्वतंत्रता और उदारता को प्रगट करता है-

‘यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे तो सचमुच मेरे चेले ठहरोगे और सत्य को जानोगे और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा।’ यूहन्ना 8:31-32 यह स्वतंत्रता भावुकता, मानसिक और आत्मिक बन्धनों को तोड़ती है।

5-यह पाप के विरुद्ध चितौनी की सुरक्षा को स्थापित करता है-

‘तेरे वचन को मैंने अपने हृदय में छिपा रखा है कि तेरे विरुद्ध पाप न करुं।’ भजन 119:11

6-वचन परमेश्वर की सामर्थ्य से हमें सुधारने में कार्य करता है-

‘क्योंकि उसके ईश्वरीय सामर्थ्य ने सब कुछ जो जीवन और भक्ति से सम्बन्ध रखता है, हमें उसी की पहचान के द्वारा दिया है जिसने हमें अपनी ही महिमा और सद्गुण के अनुसार बुलाया है जिनके द्वारा उसने हमें बहुमूल्य और बहुत ही बड़ी प्रतिज्ञाएं दी हैं, ताकि इनके द्वारा तुम उस सड़ाहट से छूटकर जो संसार में बुरी अभिलाषाओं से होती हैं, ईश्वरीय स्वभाव के सहभागी हो जाओ। 2 पत० 1:3-4

7-यह विश्वास के निर्माण की ईंट है-

‘इसीलिए विश्वास सुनने से और सुनना मसीह के वचन से होता है।’ रोमि० 10:17 परमेश्वर का वचन उत्तेजित करता, बढ़ाता और हमारे विश्वास को सामर्थ्य देता है।

8 -यह बुद्धि और समझ देता है-

'तेरी बातों के खुलने से प्रकाश होता है, उससे भोले लोग समझ प्राप्त करते हैं।' भजन 119:130, नीति० 6:23

9-वचन हमें निर्देश व उपदेश देता है-

'परन्तु ये सब बातें -पुराने नियम की घटनाएं-जो उन पर पड़ीं दृष्टान्त की रीति पर थीं और वे हमारी चेतावनी के लिए जो जगत के अन्तिम समय में रहते हैं लिखी गयी हैं, इसलिए जो समझता है कि मैं स्थिर हूं वह चौकस रहे कि कहीं गिर न पड़े।' 1 कुरि० 10:11-12 परमेश्वर के वचन में आज्ञाकारिता की आशीष को हम दूसरों के अनुभवों से सीख सकते हैं या फिर स्वार्थ, पापमय चुनाव के परिणाम को भुगत सकते हैं।

10-परमेश्वर का वचन हमें सुधारता और सामर्थ्य देता है-

'मुझे अपने वचन के अनुसार सम्भाल।' भजन 119:28 'और अब मैं तुम्हें परमेश्वर को और उसके अनुग्रह के वचन को सौंप देता हूं, जो तुम्हारी उन्नति कर सकता है और सब पवित्रों में साझी करके मीरास दे सकता है।' प्रेरितों० 20:32

11-वह हमें संवारता है-

'हर एक पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश देने, और समझाने, और सुधारने और धार्मिकता की शिक्षा के लिए लाभदायक है, ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए।' 2 तीमु० 3:16-17 क्या कभी आपने यह महसूस किया है कि जैसा आपको परमेश्वर के लिए प्रभावशाली होना चाहिए 'वैसा आपके पास नहीं है?' तो अपने आपको परमेश्वर के वचन से भर दीजिए और जो कुछ परमेश्वर आपसे चाहता है उसके लिए आपको तैयार करने में ,संवारने, सुसज्जित करने में उसे सहायता करने दीजिए।

12-यह आत्मिक युद्ध के लिए प्रभावशाली हथियार है-

'और परमेश्वर का वचन जो आत्मा की तलवार है ले लो।' इफि० 6:17 और मत्ती 4:11 जहां यीशु ने परीक्षा में शैतान के साथ युद्ध किया। पाप और परीक्षाओं के विरुद्ध लड़ने का सबसे उत्तम तरीका या शैतान की गतिविधियों का सामना करने का तरीका सत्य से लड़ना है जो पवित्र शास्त्र में और यीशु के नाम में पाया जाता है।

Creation Autonomous Academy

13-यह हमें ग्रहणयोग्य बनाता है-

'अपने आपको परमेश्वर का ग्रहणयोग्य और ऐसा काम करने वाला ठहराने का यत्न कर जो लज्जित न होने पाए और जो सत्य के वचन को ठीक रीति से काम में लाता हो।' 2 तीमु० 2:15 'ग्रहणयोग्य' के लिए यूनानी शब्द डोकीमोस इस्तेमाल किया गया है, यह वर्णन करता है कि जो कुछ परखा गया है, इस प्रकार शुद्ध किया गया है और सेवा के लिए ठीक ठहराया गया है।

14-परीक्षा के समय वचन तसल्ली देता है-

'मेरे दुख में मुझे शान्ति उसी से हुई है, क्योंकि तेरे वचन के द्वारा मैंने जीवन पाया है।' भजन 119:50 भले ही उस समय में भी जब प्रभु का वचन हमारी परीक्षा क्यों न करे हमें तसल्ली मिल सकती है। क्योंकि यह परमेश्वर है जो अपने कार्य में लगा हुआ है। 'जब तक कि उसकी बात पूरी न हुई तब तक यहोवा का वचन उसे कसौटी पर कसता गया।' भजन 105:19

15-यह परमेश्वर की शान्ति देता है-

'तेरी व्यवस्था से प्रीति रखने वालों को बड़ी शान्ति होती है और उनको कुछ ठोकर नहीं लगती।' भजन 119:165 परमेश्वर के वचन के द्वारा हम सुरक्षा, भरोसा और आश्वासन पाते हैं।

16-वचन सुख और आशा देता है-

'जितनी बातें पहले से लिखी गयीं वे हमारी ही शिक्षा के लिए लिखी गयी हैं कि हम धीरज और पवित्र शास्त्र की शान्ति के द्वारा आशा रखें।' रोमि० 15:4

17-यह दैवीय मार्गदर्शन व अगुवाई प्रदान करता है-

'तेरा वचन मेरे पांव के लिए दीपक और मेरे पथ के लिए उजियाला है।' भजन 119:105 'तेरी बातों के खुलने से प्रकाश होता है, उससे भोले लोग समझ प्राप्त करते हैं।' भजन 119:130 पवित्र शास्त्र जीवन में चलने की पहचान, धार्मिकता के मार्ग का आश्वासन और स्पष्ट समझ प्रदान करता है।

18-वचन जीवन की चुनौतियों का व्यवहारिक उत्तर देता है-

'तब मैं अपनी नामधराई करने वालों को कुछ उत्तर दे सकूंगा क्योंकि मेरा भरोसा तेरे वचन पर है।' भजन 119:42, लूका 12:11-12,1 पत० 3:15, यूहन्ना 14:26

19-वचन हमें शारीरिक चंगाई का आश्वासन देता है-

'वह आप ही हमारे पापों को अपनी देह पर लिए हुए क्रूस पर चढ़ गया जिससे हम पापों के लिए मरकर धार्मिकता के लिए जीवन बिताएं, उसी के मार खाने से तुम चंगे हुए।' 1 पत० 2:24 'वह अपने वचन के द्वारा उनको चंगा करता और जिस गड़हे में वे पड़े हैं उससे निकालता है।' भजन 107:20

Creation Autonomous Academy

20-वचन हमारे जीवन में स्थिरता प्रदान करता है-

चट्टान पर घर बनाने का दृष्टान्त हमें परमेश्वर के वचन की स्थिरता प्रदान करने की सामर्थ्य दिखाता है। लूका 6:47-49, भजन 1:1-3_कई लाभों में से ये कुछ लाभ का वर्णन है जो परमेश्वरके 'वचन के भंडार' में पाए जाते हैं। इन लाभों को प्रतिदिन के जीवन में अनुभव करने के लिए हम मसीह के प्रभुत्व में अपने को समर्पण करें, उसके वचन को जानें और उसके वचन को केवल सुनने वाले ही नहीं पर उस पर चलने वाले भी हों। याकूब 1:22

अध्याय-2

पुस्तक का ढांचा

पुस्तकों का संग्रह	एक पुस्तक	बाइबल
66	1	1

पुराना नियम ← दो नियम → नया नियम

39 | 27

बाइबल का अध्ययन करने के लिए बाइबल के ढांचे को समझना आवश्यक है। बाइबल में 66 पुस्तकें हैं अर्थात बाइबल पुस्तकों का संग्रह है। 66 पुस्तकों की एक पुस्तक है बाइबल। बाइबल में दो नियम हैं पुराना नियम और नया नियम। पुराना नियम में 39 पुस्तकें हैं और नया नियम में 27 पुस्तकें हैं।

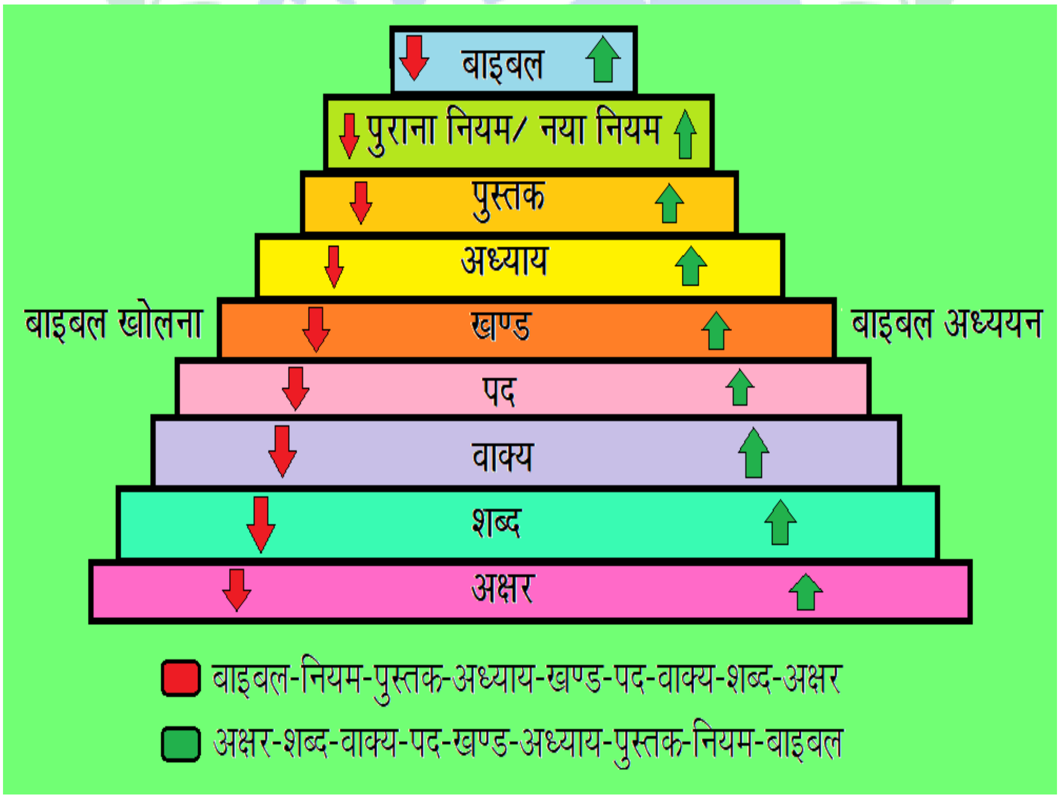

जब हम बाइबल के किसी हिस्से या खण्ड का अध्ययन करते हैं तो हमें यह जानना आवश्यक है, कि खण्ड बाइबल के अन्दर है जो परमेश्वर का वचन है। बाइबल में दो नियम हैं पुराना नियम और नया नियम। यह भी जानना आवश्यक है कि खण्ड पुराना नियम का है या नया नियम का है। यदि नियम की जानकारी हो चुकी है,तो यह भी जानें कि नियमों के अन्दर पुस्तकें हैं। पता चलाएं कि खण्ड किस पुस्तक का है? पुस्तक का पता लग जाने के बाद देखें कि खण्ड किस अध्याय का है? अब देखें कि अध्याय के अन्दर खण्ड कहां पर है? अब तक हमने खण्ड की पृष्ठभूमि प्राप्त

किया है। खण्ड के अन्दर पद हैं। पद वाक्यों से मिलकर बने हैं और वाक्य शब्दों से मिलकर बनें हैं। शब्द अक्षरों से मिलकर बने हैं।

बाइबल का अध्ययन करने के लिए अक्षर ज्ञान का होना आवश्यक है। अध्ययन करते समय सर्वप्रथम जिन शब्दों से मिलकर वाक्य बना है उनका अर्थ जानना आवश्यक है। शब्दों के बाद पूरे वाक्य का और फिर पूरे पद का , उसके बाद पूरे खण्ड का अर्थ निकाला जाता है। खण्ड पूरे अध्याय के सन्दर्भ से और अध्याय पूरी पुस्तक के सन्दर्भ से तथा पुस्तक पूरी बाइबल के सन्दर्भ से जुड़े हैं। कृपया खण्ड को सन्दर्भ से बाहर न निकालें।

अक्षर-शब्द-वाक्य-पद-खण्ड-अध्याय-पुस्तक-नियम-बाइबल

Creation Autonomous Academy

अध्याय-3

अध्ययन के सामान्य तरीके

1-प्रार्थना-

प्रार्थना के साथ अध्ययन प्रारम्भ करें। भजन 119:18

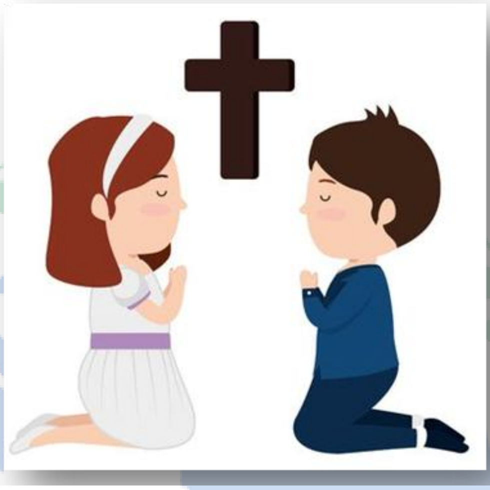

2-खोज-

छानबीन अर्थात् खोज करें। यूहन्ना 5:39

३-मनन-

Creation Autonomous Academy

ध्यान दें अर्थात मनन करें। यहोशू 1:8, भजन 1:2 मनन करने में निम्नलिखित बातें व्यवहारिक रुप से पायी जानी चाहिए-

1-किसी विषय का अध्ययन करते हुए उसके वास्तविक अर्थ पर ध्यान दें।

2-ध्यान दें कि इस वास्तविक अर्थ से स्वयं को क्या शिक्षा मिलती है।

3-प्रार्थना करें कि यह शिक्षा स्वयं के जीवन की एक अंग बन जाए।

4-प्रार्थना करें और ध्यान दें कि यह शिक्षा स्वयं से प्रगट हो।

5-अन्त में स्वयं को परमेश्वर के हाथों में पूरा-पूरा सौंप दें और उस पर भरोसा रखें कि उस शिक्षा के पालन करने में वह आगे को शक्ति प्रदान करे।

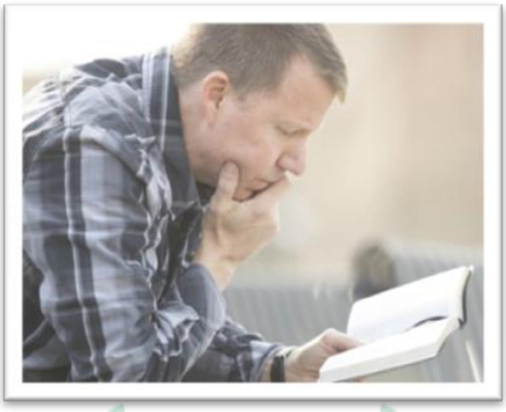

4-मिलान करें-

मिलान करें 1 कुरि० 2:13 बाइबल के किसी एक विषय को पूरी बाइबल में देखें और मिलान करें। उदाहरण के लिए -'परमेश्वर का वचन'

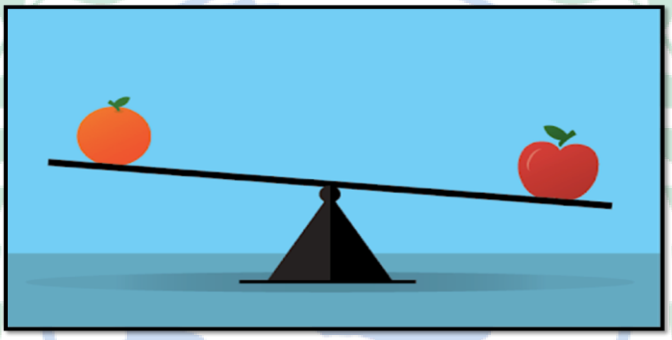

याकूब 1:23-दर्पण

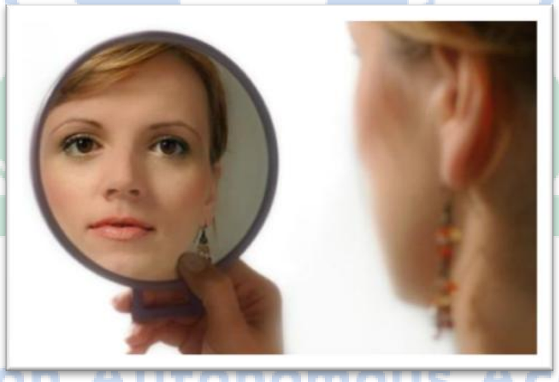

Creation Autonomous Academy

इफि० 5:26-पवित्र करने वाला जल

1 पत० 2:2- निर्मल आत्मिक दूध

इब्रा० 5:12-अन्न

भजन 19:10-शहद स्वाद के लिए

यिर्मयाह 23:29-आग गर्म करने के लिए,हथौड़ा तोड़ने-फोड़ने के लिए

इफि० 6:17-तलवार लड़ने के लिए

मत्ती 13:8,23-बीज बढ़ने के लिए

भजन 119:105-दीपक अगुवाई के लिए

119:18-व्यवस्था की पुस्तक, कानून बताने के लिए

Creation Autonomous Academy

19:10-सोना समय-समय तथा अनन्त के लिए खजाना

5- उचित प्रश्न

उचित प्रश्न पूछना अपनें आप में एक कला है । जितना ज्यादा आप प्रश्न पूछेंगे उतना ज्यादा आप उस विशेष हिस्से से प्राप्त करेंगे । अधिक लाभ प्राप्त करने के लिए आपको पूछताछ करने वाला मस्तिष्क होना चाहिए । यह ऐसे ही है जैसे आपको एक नया चश्मा दिया गया है ताकि नया सत्य आपके सामने जाहिर हो सके । (यूहन्ना 14:5)

6- लेखन

जो कुछ आपने पता लगाया तथा अवलोकन किया है उसे लिख लेना जरूरी है। एक नोटबुक बाइबल के साथ अवश्य रहना चाहिए । ''मेरा आत्मिक नोटबुक'' या' आत्मचिन्तन' बाइबल के साथ रखना जरूरी है । उसमें ऐसी बातों को लिखना चाहिए जो बातें परमेश्वर ने आपको अपने अन्तरात्मा से बताई हो ।

7- अमल में लाना

यह काफी नहीं है कि केवल बाइबल की सच्चाइयों का व्याख्यान भर करें परन्तु अपने अन्दर आत्मसात करते हुए अपने जीवन का अंग बना लें । उसी प्रकार जैसे एक गाय जुगाली करती है और उस भोजन को पचाती है ताकि उससे शक्ति मिल सके । हमें केवल वचन का सुनने वाला नहीं परन्तु उस पर चलने वाला भी बनना है, तभी हमारे जीवन मे उचित प्रगति होगी । याकूब 1:22

8- क्रमबद्ध अध्ययन :

हमें बाइबल का अध्ययन सिलसिलेवार करना चाहिए, न कि थोडा यहां से और थोडा वहां से । प्रतिदिन हमारी एक योजना होनी चाहिए । जैसे- हम किस पुस्तक का अध्ययन करेंगे । सम्पूर्ण बाइबल का अध्ययन जरूरी है न कि केवल नये नियम का। सम्पूर्ण पवित्रशास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है । 2 तीमुथियुस 3:16

9- असीमित खजानें की खोज जारी रहे :

सारी सिद्धता में मैं एक सीमा देखता हूँ परन्तु तेरी विधियां असीमित हैं । भजन 119:96 आप परमेश्वर के वचन की गहराई तक चले जायेंगे परन्तु उसका थाह नहीं पा सकेंगे । नीतिवचन 2:4-5

Creation Autonomous Academy

अध्याय-4

अध्ययन हेतु आवश्यक सामग्री

1--मातृ-भाषा में लिखी बाइबल-

अपनी मातृ-भाषा में लिखी गयी बाइबल।

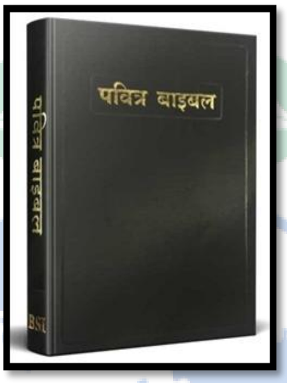

2-भिन्न-भिन्न अनुवाद वाली बाइबलें-

यदि अपनी मातृ-भाषा की बाइबल को पढ़ने से कोई बात समझ में नहीं आती तो उसे अन्य अनुवाद वाली बाइबलों में भी देखें। अच्छा होगा कि जो कुछ भी हम पढ़ें उसे अन्य भाषाओं में भी देखें। इस प्रकार बहुत सी बातें स्पष्ट हो जाएंगी।

3-भाषा शब्द-कोश-

Creation Autonomous Academy

बहुत से शब्द ऐसे मिलेंगे जिनका अर्थ हम नहीं जानते होंगे। ऐसे शब्दों को भाषा शब्दकोश में देखें। परन्तु यह ध्यान रहे कि एक शब्द के बहुत से अर्थ दिए रहते हैं जो उपयुक्त नहीं होते हैं। भाषा शब्द कोश में से उचित अर्थ ही चुनकर अध्ययन करें।

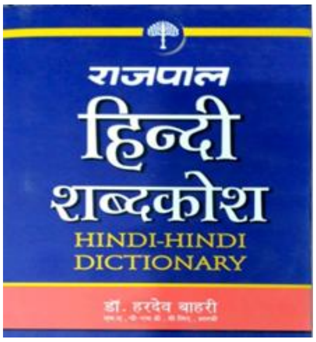

4-बाइबल शब्द -कोश-

बाइबल के किसी भी शब्द का वृहद् अध्ययन करने के लिए इस शब्द कोश का प्रयोग बहुत ही लाभदायक होता है। इस शब्द कोश में एक-एक विषय पर काफी अच्छा अध्ययन दिया रहता है।

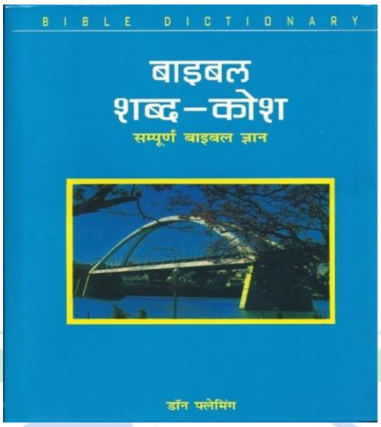

5-बाइबल टीका-

यह वह पुस्तक है जिसमें भिन्न-भिन्न विषयों तथा पुस्तकों पर टीका -टिप्पणी दी रहती है। बाइबल के एक-एक पद पर हम इस पुस्तक में टीका-टिप्पणी पाते हैं।

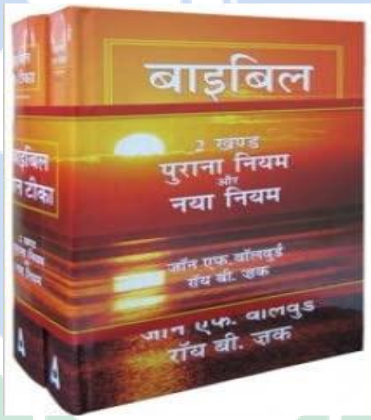

6-बाइबल शब्दानुक्रमाणिका-

यदि आप यह जानना चाहते हैं कि बाइबल का एक ही शब्द बाइबल में कहां-कहां पाया जाता है, तो इस पुस्तक को खोलकर उसमें शब्द कोश की तरह उस शब्द को देखें। वहां उस शब्द के बहुत से हवाले दिए रहते हैं।

Creation Academy

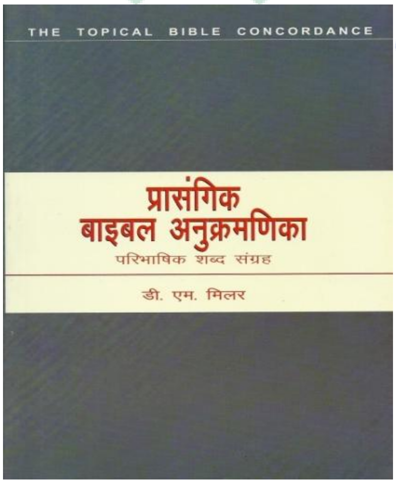

7-कांपी, पेन अथवा पेंसिल-

अध्ययन करते समय कापी तथा पेन का प्रयोग बहुत ही आवश्यक होता है।

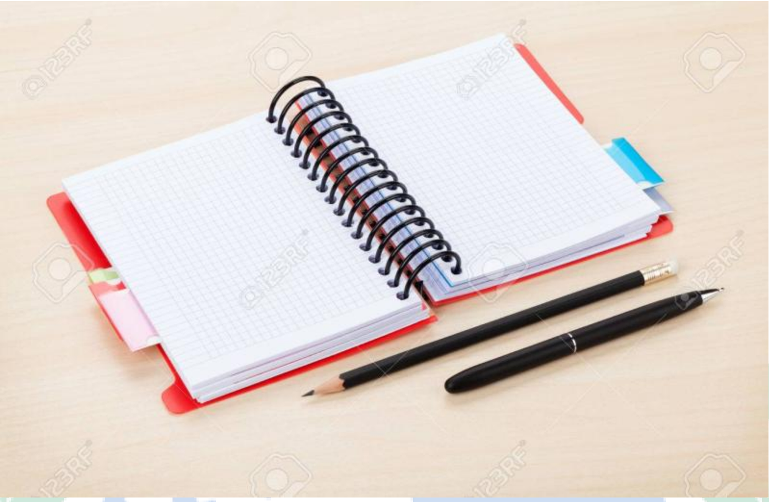

Creation Autonomous Academy

अध्याय-5

अध्ययन के सामान्य सिद्धान्त

पहला सिद्धान्त- प्रसंग, संदर्भ का अध्ययन करें-

'प्रसंग' का शाब्दिक अर्थ 'आसपास' होता है।

पुस्तक के जिस खण्ड का अध्ययन करते हैं, तो उसके आसपास अर्थात् आगे पीछे वाले अंश या भाग 'प्रसंग' कहलाते हैं, जैसे, यदि किसी अध्याय के पद 26 का अध्ययन कर रहे हैं तो पद 25 व उससे पहले के पद तथा पद 27 व उससे आगे के पद प्रसंग होंगे। इसी प्रकार अध्यायों के साथ भी होगा।

दो प्रकार के प्रसंगों का प्रयोग हम बाइबल अध्ययन में कर सकते हैंः

1-बिल्कुल ही निकट वाले प्रसंग जैसे पहला व अगला पद,पैराग्राफ इत्यादि ।

2-दूर-दूर के प्रसंग,जैसे पहला व अगला अध्याय या पुस्तक का कोई और भाग।

जब एक वाक्य को ठीक से पढ़ा जाए तथा उसका अध्ययन किया जाए तभी उस वाक्य के किसी एक शब्द का अर्थ हम सही-सही समझ सकेंगे। इस कारण वाक्य ही उसमें लिखे गए शब्द का प्रसंग होगा।

प्रसंग का अध्ययन करने के लिए कुछ विशेष निर्देश-

1-सर्वप्रथम, उस पद को देखें और पढ़ें जिसका आप व्याख्यान करने जा रहे हैं। उसके अर्थ की क्या संभावना है? आप को या तो एक अर्थ मिलेगा, या फिर दो या तीन। इनको आप लिख लें। यदि कोई परेशानी हो, अर्थ समझने में, तो उसे भी लिख लें।

2-अब आप उस पद को प्रसंग के साथ पढ़ें। जितना अधिक हो उतना आप पढ़ लें। सबसे पहली बार आप एक निगाह में पढ़ लें ताकि आप को यह पता चल जाए कि जो कुछ आपने पढ़ा है उसमें कौन सी बातें पायी जाती हैं। तद्पश्चात् उसी पढ़े हुए प्रसंगों को ध्यानपूर्वक पढ़ें। इस समय वाक्यों तथा पदों के जोड़ों को देखें,परन्तु व्याख्यान न करें।

3-अब उस पद या हिस्से को और भी गहराई से पढ़ें। वाक्यों को आपस में जोड़ने वाले शब्दों को लिख लें। ये शब्द निम्न प्रकार के हो सकते हैंः-

क- विचार दर्शाने वाले शब्द जैसे, परन्तु, समय से, क्योंकि, इसलिए, फिर भी, इत्यादि।

ख- समय दर्शाने वाले शब्द जैसे, तब, तुरन्त, बाद में, कब इत्यादि।

ग- अन्य संकेत करने वाले शब्द जो अर्थ को स्पष्ट करते हैं जैसे, ऐसा, यह, वह इत्यादि।

4-बार-बार दोहराए गए शब्दों को चुनकर लिख लें। मिलते- जुलते शब्दों को भी लिख लें जैसे बोता, कटनी, गलातियों 6:6-10 सहभागी, खाओ, पीओ 1 कुरि० 10:14-31

5- अब आप पूरे हिस्से को अपनी भाषा में लिखें ताकि आपको यह मालुम हो कि आपने इसे ठीक से समझा या नहीं।

6- अब आप इस प्रश्न का उत्तर देने का प्रयत्न करेंः

प्रसंग के साथ इस पद का क्या अर्थ निकलता है?

यदि आप उत्तर देने में असमर्थ हैं तो दुबारा अध्ययन करें, निराश न हों, अपने आपको परमेश्वर के हाथों में सौंप दें ताकि वह आगे को आपको समझने की शक्ति प्रदान करे।

दूसरा सिद्धान्त- शब्दों का अध्ययन करें शब्द कुन्जी हैं

शब्दों के सही अर्थ के साथ ही बाइबल के किसी हिस्से का व्याख्यान करें। शब्द सोच- विचार, बोली और संचारण के निर्माण की ईंटें हैं। जब हम अर्थ के साथ शब्दों का संयोजन करते हैं तो भाषा का निर्माण होता है। और मनुष्य भाषा के ही द्वारा एक दूसरे को कुछ बताता है। अर्थात संचारण करता है। भाषा के द्वारा ही परमेश्वर ने मनुष्यों से बातचीत की। परमेश्वर ने मनुष्यों की साधारण भाषा का प्रयोग किया और संदेश दिया।

इस कारण 'शब्द' भाषा की एक इकाई है। यदि किसी एक शब्द को ही देखें तो हम उसके सही अर्थ को नहीं समझ पाएंगे। उदाहरणार्थ- प्रकाश। प्रकाश के दो अर्थ हो सकते हैं। प्रकाश को हम सूर्य का प्रकाश भी समझते हैं, और किसी चीज को प्रगट करना भी। जब हम प्रकाश के साथ संयोजित अन्य शब्दों को देखेंगे तो सही- सही अर्थ पता चल जाएगा।

शब्दों के विषय कुछ सच्चाइयां- तथ्यः-

1- कुछ समय के बाद शब्द अपने अर्थ को बदलते हैं। लोग पुराने शब्दों को नई रीति से प्रयोग करते हैं। सही अर्थ के साथ व्याख्यान करने के लिए यह जानना बहुत जरुरी है कि बाइबल के अनुवाद के समय उस शब्द का अर्थ क्या था।

2- भिन्न- भिन्न शब्दों का या तो एक सा या फिर मिलता-जुलता अर्थ होता है। जैसे :राज्य और महिमा मत्ती 20:21, मरकुस 10:37 जीवन और परमेश्वर का राज्य मत्ती 18:9, मरकुस 9:47 भार अथवा बोझ गल० 6:2,5 विनतियां अथवा प्रार्थनाएं 1 तिमु० 2:1

3- परमेश्वर ने अपनी सच्चाई को प्रकट करने के लिए मनुष्यों के शब्दों का प्रयोग किया।

4- कभी- कभी बाइबल में विभिन्न स्थानों पर एक ही शब्द को भिन्न-भिन्न अर्थों के साथ प्रयोग किया गया है। कभी- कभी एक ही भाग में उस शब्द का अर्थ भिन्न है।

शब्दों का अध्ययन करने के लिए कुछ विशेष निर्देशः-

1-शब्द के अर्थ को शब्द- कोश में देखें।

2- शब्द का अध्ययन उसके प्रसंग - संदर्भ में करें। जैसेः नीति० 14:15,18 जहां भोला लिखा है। हम इसका अर्थ समझेंगे 'एक सीधा मनुष्य' परन्तु प्रसंग बताता है,'बुद्धू या मूर्ख'।

3- बाइबल अनुक्रमाणिका का प्रयोग करें।

Creation Autonomous Academy

तीसरा सिद्धान्त- अध्ययन किए जाने वाले हिस्से को उसके व्याकरण में देखें:-

व्याकरण में दो महत्वपूर्ण बातें पायी जाती हैं, अर्थात् किस प्रकार के शब्द हैं? और दूसरा यह कि शब्दों का आपस में क्या सम्बन्ध है? यहां पर हम शब्दों के आपसी सम्बन्धों पर ही विशेष ध्यान देंगे।

यह देखें कि उस वाक्य की क्रिया किस काल में लिखी गयी है, अर्थात् क्या वह वर्तमान काल में, भूत काल में या भविष्य काल में है?

जब भविष्यद्वाणियों को देखते हैं तो कुछ कठिनाई समझने में होती है। पुराने नियम में विशेषकर। मुख्य तौर पर भविष्यद्वाणी भविष्य काल की क्रिया में है, परन्तु सभी नहीं। कभी- कभी भविष्य काल की भविष्यद्वाणी को भूत काल की क्रिया में ही लिखा गया है जैसे : यशायाह 53 अध्याय । भजन 22 अध्याय को वर्तमान काल की क्रिया में लिखा गया है, लेकिन भविष्यद्वाणी प्रभु यीशु की मृत्यु की ओर ही संकेत करती है।

संज्ञा एवं सर्वनाम को उस भाग में ध्यानपूर्वक देखें।

समुच्चयबोधकों को देखें। अर्थात वाक्यों को एक साथ जोड़ने वाले शब्दों का अध्ययन करना, जैसे, और, क्योंकि इत्यादि।

व्याकरण के सिद्धान्तों को प्रयोग में लाने के लिए कुछ निर्देश:-

1-जहां पर किसी पद या हिस्से का अर्थ स्पष्ट न हो, शब्दों का अध्ययन व्याकरण में करें।

2- शब्दों का एक दूसरे के साथ सम्बन्धों का अध्ययन करें।

3- हर सम्भव अर्थ को नोट करें।

4- यदि सम्भव अर्थ एक से अधिक निकलते हैं, तो अन्य सिद्धान्तों का भी प्रयोग करें, विशेषकर प्रसंग -संदर्भ का।

चौथा सिद्धान्त- लेखक के उद्देश्य तथा अभिप्राय का अध्ययन करें:-

Creation Autonomous Academy

लेखक के उद्देश्य तथा अभिप्राय- योजना को जानने के लिए कुछ निर्देश:-

1- सर्वप्रथम देखें कि उद्देश्य दर्शाया गया है कि नहीं। यदि नहीं, तो यह पता चलाएं कि इस सिलसिले में क्या कोई संकेत मिलता है? लेकिन इन संकेतों के प्रति सावधानी बरतें कि ये संकेत स्पष्ट हों।

2- पुस्तक की बनावट का अध्ययन करें अर्थात् ढांचा।

3- जब उद्देश्य या अभिप्राय स्पष्ट है, तब उस पुस्तक के प्रत्येक हिस्से का अध्ययन करें, यह ध्यान में रखते हुए कि आपका व्याख्यान करना बिल्कुल ठीक है।

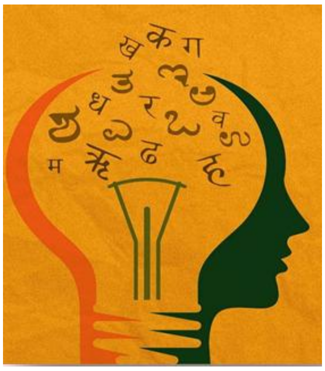

पांचवा सिद्धांत- अध्ययन किए जाने वाले हिस्से की पृष्ठभूमि का अध्ययन करेंः-

पृष्ठभूमि में निम्नलिखित बातें पायी जाती हैंः

1- ऐतिहासिक अंगः दानि० 5:7,16 हमें बताता है कि दानिय्येल को तीसरा राजा बनाया गया था। यह इसलिए हुआ क्योंकि बेलशस्सर और उसके पिता, इतिहास के अनुसार, एक साथ राज्य करते थे। मत्ती 2:22 में इतिहास हमें बताता है कि अरखिलाउस प्रभु यीशु मसीह के लिए अपने पिता से भी ज्यादा खतरनाक था।

2- भौगोलिक अंगः यूहन्ना 4:4 प्रभु यीशु मसीह को सामरिया से होकर जाना अवश्य था क्योंकि यह प्रदेश यहूदिया और गलील के बीच में था। मर० 11:13 अंजीर के फलों का मोसम नहीं था, लेकिन फलदायक पेड़ बे मौसम में भी फलते थे।

3- सांस्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक, सांसारिक अंगः लूका 9:59, 'अपने पिता को गाड़ दूं।' यह पहलौठे पुत्र के लिए एक आवश्यक रीति- रिवाज था। लूका 14:26, मृत्यु दण्ड पाए हुए अपराधियों के लिए जरुरी था कि वे खुद अपना क्रूस उठा कर ले जाएं।

छठा सिद्धान्त- सम्पूर्ण बाइबल की शिक्षा के आधार परः-

बाइबल के किसी भी हिस्से का व्याख्यान सम्पूर्ण बाइबल की शिक्षा के अन्तर्गत करें।

इस नियम का पालन करने के लिए हमारे लिए यह बहुत जरुरी है कि हम पूरी बाइबल को जानें। इस कारण बाइबल को लगातार पढ़ें और उसका अध्ययन करें ताकि उसका ज्ञान हमें अधिक से अधिक प्राप्त हो सके। यह बहुत ही आवश्यक है।

मसीहियों में कुछ गलत विश्वास और शिक्षाएं इस कारण आ गई हैं क्योंकि सिखाने वाले अगुवे तथा शिक्षक व स्वयं अध्ययन करने वाले, बाइबल के केवल कुछ ही हिस्सों को लेते हैं और बाकी और हिस्सों को छोंड़ देते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि किसी एक विषय को ठीक से समझने के लिए पूरी बाइबल का सहारा लेना होगा और यह देखना होगा कि पूरी बाइबल उस विषय के सम्बन्ध में क्या कहती है।

Creation Autonomous Academy

अध्याय- 6

अध्ययन के महत्वपूर्ण सिद्धान्त

अर्थों के सम्बन्ध में ध्यान देने योग्य बातें।

जब हम बाइबल का अध्ययन करते हैं तो हमारे लिए यह बहुत आवश्यक है कि हम तीन प्रकार के अर्थों को ध्यान में रखें जो निम्नलिखित हैंः-

1- स्वाभाविक अर्थ अर्थात् सरलता का सिद्धान्त

2- वास्तविक अर्थ अर्थात् ऐतिहासिक सिद्धान्त

3- सामान्य अर्थ अर्थात् सामन्जस्यता का सिद्धान्त

इन अर्थों को ध्यान में रखना इसलिए आवश्यक है क्योंकि वर्तमान युग में बहुत से बाइबल विरोधी सम्प्रदायों का प्रचलन हमें मिलता है जो अपने मतलब को सिद्ध करने के लिए बाइबल को उसके प्रसंग के विपरीत इस्तेमाल करते हैं। नए नियम में भी हमें चितौनी दी गई है और इस प्रकार के गलत सम्प्रदायों की कड़ी आलोचना की गई है। 2 कुरि० 4:2, 2 पत० 3:16

बाइबल के अध्ययन के लिए यह जरुरी है कि हम सच्चे हृदय से अच्छे सिद्धान्तों का प्रयोग करते हुए अनुवाद और अध्ययन करें तो हम अनुभव करेंगे कि परमेश्वर का पवित्र वचन खुद हमारी अगुवाई करेगा।

1- स्वाभाविक अर्थ अर्थात् सरलता का सिद्धान्तः-

परमेश्वर ने अपने वचन को लिखवाते समय यही चाहा कि लोग उसके वचन को सरलता के साथ समझ सकें अर्थात् वचन का अर्थ सरल हो। परमेश्वर के आत्म- प्रकाशन का पूर्ण मतलब यही था कि लोग उसको समझ सकें न कि भ्रम में पड़ जाएं।

परमेश्वर के वचन में तुलनात्मक भाषा या अलंकारिक भाषा का प्रयोग भी किया गया है। जब भी हम ऐसे तुलनात्मक उदाहरणों को पाते हैं, तो हमें यह प्रश्न पूछना चाहिए कि इस तुलना में किस विशेष बात को दर्शाया गया है? जहां तक परमेश्वर का वचन हमें बताता है वहीं तक हमें समझना तथा बताना चाहिए, न तो उससे अधिक न उससे कम।

अलंकारिक अर्थ और शाब्दिक अर्थ में भिन्नता मालुम करने के लिए यह आवश्यक है कि हम स्वाभाविक अर्थ को जानने की कोशिश करें तथा अपनी बुद्धि का भी प्रयोग करें। यह देखें कि आखिरकार लेखक क्या कहना चाहता है या

क्या कह रहा है? भजन 75:3 को देखें, जहां परमेश्वर मानों कह रहा है कि जब पृथ्वी कांपती है तो वह उसके खम्भों को स्थिर करता है। यहां क्या सचमुच में पृथ्वी खम्भों पर स्थिर है? नहीं। फिर पद 4 में परमेश्वर दुष्टों से कहता है कि सींग उंचा मत करो। अगर हम शाब्दिक अर्थ को लें तो प्रश्न उठेगा कि क्या दुष्टों के सींग होते हैं? नहीं। यहां पर इसका मतलब धन की बहुतायत और उन्नति से है। फिर आठवें पद में हम पाते हैं कि यहोवा के हाथ में एक कटोरा है जिसमें का दाखमधु झागवाला है- जो उसके क्रोध का प्रतीक है। अगर हम कहते हैं कि पृथ्वी खम्भों पर टिकी है तो हमें यह भी मानना होगा कि दुष्टों के सींग होते हैं तथा परमेश्वर के हाथ में एक झागवाला मधु का भरा प्याला है जिसे वह एक दिन पृथ्वी के बुरे लोगों पर उण्डेल देगा।

इस प्रकार हम देखते हैं कि यहां अलंकारिक भाषा का प्रयोग किया गया है, इसलिए हम शाब्दिक अर्थ को नहीं ले सकते हैं। अतः जो स्वाभाविक अर्थ हमें यहां मिलता है वह अलंकारिक है, न कि शाब्दिक।

2- वास्तविक अर्थ अर्थात् ऐतिहासिक सिद्धान्तः-

वचन के वास्तविक अर्थ को देखें। परमेश्वर ने अपने आप को हम मनुष्यों पर जब प्रगट किया तो एक विशेष ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं समय में किया। यद्यपि कि उसका यह आत्म प्रकाशन हर युग, हर देश तथा हर एक व्यक्ति के लिए है। लेकिन परमेश्वर का वचन सबसे पहले एक विशेष परिस्थिति में, एक विशेष देश के विशेष लोगों को दिया गया था। परमेश्वर के वचन को ठीक रीति से समझने के लिए हमें इसे उन परिस्थितियों के प्रकाश में समझना होगा जिसमें कि यह सर्वप्रथम दिया गया था। हमें यह मालुम करना है कि जब बाइबल की ६६ पुस्तकों के लेखकों ने परमेश्वर के वचन को लिखा तो आखिर उनके मन में कौन सी बात थी या उनका मतलब क्या था, न कि हम क्या सोचते हैं।

Creation Autonomous Academy

इस प्रकार जब हम परमेश्वर के वचन को पढ़ते हैं तो हमें चाहिए कि कुछ विशेष प्रश्नों को पूछते रहें,जैसेः लेखक का तात्पर्य क्या था? क्या कहना चाहता था? उस समय के लोगों ने लेखक की बात को कैसे समझा होगा? जब हम बाइबल के अध्ययन में अपने आप को बाइबल के पुस्तकों के वास्तविक लेखकों के मनों और समयों में ले जाते हैं तो हमें निम्नलिखित विषयों को ध्यान में रखना चाहिएः-

1- स्थितिः- अगर हम भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों का अध्ययन कर रहे हैं तो हम उन्हें इस्राएल के इतिहास के प्रकाश में देखें, वैसे ही नये नियम की पुस्तकों को प्रारम्भिक कलीसिया के इतिहास में देखें। अगर हम पौलुस की पत्रियों का अध्ययन कर रहे हैं तो हम पौलुस की मिश्नरी यात्राओं तथा उन परिस्थितियों का अध्ययन करें जिनमें ये पत्रियां लिखी गयीं।

2- शैलीः- यह ध्यान दें कि बाइबल की हर किताब किस प्रकार का साहित्य है, अर्थात क्या यह पद्य है या गद्य है? ऐतिहासिक साहित्य है या बुद्धि साहित्य? व्यवस्था है या भविष्यद्वाणी की पुस्तक और या कविता है? क्या यह ड्रामा है या पत्री है? या सुसमाचार इत्यादि। इसमें क्या शाब्दिक रुप मिलता है और या अलंकारिक?

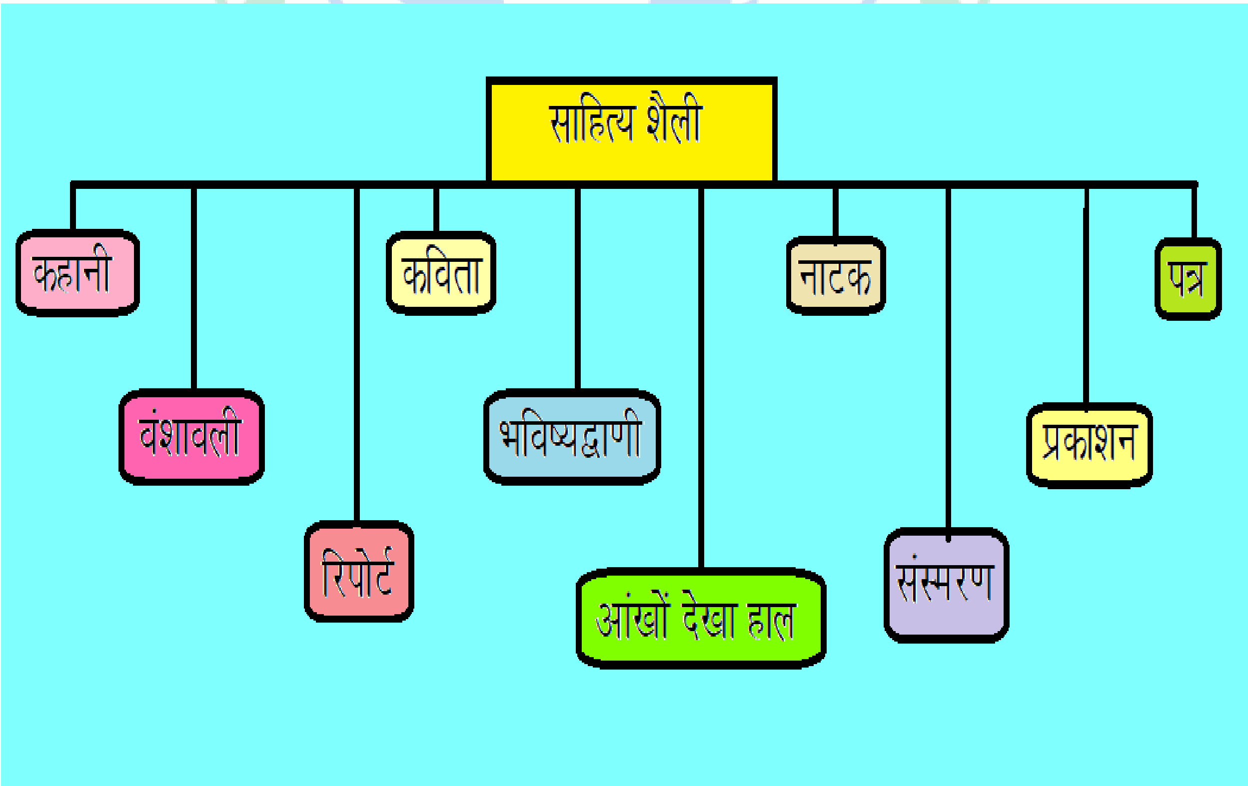

3- भाषाः- समय बीतने पर शब्दों के अर्थ बदलते रहते हैं। वर्तमान युग और बाइबल के समय के युग के 'प्रेम' शब्द का मिलान करने पर आसमान - जमीन का अन्तर मिलता है। हिन्दी भाषा में केवल एक ही शब्द अर्थात 'प्रेम' शब्द होता है जबकि यूनानी भाषा में इसके चार शब्द मिलते हैं और चार भिन्न अर्थ।

इब्रानी वर्णमाला

Letter	Name	Matching
א	Aleph	A
ב	Bet	B
ג	Gimel	G / J
ד	Dalet	D
ה	He	H
ו	Vav	V / W
ז	Zayin	Z
ח	Chet	'CH'
ט	Tet	T
י	Yod	Y / I
ך / כ	Khaf	'KH' / Q / K
ל	Lamed	L
ם / מ	Mem	M
ן / נ	Nun	N
ס	Samech	S / C (soft)
ע	Ayin	'A
ף / פ	Pe	P / F
ץ / צ	Tzadi	'TZ'
ק	Kof	K/Q/C(hard)
ר	Resh	R
שׂ / שׁ	Shin / Sin	'SH' / S
ת	Tav	T

यूनानी वर्णमाला

Form		Name	English	Pronunciation
Α	α	Alpha	A	al-fah
Β	β	Beta	B	bay-tah
Γ	γ	Gamma	G	gam-ah
Δ	δ	Delta	D	del-tah
Ε	ε	Epsilon	E	ep-si-lon
Ζ	ζ	Zeta	Z	zay-tah
Η	η	Eta	E	ay-tay
Θ	θ	Theta	Th	thay-tah
Ι	ι	Iota	I	eye-o-tah
Κ	κ	Kappa	K	cap-ah
Λ	λ	Lambda	L	lamb-dah
Μ	μ	Mu	M	mew
Ν	ν	Nu	N	new
Ξ	ξ	Xi	X	zzEye
Ο	ο	Omicron	O	om-ah-cron
Π	π	Pi	P	pie
Ρ	ρ	Rho	R	row
Σ	σ	Sigma	S	sig-ma
Τ	τ	Tau	T	tawh
Υ	υ	Upsilon	U	oop-si-lon
Φ	φ	Phi	Ph	figh or fie
Χ	χ	Chi	Ch	kigh
Ψ	ψ	Psi	Ps	sigh
Ω	ω	Omega	O	o-may-gah

4-लोगों का रहन - सहनः- बाइबल की विशेष भौगोलिक और ऐतिहासिक परिस्थितियों तथा लोगों के रहन-सहन को ध्यान में रखते हुए बाइबल का अध्ययन करें। अनुवाद ऐसा करें कि हम उसके वास्तविक अर्थ को अपने समय व स्थिति के लिए सार्थक बना लें। हम इसके संदेश को अपनी भाषा, रहन-सहन, भौगोलिक व ऐतिहासिक परिस्थितियों के अनुसार अनुवाद कर सकते हैं। लेकिन ध्यान रहे कि हम इसके संदेश के वास्तविक अर्थ में मिलावट न करें। उदाहरण के लिए, प्रभु यीशु के द्वारा अपने शिष्यों के पैर धोना । यह उस समय का रीति-रिवाज था। प्रभु यीशु ने अपने शिष्यों को एक दूसरे को प्रेम करते हुए नम्रता और सेवा का संदेश दिया। यहां हम प्रभु की आज्ञा को नहीं टाल सकते। लेकिन यह जानते हुए कि हम हर एक का पैर भी नहीं धो सकते हैं क्योंकि वर्तमान युग के शहरों में न तो अब धूल भरी सड़कों पर चप्पल पहनकर चलते हैं और न ही हमारे समय में किसी के पैर धोने का रिवाज है, सिर्फ कहीं-कहीं गावों को छोड़कर। परन्तु हम फिर भी एक दूसरे की पहुनाई व सेवा कर सकते हैं। एक और उदाहरण हम देख सकते हैं जहां पौलुस और पतरस ने अपनी पत्रियों में लोगों को लिखा कि जब वे एक साथ जमा होते हैं तो एक दूसरे का पवित्र चुम्बन देते हुए स्वागत करें। रोमियों 16:16, 2 कुरि० 13:12, 1 थिस्स० 5:26, 1 पत० 5:14 वर्तमान युग में बहुत से स्थानों में इस प्रकार का प्रचलन नहीं है परन्तु हम प्रभु की आज्ञा को नहीं टाल सकते। इसलिए पवित्र-चुम्बन की जगह कम से कम नम्रता व हृदय की सच्चाई के साथ एक दूसरे को अपनी परम्परा में हाथ जोड़कर या हाथ मिलाकर नमस्कार कह सकते हैं

Creation Autonomous Academy

बाइबल की सांस्कृतिक परिस्थितियों को ध्यान में रखकर परमेश्वर के वचन का अध्ययन और उपयोग अपने वर्तमान सांस्कृतिक परिस्थितियों के अनुसार करें और पवित्र आत्मा की अगुवाई में जो कुछ हम वचन से सीखते हैं उसका पालन करें।

3- सामान्य अर्थ अर्थात् सामन्जस्यता का सिद्धान्तः-

जब भी परमेश्वर के वचन का अनुवाद करते हैं तो हमें पूरी बाइबल की सामन्जस्यता को ध्यान में रखना चाहिए। एक खण्ड के दो प्रसंग होते हैं, अर्थात ऐतिहासिक और पवित्र शास्त्र के अन्दर। ऐतिहासिक संदर्भ और प्रसंग से हमारा तात्पर्य उस भौगोलिक और ऐतिहासिक स्थिति से है जिसमें कि एक विशेष खण्ड लिखा गया। पवित्र शास्त्र के प्रसंग से तात्पर्य यह है कि खण्ड विशेष बाइबल में किस स्थान पर पाया जाता है। पूरी बाइबल को एक साथ ध्यान में रखें और जब तक इसके किसी अंश को पढ़ते व उसका अनुवाद करते हैं तो पूरी बाइबल की शिक्षा को ध्यान में रखें। ऐसा करने से हम पाएंगे कि बाइबल के अंश की व्याख्या हमें दूसरे अंश में मिलती है, अर्थात बाइबल अपने वचन का अनुवाद या व्याख्यान स्वयं ही करती है।

Creation Autonomous Academy

अध्याय- 7
शिक्ष को लागू करना

बाइबल हमें यह प्रकट करती है कि हम सर्व शक्तिमान परमेश्वर से किस प्रकार सम्बन्ध स्थापित कर सकते हैं। यह भी कि इस संसार में हमें कैसे जीना चाहिए। इसका उद्देश्य यह है कि हम अपने जीवन में परिवर्तन लाएं और प्रभु यीशु की समानता में बनते जाएं। पौलुस प्रेरित हमें बताते हैं कि यह वचन हमें सिखाने, डांटने, अनुशासित करने व प्रशिक्षित करने में लाभदायक है। 2 तिमु० 3:16

बाइबल एक व्यवहारिक पुस्तक है और चाहती है कि हम एक भक्तिपूर्ण जीवन व्यतीत करें। यह बौद्धिक अभ्यास मात्र के लिए नहीं है।

शिक्षाओं को लागू करना जरुरी हैः-

1- आगे जानने के लिए :-

प्रभु यीशु ने अपनी सेवकाई के दौरान कई धार्मिक अगुवों का सामना किया। उन्होंने उसे फंसाने के लिए प्रश्न किया और बताया कि वे पुनरुत्थान में विश्वास नहीं करते हैं। प्रभु यीशु ने उन्हें उत्तर दिया कि तुम गलती में हो क्योंकि तुम न तो वचन को जानते हो न ही उसकी सामर्थ्य को। मत्ती 22:21 ये धार्मिक अगुए वचन के बौद्धिक ज्ञान को ही जानते थे पर उनको यह नहीं मालुम था कैसे यह लागू होगा।

2- बिना लागूकरण का अध्ययन घमण्ड ला सकता है :-

क्योंकि दिमागी ज्ञान घमण्ड को लाता है। ज्ञान फूलता है परन्तु प्रेम निर्माण करता है। 1 कुरि० 8:1 बाइबल बताती है कि शैतान भी बौद्धिक रुप में बाइबल जानता है। मत्ती 4:1-11 प्रभु यीशु की परीक्षा के संदर्भ में, जब आप सही तरीके से वचन को जीवन में लागू करते हैं तो घमण्डी बनने के खतरे को समाप्त करते हैं।

3- बिना लागू किए ज्ञान को बढाने से दण्ड के योग्य ठहरेंगे। :-

वचन का गहरा ज्ञान हमें अधिक जिम्मेदार ठहराता है यदि हम उसे लागू करने में असफल रहते हैं। याकूब 4:17

Creation Autonomous Academy

लागू करना कठिन कार्य है।

जीवन में आत्मसात दुर्घटनावश नहीं है इसके लिए योजना बनाना जरुरी है। यहां तीन कारण दिए गए हैं जिस पर विचार करना जरुरी है।

1- गम्भीर विचार शामिल हैः-

अध्ययन और मनन करने में काफी समय लगता है इसके पहले कि हम वचन की सच्चाइयों को देखना शुरु करें। कभी- कभी इसका अर्थ यह होता है कि सामान्य विचारों से गहरी विचारधारा में उतरें जो कि सामान्य तरीके से कठिन मालुम होता है।

2- शैतान बाधा डालता है:-

शैतान का सबसे प्रभावशाली हथियार हमारे अध्ययन अैर शान्त मनन पर पड़ता है ताकि हम उस वचन को अपने जीवन में लागू न करें। शैतान जानता है कि जब तक हम परमेश्वर के वचन में केवल बौद्धिक रुप में रुचि लेते हैं तब तक उसकी योजनाओं में कोई बाधा नहीं पहुंच सकती है। शैतान अथक प्रयास करता है कि हम जीवन में लागू करने से वंचित रह जाएं। इसलिए यह आवश्यक है कि हम स्वयं से पूंछें जो कुछ मैंने अब तक सीखा है उसे लागू करने के लिए अब मैं क्या करुं।

3- अपने जीवन में परिवर्तन लाने में हिचकिचाहट महसूस करते हैं:-

व्यवहारिक मसीही जीवन जीने के लिए भावना को सर्वोत्तम स्थान देना खतरनाक है। परिपक्व मसीही जीवन जीने के लिए यह आवश्यक है कि जब हम अच्छी भावना में हों तब हम प्रभु यीशु के साथ जिएं। परन्तु तब जब हमारी भावनाएं हमारा साथ न दें तब भी हम प्रभु यीशु के साथ जिएं।

Creation Autonomous Academy

अध्याय-8
खण्ड का अर्थ निकालना

बाइबल की पुस्तक के किसी एक विशेष खण्ड का अध्ययन करते हैं। जिससे इस खण्ड के अर्थ को एवं खण्ड के संदेश को सामान्य रुप में समझा जा सके।

1- खण्ड का चुनावः-

सम्पूर्ण पुस्तक का अध्ययन करने के बाद खण्ड का चुनाव करें। आप किस खण्ड का अध्ययन करेंगे?

2- मुख्य विचार का पता लगानाः-

खण्ड का चुनाव करने के बाद, पता चलाएं कि इस खण्ड का मुख्य विचार क्या है? मुख्य विचार का पता लगाने के लिए सम्पूर्ण खण्ड का अध्ययन करें। खण्ड का केन्द्रीय संदेश और मुख्य विचार को समझ लें।

3- सम्पूर्ण पुस्तक का अध्ययनः-

खण्ड का अध्ययन करने के लिए सर्वप्रथम सम्पूर्ण पुस्तक का अध्ययन करें। इसके बाद ही खण्ड का अध्ययन आरम्भ करें। जिससे कि खण्ड का अर्थ पूरी पुस्तक के संदर्भ में निकाल सकें।

4-रुपरेखा बननाः-

जो सामग्री खण्ड के अध्ययन के दौरान आपने प्राप्त किया है, उसके आधार पर अब आप खण्ड की रुपरेखा बनाइए। ध्यान रहे खण्ड के अन्दर एक बात जिन पदों तक कही गयी है,उन सभी चीजों को जो इस बात से जुड़ी हुई हैं और आपने अध्ययन करते समय एकत्र किया है उनको एक शीर्षक के अन्दर रखिए। दूसरी बात एवं उससे जुड़ी चीजों को दूसरे शीर्षक में रखें। तीसरी बात एवं उससे जुड़ी चीजों को तीसरे शीर्षक में रखें। इस प्रकार क्रमशः अन्त तक करते चले जाएं। इस बात का भी ध्यान रखें कि खण्ड की रुपरेखा आज के श्रोताओं के लिए आकर्षक हो।

5-मुख्य पद का पता लगानाः-

खण्ड के मुख्य पद का पता लगाएं। क्योंकि उसी मुख्य पद से पूरा खण्ड खुलता है।

Creation Autonomous Academy

6-अर्थानुवाद या व्याख्याः-

खण्ड की आपने जो रुपरेखा निकाला है, उसके हरेक भाग का एक-एक करके व्याख्या कीजिए। बाइबल अध्ययन के सभी सिद्धान्तों, विधियों एवं अर्थ निकालने के नियमों का पालन कीजिए।

7-मुख्य संदेशः-

सम्पूर्ण भागों की व्याख्या करने के बाद खण्ड का मुख्य संदेश या शिक्षा क्या है पता चलाएं और लिखें।

8-लागूकरण :-

संदेश, को प्राप्त करने के बाद इसे व्यक्तिगत व्यवहार में कैसे ले जाएंगे? कैसे अपने जीवन में लागू करेंगे? इसे लिखें।

खण्डः-

मुख्य विचारः-

रुपरेखाः-

1-

2-

3-

मुख्य पदः-

व्याख्याः-

मुख्य संदेशः-

Creation Autonomous Academy

लागूकरणः-

खण्डः-लूका 15 अध्याय

मुख्य विचारः- 'खोया और पाया'

रुपरेखाः-

1-खोई हुई भेंड़ (पद 3-7)
2-खोया हुआ सिक्का (पद 8-10)
3-खोया हुआ पुत्र (पद 11-32)

मुख्य पदः-

लूका 15:7-'मैं तुमसे कहता हूं कि इसी प्रकार स्वर्ग में भी उन निन्यानवे धर्मियों से, जिन्हें मन फिराने की आवश्यकता नहीं, मन फिराने वाले एक पापी के लिए बढ़कर आनन्द मनाया जाएगा।'

व्याख्याः-

1-खोई हुई भेंड़ (पद 3-7):-

जैसे मनुष्य एक खोई हुई भेंड़ को पाकर आनन्द मनाता है वैसे परमेश्वर के पास वापस लौटने वाले एक पापी के लिए स्वर्ग में बढ़कर आनन्द मनाया जाएगा।

2-खोया हुआ सिक्का (पद 8-10):-

जैसे खोया हुआ सिक्का पाने पर स्त्री आनन्द मनाती है वैसे मन फिराने वाले पापी के लिए स्वर्ग में आनन्द मनाया जाएगा।

3-खोया हुआ पुत्र (पद 11-32):-

जैसे खोए हुए पुत्र को पाकर पिता आनन्द मनाता है वैसे एक मन फिराने वाले पापी के लिए स्वर्ग में आनन्द मनाया जाएगा।

मुख्य संदेशः-

परमेश्वर पापियों की चिन्ता करता है और प्रतीक्षा करता है वे घर वापस आ जाएं।

निष्कर्ष एवं लागूकरणः-

तीनों दृष्टान्तों में बताया गया है कि जो खो गया था वह मिल गया है। अर्थात परमेश्वर चाहता है कि पापी मन फिराएं और परमेश्वर के पास वापस आ जाएं।

मेरे बहुत से मित्र मसीह के बिना खोए हुए हैं, मैं उनको प्रभु यीशु के बारे में साक्षी दूंगा। आज मैं रमेश के साथ अपने विश्वास को बांटने के द्वारा इसे लागू करुंगा।

Creation Autonomous Academy

अध्याय- 9
मनन अध्ययन विधि

परमेश्वर के वचन पर मनन करना और ध्यान लगाना बहुत ही आवश्यक है। भारतीय पद्धति के अनुसार नित्य क्रिया से निवृत्त होकर भोर में प्रातः 4 से 6 के बीच में परमेश्वर के वचन पर मनन करना उत्तम है। क्योंकि यह समय शान्त समय होता है। इस शान्त समय में परमेश्वर की मधुर वाणी को सुनें।

जीवन में वचन को कैसे लागू करें?ः-

प्रत्येक बाइबल अध्ययन का लक्ष्य लागूकरण है। परमेश्वर अपने वचन के द्वारा हमारे जीवन को बदलना चाहता है। वचन को कैसे अपने जीवन में लागू करें यह सीखना अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

वचन को जब आप स्वयं उपयोग करना सीखते हैं, यह आराधना अध्ययन विधि कहलाती है। यह एक साधारण प्रकार का अध्ययन है। जिसे आप अपने मनन के समय में उपयोग कर सकते हैं।

परिभाषाः-

आराधना अध्ययन विधि में बाइबल का एक खण्ड लेते हैं। इस पर प्रार्थना पूर्वक तब तक मनन करते हैं, जब तक पवित्र आत्मा यह न दिखा दे कि इस सत्य को अपने स्वयं के जीवन में व्यक्तिगत, व्यवहारिक, संभव और मापने योग्य तरीके से कैसे लागू किया जाय। लक्ष्य है कि गम्भीरता पूर्वक परमेश्वर के वचन को लें और जो यह कहता है उसे करें। (याकूब 1:22)

आराधना-मनन अध्ययन विधि के महत्वपूर्ण कदमः-

1- खण्ड का चुनावः-

बाइबल से प्रार्थना पूर्वक किसी खण्ड का चुनाव करें।

2- प्रार्थना करें।ः-

खण्ड को चुनने के बाद परमेश्वर से प्रार्थना करें कि परमेश्वर अपनी इच्छा को आप पर प्रकट करे। परमेश्वर आपके मन की आंखें खोल दे ताकि आप परमेश्वर की इच्छा को ग्रहण कर सकें।

जिस वचन का अध्ययन कर रहे हैं, परमेश्वर से प्रार्थना करें कि उसे लागू करने में आपकी सहायता करे। विशेष रुप से परमेश्वर क्या चाहता है कि आप करें? परमेश्वर चाहता है कि आप दो चीजें करेंः उसकी आज्ञा का पालन करे और इसे दूसरों को बताएं। परमेश्वर से प्रार्थना में कहें कि जो वह आपको बताएगा, आप उसकी आज्ञा का पालन करने के लिए तैयार हैं और आप उस लागूकरण को दूसरों को बताएंगे।

3-चुने हुए खण्ड पर मनन करें।ः-

खण्ड पर तब तक मनन करें, जब तक कि पवित्र आत्मा आपको यह न प्रकट कर दे कि इसको व्यक्तिगत, व्यवहारिक, सम्भव व नापने योग्य तरीके से कैसे लागू किया जाए। मनन के दौरान ध्यान लगाएं और पता लगाएं कि

Creation Autonomous Academy

खण्ड से आज के लिए परमेश्वर हमें क्या शिक्षा एवं आज्ञा दे रहा है। पता चलाएं एवं स्पष्ट हो जाएं कि अपने जीवन में क्या लागू करना है।

वचन को अपने जीवन में कैसे लागू करें? यह खोजने के लिए मनन एक कुंजी है। मनन विचारों को पचाना है। परमेश्वर द्वारा दिए गए एक विचार को ले लें, इसे अपने मन में रखें और इस पर बार-बार सोचें। यह गाय के जुगाली करने के समान है। गाय जल्दी-जल्दी घास को खाकर अपने पेट में रख लेती है। जब वह शांत बैठती है, तब घास को मुंह में लाती है और उसे धीरे -धीरे चबाती है। तब उसे पचाने के लिए निगल लेती है। विचारों के पाचन की प्रक्रिया तीन बार दोहराई जाती है। आत्मिक मनन है- बाइबल में एक खण्ड को पढ़ना, तब विभिन्न तरीकों से इस पर ध्यान लगाना। मनन के विभिन्न तरीके निम्नलिखित हैं।-

क- कहानी के दृश्य को अपने मन में बैठाएं।:-

स्वयं को बाइबल खण्ड की परिस्थिति में ले जाएं। उसे अपने आप से सक्रिय भागीदारों के समान चित्रित करने का प्रयास करें। बाइबल के जिस पुस्तक से अध्ययन कर रहे हैं उसके ऐतिहासिक पृष्ठभूमि में अपने आप को रखें। स्वयं से पूछें, यदि आप उस परिस्थिति में होते तो कैसा अनुभव करते? आप क्या कहते? आप क्या करते?

उदाहरण के लिए यदि आप यूहन्ना 4 अध्याय का अध्ययन कर रहे हैं तो वहां पर अपने आपको प्रभु यीशु के साथ रखें। कुएं पर स्त्री, शिष्य और सूखार का वातावरण। यदि आप कुएं पर होते और प्रभु यीशु आपसे पीने के लिए पानी मांगते तो आप कैसा अनुभव करते? यदि आप इस घटना की गवाही देने वाले शिष्यों में से एक होते, तो आपकी भावनाएं क्या होतीं?

मनन में दृश्य देखने का एक दूसरा उदाहरण है- अपने आपको प्रेरित पौलुस के स्थान पर रख कर देखें। जब वह कैद में रहकर 2 तीमुथियुस पत्र लिख रहा था। रोमी जेल का चित्र अपने मन में रखें, मौत को नकारने के लिए, सताव का इन्तजार करें। पौलुस ने जो अनुभव किया वह लिखा,'मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूं, मैं अपनी दौड़ पूरी कर चुका हूं।' (2 तीमु० 4:7) जब आप दृश्य को देखना प्रारम्भ करते हैं, वचन आपके लिए जीवित हो उठता है।

ख- अध्ययन के अन्तर्गत खण्ड में शब्दों का अभ्यास करें।:-

एक पद को कई बार पढ़ें। प्रत्येक बार एक भिन्न शब्द को लें और नए अर्थ को देखें। यदि आप फिलि० 4:1-3 पर मनन कर रहे हैं- मैं उसके द्वारा सब कुछ कर सकता हूं जिसने हमें शक्ति दिया है।

तो निम्नलिखित का अनुशरण कर सकते हैं।-

- **मैं** उसके द्वारा सब कुछ कर सकता हूं जिसने हमें शक्ति दिया है।
- मैं उसके द्वारा सब कुछ कर **सकता** हूं जिसने हमें शक्ति दिया है।
- मैं उसके द्वारा सब कुछ **कर** सकता हूं जिसने हमें शक्ति दिया है।
- मैं उसके द्वारा **सब कुछ** कर सकता हूं जिसने हमें शक्ति दिया है।
- मैं उसके **द्वारा** सब कुछ कर सकता हूं जिसने हमें शक्ति दिया है।
- मैं **उसके** द्वारा सब कुछ कर सकता हूं जिसने हमें शक्ति दिया है।
- मैं उसके द्वारा सब कुछ कर सकता हूं **जिसने** हमें शक्ति दिया है।
- मैं उसके द्वारा सब कुछ कर सकता हूं जिसने हमें शक्ति **दिया** है।
- मैं उसके द्वारा सब कुछ कर सकता हूं जिसने **हमें** शक्ति दिया है।
- मैं उसके द्वारा सब कुछ कर सकता हूं जिसने हमें **शक्ति** दिया है।

यदि आप प्रत्येक बार एक शब्द का अभ्यास करते है तो दस भिन्न-भिन्न अर्थ प्राप्त करेंगे।

Creation Autonomous Academy

ग-खण्ड को अपने शब्दों में लिखें।:-

जिस खण्ड का आप अध्ययन कर रहे हैं, अपने विचार के अनुसार उसे अपने शब्दों में लिखें।

घ-खण्ड को स्वयं का बनाएं।:-

जिस खण्ड का आप अध्ययन कर रहे हैं उसे स्वयं का बनाएं। यह संज्ञा या सर्वनाम के स्थान पर अपना नाम रखने के द्वारा किया जाता है, जो वचन में उपयोग किया गया है। उदाहरण के लिए यूहन्ना 3:16 को आप पढ़ सकते हैं,'क्योंकि परमेश्वर ने **रामराज** से ऐसा प्रेम किया कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, कि **रामराज** उस पर विश्वास करे **रामराज** नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।'

ङ-वर्णमाला की व्यवस्था में रखना।:-

वर्णमाला की व्यवस्था में रखना मनन के लिए उपयोगी है। इससे एक खण्ड को हर समय मनन कर सकते हैं।
'प, प्र, व्य, अ, उ, प्र, स, स,क '
प-पापः अंगीकार के लिए? क्या मुझे ऐसा करने की आवश्यकता है?
प्र-प्रतिज्ञाः दावे के लिए? क्या यह सार्वभौमिक प्रतिज्ञा है? क्या मैं इस स्थिति से मिलता हूं?
व्य-व्यवहारः परिवर्तन के लिए? क्या मैं नकारात्मक को सकारात्मक बनाना प्रारम्भ करके, एक नकारात्मक व्यवहार पर कार्य कर सकता हूं?
अ-आज्ञाः पालन के लिए? क्या मैं पालन करुंगा? चाहे जैसा मेरा अनुभव हो?
उ-उदाहरणः अनुसरण के लिए? क्या यह सकारात्मक उदाहरण है अनुसरण के लिए अथवा नकारात्मक है छोंड़ने के लिए?
प्र-प्रार्थनाः प्रार्थना करने के लिए? क्या वहां किसी बात के लिए परमेश्वर से प्रार्थना करने की आवश्यकता है?
स- समस्याः छोंड़ने के लिए? क्या वहां कोई समस्या है चेतावनी के लिए या छोंड़ने के लिए?
स-सत्यः विश्वास के लिए? पिता, पुत्र, पवित्र आत्मा अथवा अन्य बाइबल शिक्षाओं के विषय में मैं क्या नई चीजें सीख सकता हूं?
क-कुछः परमेश्वर की प्रशंसा के लिए? क्या यहां कुछ है जिसके लिए मैं धन्यवाद कर सकता हूं?

च-प्रार्थना करें कि परमेश्वर पद अथवा खण्ड को बताए।:-

खण्ड को अध्ययन करते समय एक वचन प्रथम व्यक्ति में रखें, इसे प्रार्थना में रखें और परमेश्वर से प्रार्थना करें। भजन संहिता की पुस्तक इस तरह के मनन का अच्छा उदाहरण है। बिल गोथार्ड ने कहा है,'दाऊद ने परमेश्वर की व्यवस्था का मनन किया, तब इसे स्वयं का बनाया और तब परमेश्वर के लिए भजन में लिखा।'

इस तरह के मनन विधि का उदाहरण भजन 23 के प्रथम तीन पदों में देखा जा सकता है।

यहोवा मेरा चरवाहा है, मुझे कुछ घटी न होगी।
वह मुझे हरे हरे चरागाहों में बैठाता है,
वह मुझे सुखदायक जल के सोतों के पास ले चलता है।
वह मेरे जी में जी ले आता है,
धार्मिकता के मार्गों में वह अपने नाम के निमित्त मेरी अगुवाई करता है।

इन विधियों में से आप अपने मनन में किस एक विधि का उपयोग करेंगे? आप के अध्ययन के लिए कौन सी विधि सर्वोत्तम होगी? उदाहरण के लिए यदि आप नीतिवचन का अध्ययन कर रहे हैं, यह आपके मन में दृश्य देखने के लिए कठिन है। लेकिन आप शब्दों का अभ्यास कर सकते हैं। और शिक्षा प्रदान करने के लिए परमेश्वर से प्रार्थना कर सकते हैं।

4- लिखनाः-

खण्ड से परमेश्वर ने आपसे जो बातें की उसे अपनी नोटबुक में लिख लें।

5- लागूकरणः-

अपने मनन के द्वारा जो शिक्षा आपने प्राप्त किया है, उस पर एक लागूकरण लिखें। लागूकरण को कागज पर लिखना विशिष्ट बनने में आपकी सहायता करेगा। यदि आप कुछ नहीं लिख रहे हैं तो बहुत जल्द इसे भूल जाएंगे। जब आप आत्मिक सत्य के साथ व्यवहार कर रहे हैं लिखना विशेष रुप से आवश्यक है। यदि आप इसे कागज पर नहीं लिखते तो इसके द्वारा वास्तविक रुप से नहीं सोच रहे हैं।

यदि आप कुछ लिखते हैं, तो इसे लम्बे समय तक याद रख सकेंगे और दूसरों को बता सकेंगे कि आपने क्या सीखा है।

अच्छा लागूकरण लिखने के लिए चार तथ्यों को याद रखना आवश्यक है।-

क-आपका लागूकरण व्यक्तिगत होः-

आप प्रथम व्यक्ति एक वचन में इसे लिख सकते हैं। जब आप लागूकरण लिख रहे हैं व्यक्तिवाचक सर्वनाम का उपयोग कर सकते हैं।,'मैं, मेरा, मुझे' आदि।

ख-आपका लागूकरण व्यवहारिक होः-

इससे यह बाहर आता है कि आप कुछ कर सकते हैं। एक निश्चित कार्य योजना बनाएं। जिस वचन से आप उत्साहित हुए हैं उस पर एक कार्य योजना बनाएं। जितना सम्भव हो सके अपने लागूकरण को विशिष्ट बनाएं। बड़ी संरचना कार्य करने में आपको असहाय बना देगी।

ग-आपका लागूकरण सम्भव होः-

यह जानने, समझने योग्य एवं सम्भव हो अन्यथा आपको निराश कर देगा।

Creation Autonomous Academy

घ-आपका लागूकरण मापने योग्य होः-

आपके कार्य की सफलता को देखा जा सके, जांचा जा सके, ऐसा लागूकरण बनाना आवश्यक है। यह मापने योग्य हो। जो आपने किया है उसे जान सकें। इसका अर्थ है कि अपने लागूकरण में एक समय सीमा रखें।

व्यक्तिगतः मेरी आवश्यकता है करने के लि------।

व्यवहारिकः मेरी आवश्यकता कुछ वजन घटाने की है।

सम्भवः मेरी आवश्यकता है 10 किलो वजन घटाने की।

मापने योग्यः मेरी आवश्यकता है इस माह के अंत तक 10 किलो वजन घटाने की।

इस प्रकार के लागूकरण में सहायता के लिए, एक मित्र अथवा परिवार के किसी एक जन को, इस विषय में बताएं। जो उत्साहित करते हुए आपकी सफलता को जांच सके।

वर्तमान आवश्यकता को जिसे आप उस विशेष समय में लागू नहीं कर रहे हैं, भविष्य में उपयोग के लिए लिख लें। आप मृत्यु से सम्बन्धित खण्ड का अध्ययन कर रहे हैं कि कैसे दुख से बाहर आएं। लेकिन यह अभी आपकी समस्या नहीं है। इन पदों के साथ आप क्या कर सकते हैं? दो कारणों से आप इन्हें लिख लें। प्रथम लागूकरण की भविष्य में आवश्यकता है। जब आप अपने जीवन में ऐसी परिस्थिति में होंगे। द्वितीय यह दूसरे व्यक्ति की सहायता करने में सहायक होगी जो ऐसी परिस्थिति में होगा। आप अपने से पूछें, 'किसी दूसरे व्यक्ति की सहायता करने के लिए मैं इसका उपयोग कैसे कर सकता हूं?'

परमेश्वर ने आपको मनन करते समय खण्ड से जो आज्ञा दी है उसे अपने जीवन में कैसे लागू करेंगे? पूरी योजना को नोटबुक में लिख लें। परमेश्वर के वचन पर आपका यह मनन व्यक्तिगत रुप से आपके लिए है और आज के लिए है। परमेश्वर की आज्ञा का पालन आज ही करें कल पर न टालें। क्योंकि कल फिर परमेश्वर बातें करेगा।

6- याद करने का पदः-

अपने अध्ययन से एक कुंजी पद याद करें। जिस खण्ड को आप लागू कर रहे हैं उस पर मनन करना जारी रखें। अपनी कार्य योजना को याद रखने में सहायता के लिए, जो लागूकरण आपने लिखा है, उसके कुंजी पद को याद कर लें। कभी- कभी आपके जीवन के क्षेत्र में परमेश्वर कई सप्ताह अथवा कई महीने कार्य करेगा। यह चरित्र, आदतें एवं व्यवहार को बदलने में समय लेता है। नयी आदतें, नये विचार एक दिन में नहीं हो जाते। आप परमेश्वर की आज्ञा का पालन करते रहें कि परमेश्वर आपके जीवन को निरन्तर परिवर्तित करता रहे। लागूकरण लिखना कोई जादुई सूत्र नहीं है जो तुरन्त बदलाव ला देगा। बल्कि यह विचारों के विकास की प्रक्रिया का एक भाग है। पद याद करना इस प्रक्रिया में सहायक है क्योंकि यह हमेंशा हमारे साथ रहता है 'मन में'।

लागूकरण बुद्धिमत्ता की गुणवत्ता पर कार्य करता है। यह कई महीने लेता है जब परमेश्वर इस गुण को हमारे जीवन में स्थापित करता है। हमें यह देखने की आवश्यकता है कि यह गुण हमारे जीवन के सभी क्षेत्रों से कैसे सम्बन्ध रखता है। परीक्षा की स्थिति में यह संभालता है। यह आपके साथ भी ऐसा ही करेगा। परमेश्वर प्रेम न करने वाले लोगों के बीच में रखकर आपको लोगों से प्रेम करना सिखाएगा। विरोध में आप धैर्य रखना और अशांति में शांति सीखेंगे। तब आप खोज कर सकेंगे कि परीक्षा और दुख में कैसे आनन्दित रहें। जब परमेश्वर आपके जीवन में सकारात्मक गुण स्थापित करना चाहता है तो आपको समझना आवश्यक है, कि वह अवश्य आपके जीवन में ऐसी परिस्थितियां आने देगा, जब आप अपने स्वाभाविक स्वभाव की अपेक्षा सही कार्य करने का निर्णय लें।

परमेश्वर ने जिस पद से आपसे बातें की व अपनी इच्छा को प्रकट किया उसे भी अपनी नोटबुक में लिख लें। इस पद को याद कर लें।

Creation Autonomous Academy

निष्कर्षः-

वचन के लागूकरण की जांच प्रभु यीशु का व्यक्तित्व है। हम पूछ सकते हैं, 'क्या यह लागूकरण प्रभु यीशु के समान बनने में हमारी सहायता करेगा?'

यदि परमेश्वर ने जो शिक्षा दिया है उसे लागू नहीं कर रहे हैं, तो यह आत्मिक कठोरता लाएगा। हम पवित्र आत्मा के कायलता के कार्य में बेकार साबित होंगे। परमेश्वर के वचन का लागूकरण हमारे आत्मिक स्वास्थ्य और मसीही परिपक्वता में विकास के लिए आवश्यक है।

आराधना-मनन अध्ययन विधि-चार्ट

दिनांक---------------   **अनुच्छेद--------------------**

प्रार्थनाः--------- किया/नहीं किया

मननः

आज्ञाः

प्रतिज्ञाः

लागूकरणः

याद करनाः

Creation Autonomous Academy

मनन

दिनांकः 29-7-1997 **खण्डः** लूका 12:22-26

प्रार्थनाः--------- किया/नहीं किया

मननः

मैं अधिक चिंता नहीं करुंगा। परमेश्वर मेरी सभी आवश्यकताओं को पूरा करेगा। परमेश्वर ने मुझे मेरा जीवन दिया है तो निश्चित ही मैं उस पर भरोसा रख सकता हूं। मैं चिड़ियों के उदाहरण से सीख सकता हूं कि वे भविष्य के बारे में चिंता नहीं करतीं। परमेश्वर प्रतिदिन उनकी देखभाल करता है। यदि परमेश्वर चिड़ियों की देखभाल करता है तो वह हमारी भी देखभाल करेगा। चिंता मेरे लिए कुछ अच्छा नहीं करेगी। यह परिस्थिति को नहीं बदलेगी। इसलिए चिंता का क्या उपयोग है? कुछ नहीं।

आज्ञाः

चिंता न करें। (पद 22)

प्रतिज्ञाः

परमेश्वर हमारी देखभाल करेगा। (पद 24)

लागूकरणः

मुझे अपने पारिवारिक धन के क्षेत्र में इस शिक्षा को लागू करने की आवश्यकता है। अगले माह जब शैतान धन के लिए चिंता की परीक्षा में हमें डालेगा मैं लूका 12:24 को लागू करने के द्वारा उसका सामना करुंगा।

याद करनाः कौवों पर ध्यान दो क्योंकि वे न तो बोते, न काटते, और न उनके पास भण्डारगृह, न बखारियां हैं, फिर भी परमेश्वर उन्हें खिलाता है। तुम तो पक्षियों से कहीं अधिक मूल्यवान हो। लूका 12:24

मनन

दिनांकः 29-4-2005 **खण्डः** यूहन्ना 15:1-17

प्रार्थनाः--------- किया/नहीं किया

मननः

Creation Autonomous Academy

फल न लाने वाले अनाज्ञाकारी शिष्यों का प्रतिफल विनाश है। फलवन्त जीवन वाले आज्ञाकारी शिष्यों का प्रतिफल प्रभु की संगति का आनंद है। प्रभु चाहता है कि हम प्रभु में बने रहें,फल लाएं, आज्ञा का पालन करें और एक दूसरे से प्रेम करें।

आज्ञाः

प्रभु में बने रहो,फल लाओ,आज्ञा का पालन करो, एक दूसरे से प्रेम करो। (पद 4,8,10,12,16-17)

लागूकरणः

मैं प्रभु में बना रहूंगा,उसकी आज्ञा का पालन करुंगा, फलवन्त जीवन व्यतीत करुंगा और एक दूसरे से प्रेम करुंगा।

याद करनाः यूहन्ना 15:4,16

अध्याय-10
अध्याय अध्ययन विधि

बाइबल की एक पुस्तक के अध्याय को कैसे समझना प्रारम्भ करेंगे?:-

मूल भाषा में जो बाइबल लिखी गयी है उसमें अध्याय और पद नहीं हैं। 1228 ई० में विशप स्टीफन लैंगटन ने बाइबल को अध्यायों में विभाजित किया। पाठकों की सुविधा के लिए इसे खण्डों में विभाजित किया गया। कुछ भाग ऐसे हैं जो लेखक के संदेश के धरावाहिक प्रवाह में बाधा हैं। परन्तु कुछ भाग बाइबल अध्ययन में सहायक हैं। अध्याय विभाजन के अनुसार शताब्दी के अंत तक जो बाइबल लिखी गयी, उस प्रोटेस्टेन्ट बाइबल में 1189 अध्याय हैं। यदि आप प्रतिदिन एक अध्याय का अध्ययन करते हैं तो लगभग 3 साल कुछ दिन में पूरी बाइबल पढ़ सकते हैं। यदि प्रतिदिन दो अध्यायों की भूमिका निकालते हैं तो लगभग 20 महीनों में पूरी बाइबल समाप्त कर सकते हैं। अथवा आप अन्य विधियों का उपयोग कर सकते हैं।

अध्याय अध्ययन विधि क्या है?:-

अध्याय अध्ययन विधि में पांच बार अध्ययन के द्वारा, सन्दर्भ से सम्बन्धित प्रश्न पूंछकर और खण्ड का मुख्य विचार पता लगाकर, एक अध्याय के सन्दर्भ की सामान्य समझ प्राप्त करते हैं।

यह विधि क्यों महत्वपूर्ण है?:-

यह विधि इस लिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह बाइबल की पुस्तक के अध्याय की प्रारम्भिक समझ प्रदान करती है। जो लोग बाइबल का अध्ययन आरम्भ कर रहे हैं उनके लिए यह लोकप्रिय है। क्योंकि अध्याय छोटे-छोटे होते हैं और एक अध्याय के अध्ययन में गहन अध्ययन की मांग नहीं है। एक नए मसीही को शिक्षा देने हेतु यह एक मूल्यवान विधि है। यह उनके लिए भी महत्वपूर्ण है जो बाइबल का अर्थपूर्ण अध्ययन करने की इच्छा रखते हैं। जो जीवन पर्यन्त व्यक्तिगत अध्ययन करना चाहते हैं उनके लिए चार कारणों से यह उत्कृष्ट विधि है।

1-यह विधि सीखने के लिए सरल है।:-

जितनी जल्दी आप दस आधारभूत कदम समझ जाएंगे, उतनी जल्दी आप अध्ययन आरम्भ कर सकते हैं।

Creation Autonomous Academy

2-यह विधि अधिक समय नहीं लेती है।:-

यह अध्ययन किए जाने वाले अध्याय की लम्बाई पर निर्भर करता है। एक अध्याय को 20 या 30 मिनट में अध्ययन कर सकते हैं। यदि अध्याय एक ऐतिहासिक कहानी के संदर्भ में है तो इसे 20 या 30 मिनट में अध्ययन कर सकते हैं। उदाहरण के लिए पुराना नियम, सुसमाचार और प्रेरितों के काम। जब आप भजन, भविष्यद्वाणियां और नए नियम के सैद्धान्तिक पत्र का अध्ययन कर रहे हैं, तब अधिक समय व्यतीत कर सकते हैं।

3-इस विधि में बाहरी सहायता अथवा सन्दर्भ सामग्री की आवश्यकता नहीं होती है।:-

आवश्यक है कि आप दस कदमों को याद कर लें। तब अध्याय अध्ययन विधि द्वारा किसी भी परिस्थिति में, किसी भी समय अध्ययन कर सकते हैं। जब आपके पास अतिरिक्त समय है उसे आप अध्ययन में लगा सकते हैं। उदाहरण के लिए चिकित्सालय, बस अड्डा, हवाई अड्डा आदि पर इस विधि का उपयोग कर सकते हैं। बाइबल की एक पुस्तक को ले लें और पहले अध्याय से आरम्भ करें। अध्याय में जो कुछ आपने खोज किया है उसे लिख लें।

4- बाइबल सर्वेक्षण हेतु यह एक अच्छी अध्ययन विधि है।:-

जब अध्याय अध्ययन विधि से आप अध्ययन कर रहे हैं, तो एक-एक अध्याय पढ़ते हुए नोट्स बना सकते हैं।

अध्याय अध्ययन विधि के दस कदमः-

एक अध्याय को पांच बार पढ़ लें। अध्याय को बार-बार पढ़ें। वचन के खण्ड को बार-बार पढ़ें, जिससे यह खण्ड आपके सामने सजीव हो उठे। बहुत सारे मसीही अध्ययन में असफल हो जाते हैं। क्योंकि वे बार-बार खण्ड को नहीं पढ़ते हैं। एक महान बाइबल व्याख्यानदाता हुए हैं जिनका नाम कैम्पवेल मोर्गन है। वे अपने सामर्थ्य पूर्ण प्रचार के लिए प्रसिद्ध हैं। परमेश्वर के वचन का प्रचार करने के रहस्य के बारे में प्रश्न पूछने पर , वे उत्तर देते हैं कि, 'वे सन्देश तैयार करने के पहले एक खण्ड या अध्याय को 30 अथवा 40 बार पढ़ते हैं। उन्होंने यह आदत बना ली है। अध्याय अध्ययन के लिए कुछ विशेष तरीके यहां हैं।-

-बाइबल को बिना नोट्स के पढ़ें।:-

यदि आप बाइबल को नोट्स के साथ पढ़ रहे हैं, तो एक ही विचार पर केन्द्रित हो जाएंगे। परमेश्वर को बोलने दीजिए और नए विचारों को देने दीजिए।

-बिना रुके हुए पढ़ें।:-

अध्ययन आरम्भ करके अध्याय के बीच में न रुक जाएं। बल्कि आरम्भ से अन्त तक पूरे अध्याय का अध्ययन करें। आपका लक्ष्य अध्याय की धारावाहिकता का अध्ययन करना है। इसलिए पहली बार विस्तार में न जाएं। लेखक के सम्पूर्ण विषय और केन्द्रीय सन्देश को प्राप्त करने का प्रयास करें।

Creation Autonomous Academy

-विभिन्न अनुवादों का अध्ययन करें।:-

यह आपको जानकारी प्रदान करेगा कि कैसे प्रत्येक अनुवादक मूल लेख के पास पहुंचता है। यदि आपको कोई रुचिकर अन्तर मिलता है तो उसे लिख लें।

-शांति पूर्वक पढ़ें।:-

यदि आप ध्यान केन्द्रित करने में कठिनाई महसूस करते हैं, तो यह आपकी सहायता करेगा।

अध्याय का अध्ययन करते समय दस विशेष चीजों को देखें और उनका उत्तर लिखें। यहां हम उन दस बातों को देखेंगे।-

1-शीर्षक

2-सन्दर्भ
3-मुख्य लोग
4-चुने पद
5-कठिन शब्द
6-चुनौतियां
7-उद्धरण
8-मसीह का दृश्य
9-मृख्य शिक्षा
10-उपसंहार

1-शीर्षकः-

अध्याय का एक संक्षिप्त शीर्षक दीजिए। शीर्षक जल्दी याद रखने योगय हो। अध्याय के शीर्षक को याद रखने के द्वारा पूरी पुस्तक के सन्दर्भ को याद रख सकते हैं। यदि सम्भव है तो शीर्षक के लिए एक शब्द का उपयोग करें। उदाहरण 1 कुरि० 13 'प्रेम'। ज्यादा से ज्यादा पांच शब्द इब्रानियों 11 'विश्वास के नायक'।

अध्याय के मुख्य शब्द की खोज करने का प्रयास करें। इस मुख्य शब्द को अपने शीर्षक में रखें। यदि आपका शीर्षक सरल एवं समझने योग्य है तो आप लम्बे समय तक इसे याद रख सकते हैं। शीर्षक सरल, संक्षिप्त, एवं आकर्षक हो।

2-सन्दर्भः-

रुपरेखा निकालें, अध्याय के मुख्य-मुख्य बिन्दुओं की सूची बनाएं। विधि का चुनाव अध्याय की साहित्य शैली पर निर्भर करेगा। आपकी प्राथमिकता पर निर्भर करेगा। कुछ लोग रुपरेखा निकालना पसन्द करते हैं। उस विधि का चुनाव करें जो आपके लिए आरामदायक है। अध्याय का अर्थ निकालने का प्रयास न करें, सिर्फ संदर्भ को देखें। लेखक ने क्या कहा है?

3-मुख्य लोगः-

अध्याय में पाए जाने वाले अत्यन्त महत्वपूर्ण लोगों की सूची बनाएं। इसके लिए प्रश्न पूछें जैसे इस अध्याय में कौन मुख्य लोग हैं? क्यों ये लोग इसमें शामिल किए गए हैं? इसके बारे में क्या अद्‌भुत बातें हैं? यदि अध्याय में सन्दर्भ उच्चारण है वह, वे इत्यादि तो लोगों के परिचय के लिए पिछले अध्याय में पता चलाएं। अध्याय से जिन प्रमुख व्यक्तियों को आपने चुना है उनके चुनाव का कारण लिखें। यदि वंशावली का अध्ययन कर रहे हैं तो हर एक को प्रमुख व्यक्ति न बना दें।

4-चुने पदः-

एक पद का चुनाव करें जो पूरे अध्याय की भूमिका बताता है। अथवा वह एक पद जिससे परमेश्वर ने आपसे व्यक्तिगत रुप से बातचीत किया है। कुछ अध्यायों मे एक कुंजी पद पाएंगे, जबकि अन्य में कुंजी पद नहीं होगा। लागूकरण लिखते समय एक पद को लें, जिस पर आप विश्वास करते हैं कि परमेश्वर उसे आपके जीवन में लागू करना चाहता है।

Creation Autonomous Academy

5-कठिन शब्दः-

अध्याय का एक कुंजी शब्द होगा, जिसको आप तीव्रता से उपयोग कर सकते हैं। (1 कुरि० 13 प्रेम, इब्रानियों 11 विश्वास) एक अध्याय में कभी-कभी कठिन शब्द बहुत महत्वपूर्ण होता है। लेकिन उसका मुख्य रुप से उपयोग नहीं होता।

6-चुनौतियांः-

खण्ड को समझने में जो -जो कठिनाइयां हैं उन्हें लिख लें। जो कुछ समझ में नहीं आता उसे लिख लें। जिन समस्याओं और प्रश्नों का अध्ययन आप बाद में करना चाहते हैं उन्हें लिख लें। बाद में इन पर गहराई से अध्ययन कर सकते हैं।

7-उद्धरणः-

अध्ययन वाली बाइबल में उद्धरण का उपयोग किया गया है। दूसरे पदों को देखें, अध्याय की बातों को स्पष्ट करने में सहायता करने वाले पदों की सूची बनाएं। प्रश्न पूछें इस अध्याय को समझने के लिए बाइबल हमारी क्या सहायता कर सकती है? उद्धरण महत्वपूर्ण हैं। क्योंकि अध्याय का अर्थ निकालने में ये उद्धरण सहायक सामग्री हैं। ये बाइबल की शिक्षा को देखने में सहायता करेंगे। बहुत सारे उद्धरणों को देख सकते हैं।

8-मसीह का दृश्यः-

सम्पूर्ण बाइबल प्रभु यीशु मसीह के व्यक्तित्व का प्रकाशन है। शिष्यों को अपने बारे में सिखाने के लिए प्रभु यीशु ने पुराने नियम का उपयोग किया। पुनरुत्थान के बाद इम्माउस के मार्ग पर प्रभु यीशु मसीह ने अपने दो शिष्यों को सिखाया। आरम्भ में मूसा से, और फिर सभी भविष्यद्वाणियों से उसने उन्हें समझाया कि कैसे पवित्रशास्त्र प्रभु यीशु के विषय में बताता है। (लूका 24:27) प्रत्येक अध्याय का अध्ययन करते समय सावधान रहें। प्रत्येक कथन कुछ न कुछ प्रभु यीशु के बारे में बतायेगा। पिता परमेश्वर अथवा पवित्रआत्मा के बारे में कुछ बतायेगा। स्वयं से पूछें इस अध्याय में प्रभु यीशु मसीह के स्वभाव से मैं क्या सीख सकता हूं? यह अध्याय प्रभु यीशु मसीह में परमेश्वर के बारे में क्या बताता है। उदाहरण के लिए उसका प्रेम, न्याय, दया, पवित्रता, सामर्थ्य और विश्वासयोग्यता। कुछ भागों में यह कदम अत्यन्त कठिन है। विशेष रुप से पुराने नियम की कहानियां और वे खण्ड जिनमें संकेतों का उपयोग किया गया है।

९-मुख्य शिक्षाः-

Creation Autonomous Academy

मुख्य सिद्धांत एवं शिक्षाओं को लिखें जिन्हें आपने अध्याय से सीखा है। स्वयं से प्रश्न पूछें,'परमेश्वर ने इस खण्ड को बाइबल में क्यों रखा है?' इस अध्याय से हमें क्या सिखाना चाहता है? क्या केन्द्रीय विचार है जिसको लेखक विकसित करने का प्रयास कर रहा है? एक व्यक्तिगत सम्भव उत्तर यह हो सकता है हम सभी व्यक्तिगत सम्बन्धों में प्रेम करें। (1 कुरि० 13)

10-उपसंहारः-

यह आपके अध्ययन का लागूकरण का भाग है। उपसंहार लिखते समय दो प्रश्न पूछें।-

1-व्यक्तिगत रुप से यह शिक्षा कैसे मुझमें लागू होती है?

2-विशेष रुप से इसके विषय में हम क्या करेंगे?

अध्याय अध्ययन विधि चार्ट

अध्यायः लूका 15
पांच बार पढ़ें

1-शीर्षकः खोया और पाया

2-सन्दर्भः

यह अध्याय तीन दृष्टांतों के सन्दर्भ में है।
1-पद 3-7 खोयी हुई भेंड़
2-पद 8-10 खोया हुआ सिक्का
3-पद 11-32 खोया हुआ पुत्र

3-मुख्य लोगः

चरवाहा-खोयी हुई भेंड़ के साथ
स्त्री- खोए हुए सिक्के के साथ
पिता- खोए हुए पुत्र के साथ

4-चुना पदः लूका 15:7

5-कठिन शब्दः

खोया (पद 4,5,9,24,32)
पाया (पद 6,9,24,32)

6-चुनौतियां (कठिनाइयां):

इस पद का क्या अर्थ है? 99 लोगों को पश्चाताप की आवश्यकता है।

Creation Autonomous Academy

7-उद्धरणः

लूका 15:4-6, मत्ती 18:11-14, यूहन्ना 10:10-14, 1 पतरस 2:25, यशा० 53:6, भजन 119:176

8-मसीह का दृश्यः

1-दृष्टान्तः प्रभु यीशु अच्छा चरवाहा खोयी भेंड़ को खोज रहा है।
2-दृष्टान्तः पवित्रआत्मा हमारा स्वामी पुनः स्थापित करने के लिए हमें खोज रहा है।
3-दृष्टान्तः पिता परमेश्वर घर आने पर स्वागत करने के लिए हमारा इन्तजार कर रहा है।

9-मुख्य शिक्षाः

पुत्र यह कहते हुए चला गया हमें दे।-पद 12
वह यह कहते हुए वापस लौटा हमें बना।-पद 19
परमेश्वर पापियों की देखभाल करता है और वह चाहता है कि वह घर वापस आए।
बड़े भाई का चरित्र-
क्रोध-पद 28, ईर्ष्या-पद 29-30, गलत दृष्टिकोंण-पद 29-30

10-उपसंहारः

तीनों दृष्टांतों में केन्द्रीय बात है खोए हुए को पाना। मेरे बहुत से मित्र प्रभु यीशु मसीह के बिना खोए हैं। उनको सुसमाचार सुनाकर जीतने के लिए विशेष रुप से गवाही देने की आवश्यकता है। मैं राम के साथ जो मेरा मित्र है, अपने विश्वास को बांटने के द्वारा इस सप्ताह के अन्त में आरम्भ करुंगा।

Creation Autonomous Academy

अध्याय-11

चरित्र गुण अध्ययन विधि

चरित्र गुण की परिभाषाः-

मसीही जीवन का मुख्य लक्ष्य अपने जीवन में मसीही चरित्र का विकास करना है। अपने-अपने जीवन में अच्छे चरित्र गुणों को स्थापित करते हुए, प्रतिदिन हम मसीह के समान बनना चाहते हैं। इसके पहले कि जीवन में मसीही गुण पर कार्य करना आरम्भ करें, पहले हम इसे जानें। इस अध्ययन को इस प्रकार डिजाइन किया गया है कि यह सकारात्मक और नकारात्मक चरित्र को समझने में हमारी सहायता करे। नकारात्मक चरित्र गुण को एक तरफ अलग रख दें। सकारात्मक गुणों के अनुसार जीवन बनाएं। यह बात आपको प्रभु यीशु के समान बनाती जाएगी।

चरित्र गुण अध्ययन विधि क्या है?:-

चरित्र गुण अध्ययन विधि इस बात का पता लगाती है कि एक व्यक्ति के चरित्र के बारे में बाइबल क्या कहती है। इसे व्यक्तिगत जीवन में कैसे लागू किया जा सकता है। यह जीवनी अध्ययन से भिन्न है। इससे व्यक्ति के बारे में अध्ययन करने के बजाय, व्यक्ति के चरित्र गुण का अध्ययन किया जा सकता है।

यह गुण सकारात्मक अथवा नकारात्मक या दोनों हो सकते हैं। मुख्य बात है कि नकारात्मक को छोड़ना और सकारात्मक को अपने जीवन में अपनाना सीखें।

यह विधि हमारे जीवन के लिए क्यों आवश्यक है?:-

इस अध्ययन विधि का उद्देश्य है बाइबल में सिखाए गए चरित्र गुणों का पता लगाना। जिससे कि हम नकारात्मक को छोड़ना और सकारात्मक को स्वीकार करना सीख सकें। हम ज्यादा से ज्यादा प्रभु यीशु के समान बन सकें। इस अध्ययन विधि में सामग्री को उपयोग करने की आवश्यकता है। इसलिए कुछ उद्धरण सामग्री को देखेंगे।-

1-अध्ययन बाइबल

2-शब्दानुक्रमाणिका

3-बाइबल शब्दकोष

4-विषय पर आधारित बाइबल

5-भाषा शब्दकोष

Creation Autonomous Academy

यदि आप बाइबल के सकारात्मक चरित्र गुण को अपने जीवन में विकसित करना चाहते हैं तो निम्नलिखित निर्देशों का पालन करें।

1-एक समय में एक गुण पर कार्य करें।:-

एक से अधिक, दो या तीन या अधिक पर कार्य करने का प्रयास न करें। क्योंकि यह इस बात पर ध्यान देने की मांग करता है कि यह गुण आपके जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में कैसे लागू होता है। अनेक गुणों पर कार्य करने की अपेक्षा अच्छा होगा कि एक गुण पर ठोस रुप से कार्य करें।

2-भीड़ न लगाएं, चरित्र का विकास समय लेता है।:-

एक गुण की व्याख्या करते हुए एक सप्ताह में लिखें। क्योंकि आप एक गुण पर लम्बे समय तक काम करना चाहेंगे। गुण को जीवन में लागू करने में कभी-कभी महीनों लग जाते हैं।

3-एक गुण के साथ ठहरें।:-

एक गुण के साथ रुके रहें, जब तक कि विशेष क्षेत्र में आप इसे प्राप्त नहीं कर लेते हैं। अनेक गुणों पर कार्य करने का प्रयास न करें।

4-नकारात्मक गुणों से सावधान रहें।:-

परमेश्वर आपकी कमजोरी को शक्ति में बदलना चाहता है। सकारात्मक गुण का उपयोग करें।

5-अपने जीवन में गुणों को स्थापित करने के लिए पवित्र आत्मा पर भरोसा रखें।:-

अन्तिम विश्लेषण में परमेश्वर की सामर्थ्य आपके अन्दर आत्मा के फल लाएगी। यह मात्र परमेश्वर है जो आपके जीवन चरित्र में बदलाव लाएगा। यह परमेश्वर है जो आपके जीवन में अपनी भली इच्छा के अनुसार कार्य करता है। (फिलि० 2:13) परमेश्वर कार्य करेगा, इसलिए अपने जीवन में कार्य करने के लिए पवित्र आत्मा पर भरोसा रखें।

चरित्र गुण अध्ययन विधि के नौ कदमः-

1-गुण का नामः-

जिस गुण का आप अध्ययन करना चाहते हैं उसे चुनें और लिख लें। तब उसे भाषा शब्दकोष में देखें। उस शब्द के सन्दर्भ को प्राप्त करें। उससे मिलते- जुलते शब्दों की सूची बनाएं। ये गुण को समझने में आपकी सहायता करेंगे।

2-विपरीत गुण का नामः-

विपरीत गुण को लिख लें। उदाहरण के लिए विश्वासयोग्यता का विपरीत होगा अविश्वासयोग्यता। लेकिन कुछ गुणों का दो या दो से अधिक विपरीत होते हैं। उदाहरण के लिए विश्वास और संदेह, विश्वास और भय।

Creation Autonomous Academy

3-साधारण शब्द अध्ययन करें।:-

जिस गुण का आप अध्ययन कर रहे हैं। उसके बारे में बाइबल क्या कहती है उसे देखें। आत्मिक सन्दर्भ में इसके उपयोग के तरीके की खोज करें। तब बाइबल शब्दकोष में देखें। इनसाइक्लोपीडिया अथवा शब्द अध्ययन की पुस्तक में देखें, कि बाइबल के समय में इसका कैसे उपयोग किया गया है। कुछ सामग्री आपको यह बताएगी कि बाइबल में यह शब्द कितनी बार उपयोग किया गया है। जिस पुस्तक से आप अध्ययन कर रहे हैं, लेखक जब पुस्तक लिख रहा था प्रत्येक नियम की प्रत्येक पुस्तक से भिन्न है। उदाहरण के लिए 'टूटा हुआ' मूल यूनानी में इस शब्द का अर्थ हैः कुछ चीजों को तोड़ना और उन्हें समर्पण में ले जाना।

4-उद्धरण खोजें।:-

उद्धरण का उपयोग यह बताएगा कि बाइबल के अन्य भागों में इसका कहां-कहां उपयोग किया गया है। वचन का सर्वोत्तम अनुवादक वचन ही है। जल्दी अन्य पदों को प्राप्त करने के लिए अनुक्रमाणिका का प्रयोग करें। उद्धरणों को लिख लें। उद्धरणों पर मनन करते समय अध्ययन करते हुए गुण के बारे में कुछ प्रश्न पूछें।

1-आपके लिए इस गुण से क्या लाभ है?

2-इस गुण से क्या हानियां हैं?

3-दूसरों के लिए इससे क्या लाभ है?

4-दूसरों के लिए क्या हानियां हैं?

5-क्या इसमें परमेश्वर की कोई प्रतिज्ञा है?

6-क्या इसमें कोई चेतावनी अथवा न्याय है?

7-क्या इसमें कोई आज्ञा है?

8-क्या तथ्य हैं?

9-क्या प्रभु यीशु मसीह ने इस गुण के विषय में कुछ कहा है? यदि हां, तो क्या?

10-मुख्य रुप से इस गुण के बारे में लेखक ने क्या बताया है?

11-इस गुण के बारे में क्या वचन में कोई संकेत मिलता है?

12-क्या इसमें गुणों के समूह की सूची है? उनके साथ क्या सम्बन्ध है? यह क्या सुझाव देते हैं?

13-क्या वचन परमेश्वर के विचार को सीधे बताता है?

14-क्या आप अपने जीवन में इसे जोड़ना चाहते हैं अथवा छोड़ना चाहते हैं?

इन प्रश्नों को पूछने के बाद आप भूमिका लिखने के बारे में सोच सकते हैं। बाइबल इस गुण के बारे में जो सिखाती है उसे लिख सकते हैं। इस संक्षिप्त अध्ययन के बाद जो शिक्षा और सिद्धान्त आपने सीखा है उनकी सूची बना सकते हैं।

कठिनाइयों को लिख लें, जिन्हें आप बाद में समझेंगे और उनका उत्तर खोजेंगे।

5-पूरी जीवनी का अध्ययन करें।:-

बाइबल से एक व्यक्ति को खोजें, जो अपने जीवन में आपके चुने हुए चरित्र गुण को दिखाता है। पूर्ण रुप से इस गुण को समझें। इसके बारे में वचन जो कुछ बताता है उसे लिख लें। अध्ययन के इस समय में निम्नलिखित प्रश्न पूछें।-

Creation Autonomous Academy

1-उसके जीवन में यह गुण क्या दिखाता है?

2-यह गुण उसके जीवन को कैसे प्रभावित करता है?

3-क्या यह गुण परिपक्वता में बढ़ने में सहायक है? यदि हां, तो कैसे?

4-उसके जीवन में यह क्या परिणाम प्रदान करता है?

उदाहरण के लिए यूसुफ का जीवन। याकूब का पुत्र जो अनेक गुण अपने में समेंटे हुए है। जो पवित्र आत्मा के फल हैं। (गला० 5:22-23) उसके जीवन की प्रत्येक घटनाओं की गवाही लिखना रुचिकर है। फिरौन के सामने से जाने के पहले फिरौन ने उससे पूछा, 'क्या कोई इस मनुष्य के समान है जिसके अन्दर परमेश्वर के आत्मा की बुद्धि हो? (उत्पत्ति 4:38) हम यूसुफ के अन्दर इन गुणों को पाते हैं।-

-कठिन पारिवारिक परिस्थिति में उसने प्रेम दिखाया। (उत्पत्ति 47)
-कठिन परीक्षाओं में उसने आत्म नियंत्रण दिखाया। (उत्पत्ति 39)
-कठिन कार्य के समय उसने विश्वासयोग्यता दिखाया। (उत्पत्ति 41:37-57)
-कठिन समय में उसने धैर्य दिखाया। (उत्पत्ति 39:19-40:23)
-कठिन परिवार के लोगों से मिलने पर उसने भलाई, अच्छाई और दया दिखाया। (उत्पत्ति 42-50)

6-याद करने का पद प्राप्त करें।:-

जिस भाग से परमेश्वर ने आपसे बातचीत की है उसमें से एक पद लिख लें। उसे इसी सप्ताह याद करें। जब आपको परमेश्वर विशेष तरीके से इस गुण पर काम करने का अवसर देगा, तब यह पद आपके काम आएगा।

7-उस परिस्थिति अथवा संबंध को चुनें जिसमें आप कार्य करेंगे।:-

अब हम अध्ययन का लागूकरण निकाल रहे हैं। उस क्षेत्र के बारे में सोचें जिसमें परमेश्वर चाहता है। कि आप इस चरित्र गुण पर कार्य करें। नकारात्मक बातों को छोड़ना और सकारात्मक बातों को जीवन में अपनाना।

8-एक विशेष कार्य योजना बनाएं।:-

यह लागूकरण का व्यवहारिक भाग है। अब आप कार्य करने पर विचार करें। कैसे अपने जीवन में सकारात्मक गुण को अपनाएंगे और नकारात्मक गुण को छोड़ेंगे। जब आप व्यवहारिक भाग लिख रहे हैं, ध्यान रखें कि लागूकरण व्यक्तिगत, व्यवहारिक, संभव और मापने योग्य हो।

9-लागूकरण लिखें:-

अब आप लागूकरण लिखें। इस गुण को अपने जीवन में कैसे लागू करेंगे। लागूकरण में यह मापने योग्य भाग है। इसमें अपनी सफलता और असफलता को लिखें। कहां आप सफल हुए और कहां आप असफल हुए। कैसे परमेश्वर आपके जीवन में नकारात्मक बातों को छोड़ने और सकारात्मक बातों को अपनाने में कार्य कर रहा है। इसका स्वयं का व्यक्तिगत उदाहरण एक संक्षिप्त समय में आप विकसित कर सकेंगे। कैसे आपने चरित्र गुण को अपने जीवन में लागू किया और आपको कैसे सफलता मिली है।

उपसंहारः-

Creation Autonomous Academy

मैं अपने कालेज में एक तेज बुद्धिमान विद्यार्थी था। मेरे सभी नोट्स तैयार थे। मैं 100 मील की दूरी पर सुसमाचार प्रचार करने चला गया। मेरे कमरे में रहने के लिए एक दूसरा विद्यार्थी आया। उसने मेरे कमरे में जाकर बिना पूछे मेरा नोट्स ले लिया। जब मैं वापस आकर नोट्स नहीं पाया तो पता चलाया। दूसरे विद्यार्थियों से पता चला कि उसने मेरा नोट्स लिया है। मुझे बड़ा गुस्सा आया कि उसने मुझसे पूछा क्यों नहीं। मैंने सोचा कि जब वह लौटाने आएगा तब मैं उसे डांटूगा। इस समय मैं क्षमा चरित्र गुण पर अध्ययन कर रहा था। उस सुबह मैंने बाइबल में पढ़ा, 'किसी के साथ बुराई के बदले बुराई न करो।' आनन्दित रहो, निरन्तर प्रार्थना करते रहो, प्रत्येक घटना के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करो। (1 थिस्स० 5:15-18) अचानक मैंने महसूस किया कि मैं अपने जीवन में क्षमा के गुण को विकसित

करना चाहता हूं। जिस व्यक्ति ने मेरा नोट्स लिया है मैं उसे क्षमा करुं, उस परिस्थिति के लिए परमेश्वर का धन्यवाद करुं और आनन्दित रहूं।

परमेश्वर मेरे जीवन में इस परिस्थिति को ले आया। अपने व्यवहारिक जीवन में लागू करने में यह हमारे लिए आवश्यक हुई।

यह कठिन शिक्षा है। लेकिन यह लागूकरण के लिए एक भाग है कि हमने वचन से क्या सीखा है। दूसरों को गवाही देने के लिए इसे लिख लें।

चरित्र गुण चार्ट बनाने हेतु गृहकार्यः-

नए नियम में गुणों की सूची पायी जाती है। इनके द्वारा अध्ययन करना अच्छा होगा।

-सकारात्मक गुणः-

मत्ती 5:3-12, गला० 5:22-23, फिलि० 4:4-7, 2 पत० 1:5-8

1-दासत्व, 2-ईमानदारी, 3-मानवीयता, 4-विश्वासयोग्ता, 5-उपलब्धता, 6-सिखानेयोग्य, 7-क्षमा, 8-स्वामिभक्ति, 9-भय, 10-सहयोग, 11-अनुशासन, 12-समर्पण

-नकारात्मक गुणः-

गला० 5:19-21 शरीर के काम, 2 तीमु० 3:1-5

1-आलस्य, 2-विरोध की आत्मा, 3-घमण्ड, 4-स्वार्थीपन, 5-अविश्वासयोग्ता, 6-मजाक, 7-चिन्ता, 8-कठोरता

Creation Autonomous Academy

चरित्र गुण अध्ययन विधि चार्ट

1-चरित्र गुणः साहस

संकट के समय साहस आज्ञाकारिता लाता है।

2-विपरीत गुणः भय

जब कठिन और खतरनाक घटनाओं के बारे में सोचते हैं तो भय उत्पन्न होता है।

3-सरल शब्द अध्ययनः-

पुराना नियम में शब्द ‘बातह’ का अर्थ है आत्मविश्वास।

उदाहरणः नीति० 28:1 धर्मी, सिंह के समान साहसी हैं।

नया नियम का शब्द ‘थारेब’ का अर्थ है साहसी बनो।

उदाहणः इब्रा० 13:6 इसलिए हम साहस के साथ कहते हैं। परमेश्वर मेरा सहायक है। मैं नहीं डरुंगा कि मनुष्य मेरे साथ क्या करेंगे।

‘पेरिसियाजोमाई’ जिसका अर्थ है साहस से बोलें।

उदाहरणः प्रेरितों० 19:8

उपयोग की गयी सामग्री-

1-अनुक्रमाणिका

2-व्याख्यात्मक शब्दकोष

4-उद्धरणः-

-सताव के समय प्रभु यीशु साहस के साथ बोले। (यूहन्ना 7:26)

-कठिन परिस्थितियों में परमेश्वर हमारी सहायता करेगा। इस बात को जानने से आत्मविश्वास और साहस आता है। (इब्रा० 13:6)

-पतरस और यूहन्ना साहसी थे क्योंकि वे प्रभु यीशु मसीह के साथ थे। (प्रेरितों० 4:13)

-जब तुम पवित्र आत्मा की सामर्थ्य पाओगे तब परमेश्वर के वचन को साहस के साथ बोलोगे। (प्रेरितों० 29:31)

-जब हमारे अन्दर यीशु मसीह का प्रेम होगा, तब हम साहसी होंगे। क्योंकि प्रेम में भय नहीं होता। सिद्ध प्रेम भय को दूर कर देता है। (1 यूहन्ना 4:7-18)

5-पूरी जीवनी का अध्ययन करेंः-

प्रेरित पौलुस साहस (निर्भीकता) का प्रमुख उदाहरण है। उसका पूरा जीवन इस चरित्र गुण पर आधारित है।

-दमिश्क में एक जवान मसीही, जिसने साहस के साथ यीशु मसीह की गवाही दी। (प्रेरितों० 9:27)

-जहां कहीं भी वह गया साहस के साथ अपने विश्वास का प्रचार किया। विरोध और सताव में भी-

Creation Autonomous Academy

यरुशलेम में (प्रेरितों० 9:28-29)
पिसिदिया का अन्ताकिया में (प्रेरितों० 13:46)
इकूनियुम में (प्रेरितों० 19:8)
इफिसुस में (प्रेरितों० 19:8)
थिस्सलुनीकिया में (1 थिस्स० 2:2)

-उसने कलीसियाओं के लिए साहसी पत्र लिखा। (रामियों 15:15)

-उसने लोगों से प्रार्थना करने के लिए कहा। जिससे कि वह साहस के साथ निरन्तर प्रचार कर सके और सिखा सके। (इफि० 6:19-20)

-जेल में दूसरों के सामने उसकी मसीही गवाहीः प्रभु यीशु के लिए साहस के साथ बोला। (फिलि० 1:14)

-यहां तक कि उसने मृत्यु का सामना साहस के साथ किया। (फिलि० 1:20)

6-याद करने का पदः-

इब्रानियो 13:6

7-परिस्थिति अथवा संबंधः-

मेरे जीवन में इस गुण पर परमेश्वर कहां कार्य करना चाहता है? मैं अपने साथ कार्यालय में कार्य करने वाले मित्र को गवाही देने से डरता हूं।

8-कार्य योजनाः-

सबसे पहले में अपनी पत्नी से प्रार्थना करने के लिए कहूंगा। तब प्रतिदिन कार्यालय जाने से पहले मैं पवित्र आत्मा से प्रार्थना करुंगा कि मेरे जीवन को गवाही देने के लिए साहस से भर दे। (प्रेरितों० 4:13)

9-लागूकरणः-

साहस के साथ गवाही देने के लिए इस सप्ताह सोमवार से मंगलवार को मैंने प्रार्थना किया। लेकिन अवसर नहीं मिला। मंगलवार की रात मैंने निर्णय किया कि मुझे परमेश्वर की आवाज और सुनने की आवश्यकता है। इसलिए मैंने अपनी पत्नी के साथ विशेष रुप से प्रार्थना किया। जिससे कि मैं बुधवार को गवाही दे सकूं।

बुधवार की सुबह कार्यालय जाने से पहले दरवाजा बन्द करके शांति से प्रार्थना किया। प्रार्थना में पतरस और यूहन्ना की तरह हमें समझ प्राप्त हुई कि प्रभु यीशु हमारे साथ है। (प्रेरितों० 4:13)

मैं गया और अपनी बाइबल को अपनी मेज पर सबसे ऊपर रख दिया। चाय के समय वह मुझसे बात करने आया। उसने मेरी बाइबल देखकर मुझसे पूछा, ‘क्या यह बाइबल है?’ मैंने उत्तर दिया ‘हां, क्या आपने इसे पढ़ा है?’ उसने कहा, ‘ नहीं’।

मैंने कहा मैं इसे पढ़ता हूं। तब मैंने उसे अपनी पूरी गवाही दी। परमेश्वर ने मेरे जीवन में क्या-क्या किया। उसने रुचि दिखायी। साहस देने के लिए मैंने परमेश्वर को धन्यवाद दिया।

अध्याय-12

विषय वाक्य अध्ययन विधि

वचन में विषय वाक्य को कैसे खोजें?:-

अच्छे बाइबल अध्ययन का रहस्य है सही प्रश्न पूछकर सीखना। विषय वाक्य अध्ययन के लिए प्रश्नों की एक श्रृंखला का निर्णय करें। चुने हुए विषय वाक्य के लिए बाइबल में देखने के लिए छः प्रश्नों को पूछें।

क्या, क्यों, कब, कैसे, कहां और कौन। इन शब्दों के द्वारा विषय वाक्य अध्ययन करते समय प्रश्न बनाएं।

विषय वाक्य अध्ययन विधि क्या है?:-

विषय वाक्य अध्ययन विधि अधिकतम पांच प्रश्न पूछकर बाइबल आधारित विषय वाक्य के अध्ययन का अवसर प्रदान करती है। इसके बाद आप बाइबल से विषय वाक्य बना सकते हैं। अथवा एक पुस्तक में प्रश्न पूछकर उपसंहार एवं लागूकरण लिख सकते हैं।

विषय वाक्य अध्ययन विधि विषय अध्ययन के समान है। परन्तु यह दो बातों में भिन्न है।-

1-संक्षिप्त है।:-

विषय वाक्य अध्ययन विधि विषय अध्ययन विधि से संक्षिप्त है। क्योंकि इसमें आप कुछ पदों का अध्ययन कर रहे हैं। यह एक सीमित विषय अध्ययन विधि है। एक विषय में कई विषय वाक्य होते हैं। उदाहरण स्वरुप एक विषय 'प्रार्थना' हो सकता है। लेकिन इस विषय के अन्तर्गत आप निम्नलिखित विषय वाक्यों का अध्ययन कर सकते हैं।

1-प्रभु यीशु की प्रार्थना

2-प्रार्थना का उत्तर पाने की परिस्थितियां

3-प्रार्थना की प्रतिज्ञाएं

4-दूसरों के लिए मध्यस्थता की प्रार्थना

जब आप विषय वाक्य विधि से अध्ययन कर रहे हैं। तब वचन के मात्र एक खण्ड पर ध्यान केन्द्रित करते हैं। जो आपके विषय के बारे में बताता है। एक विषय अध्ययन प्रत्येक सम्भव पदों की जांच करता है। जो सम्पूर्ण विषय से सम्बन्धित होते हैं।

2-सीमित प्रश्न कर सकते हैं।:-

Creation Autonomous Academy

विषय वाक्य अध्ययन विधि इस बात में भी भिन्न है कि आप इसमें सीमित संख्या में प्रश्न पूछते हैं। एक विषय अध्ययन विधि में आप कई प्रश्न पूछ सकते हैं। जैसा आप चाहते हैं। क्योंकि आपका लक्ष्य है विषय के बारे में अधिक से अधिक संभव जानकारी प्राप्त करना। विषय वाक्य अध्ययन में सीमित प्रश्न पूछ सकते हैं। अधिकतम पांच प्रश्न क्योंकि आप चुने हुए कुछ प्रश्नों के उत्तर पाना चाहते हैं। विषय वाक्य से सम्बन्धित सभी पदों की सूची बनाने के बाद आप प्रत्येक पद की जांच करते हैं। यह जांच पूछने के लिए तैयार किए गए प्रश्नों द्वारा की जाती है। प्रश्नों की संख्या सीमित होने का कारण है कि एक विषय वाक्य में 100, 200 अथवा उससे अधिक उद्धरण होते हैं। यदि आपके प्रश्नों की श्रृंखला लम्बी है तो आप हतोत्साहित हो सकते हैं। अध्ययन समाप्त करने के पहले आप थक जाएंगे।

आवश्यक सामग्रीः-

1-अध्ययन बाइबल

2-शब्दानुक्रमाणिका

3-विषय बाइबल

विषय वाक्य अध्ययन के लाभः-

1-कई उद्धरण सामग्री की आवश्यकता नहीं है। आप सीमित अध्ययन कर सकते हैं। यदि आपके पास विषय बाइबल हो।

2-जब आपके पास सम्पूर्ण विषय पर अध्ययन करने का समय नहीं है। तब इस अध्ययन विधि का उपयोग कर सकते हैं।

3-एक विषय के सर्वेक्षण के लिए यह विधि अच्छी है।

4-आपके शिष्यों और नये विश्वासियों को सिखाने के लिए यह विधि अच्छी है।

5-इस विधि में एक सरल व्यक्तिगत बाइबल अध्ययन है।

विषय वाक्य अध्ययन करने के कुछ तरीकेः-

अध्ययन से भटक न जाएं इसलिए कुछ तरीके आवश्यक हैं।-

1-अधिक प्रश्नों का उपयोग न करें।

2-कभी-कभी मात्र एक प्रश्न से विषय वाक्य का अध्ययन कर सकते हैं। जैसे प्रश्न है किन चीजों से परमेश्वर घृणा करता है?

3-कभी-कभी आपके प्रश्नों के उत्तर नहीं मिलेंगे। जिस प्रश्न का उत्तर नहीं मिलता है उसके लिए खाली स्थान छोड़ दें और अगले प्रश्न पर चले जाएं।

4-यदि आपके द्वारा निर्धारित किसी भी प्रश्न का उत्तर नहीं मिलता है। तब आप अपने प्रश्नों को पुनः बनाएं। हो सकता है कि आपने गलत प्रश्न पूछा हो।

विषय वाक्य अध्ययन विधि के कदमः-

विषय वाक्य अध्ययन करते समय उद्धरण देखने के पहले कुछ प्रश्न बनाएं। आप ६ प्रश्नों की सहायता ले सकते हैं। क्या, क्यों, कब, कैसे, कहां, कौन। उदाहरण के लिए यदि आप नीतिवचन से क्रोध पर अध्ययन कर रहे हैं। तब निम्नलिखित प्रश्न पूछ सकते हैं।

Creation Autonomous Academy

1-क्रोधी मनुष्य के क्या चरित्र हैं?

2-क्रोध के फल क्या हैं?

1-एक विषय वाक्य चुनें।:-

अपनी रुचि के अनुसार एक विषय वाक्य चुनें। यदि आप पहली बार अध्ययन कर रहे हैं। तब छोटे अथवा संक्षिप्त से शुरु करें।

2-विषय वाक्य से सम्बन्धित पदों की सूची बनाएं।:-

इसके लिए तीन सामग्री का उपयोग करें।-

1-अध्ययन बाइबल

2-शब्दानुक्रमाणिका

3-विषय बाइबल

ध्यान रहे इनकी सहायता ले सकते हैं। परन्तु विषय वाक्य के अनुसार चुनाव आपका हो। अन्यथा विस्तृत अध्ययन में चले जाएंगे।

3-पूछे जाने वाले प्रश्नों का निर्णय करें।:-

कैसे आप जानेंगे कि किन प्रश्नों को पूछें? जिनके बारे में आप अधिक रुचि रखते हैं उनको लिख लें। अपने चुने हुए विषय वाक्य के विषय में आप क्या जानना चाहते हैं? अधिक से अधिक पांच प्रश्नों की सूची बनाएं। ध्यान रहे कभी-कभी आपको एक ही प्रश्न पूछने की आवश्यकता होगी।

4-प्रत्येक उद्धरण से प्रश्न पूछें।:-

अपने उद्धरणों को पढ़ें, प्रत्येक पद से प्रश्न पूछें और प्राप्त उत्तर को लिख लें। कभी-कभी आप सभी प्रश्नों के उत्तर प्राप्त कर लेंगे। लेकिन साधारणतया: किसी एक भाग का उत्तर मिलेगा। कभी-कभी ऐसा भी हो सकता है कि पद से आपको प्रश्न का उत्तर न मिले। उत्तर न मिलने पर खाली स्थान छोड़ दें और आगे बढ़ जाएं। यदि किसी भी प्रश्न का उत्तर नहीं मिलता। तब नए प्रश्नों की श्रृंखला बनाएं।

5-उपसंहार लिखें।:-

सभी पदों को पढ़ने एवं अपने प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करने के बाद, सभी प्रश्नों के उत्तरों की भूमिका बनाएं। आप अपने अध्ययन को रुपरेखा द्वारा संगठित कर सकते हैं। यह आपके लिए सरलता प्रदान करेगी। जब आप बाइबल अध्ययन समूह, कक्षा, सभा अथवा अपने शिष्य को सिखाते हैं।

6-व्यक्तिगत लागूकरण लिखें।:-

जो कुछ आपने सीखा है उसे अपने जीवन में लागू करें। एक व्यक्तिगत लागूकरण लिखें। जो व्यवहारिक, सम्भव और मापने योग्य हो।

Creation Autonomous Academy

विषय वाक्य अध्ययन विधि चार्ट बनाना:-

1-विषय वाक्य:-

जिस विषय वाक्य की आप खोज करना चाहते हैं उसका चुनाव करें। यह सुनिश्चित करें कि विषय वाक्य विस्तृत न हो और बड़ा विषय न हो। विषय वाक्य संक्षिप्त हो।

2-उद्धरणों की सूचीः-

अध्ययन में जिन उद्धरणों की आवश्यकता है उन उद्धरणों की सूची बनाएं।

3-पूछे जाने वाले प्रश्नः-

अपने प्रत्येक उद्धरण से पूछे जाने वाले प्रश्नों की सूची बनाएं।

4-प्रश्नों का उत्तरः-

प्रत्येक उद्धरण से अपने चुने हुए प्रश्न पूछें और प्राप्त उत्तरों को लिख लें।

5-उपसंहारः-

उपसंहार लिखें।

6-लागूकरणः-

एक व्यक्तिगत, व्यवहारिक, सम्भव और मापने योग्य लागूकरण लिखें।

Creation Autonomous Academy

विषय वाक्य अध्ययन विधि चार्ट

1-विषय वाक्यः- एक शिष्य की प्रभु यीशु मसीह की परिभाषा

2-उद्धरणों की सूचीः-

मत्ती 10:24-25, लूका 14:26-28,33, यूहन्ना 8:31-32, यूहन्ना 13:34-35, यूहन्ना 15:8

3-पूंछे जाने वाले प्रश्नः-

1-एक शिष्य के चरित्र क्या हैं?

2-शिष्य बनने के परिणाम क्या हैं?

4-प्रश्नों के उत्तरः-

मत्ती 10:24-25

1-एक शिष्य प्रभु यीशु को स्वामी मानेगा। एक शिष्य प्रभु यीशु के समान होगा। वह आशा करेगा कि जैसा व्यवहार संसार ने प्रभु के साथ किया, वैसा ही शिष्य के साथ होगा।

लूका 14:26-28

1-एक शिष्य प्रभु यीशु मसीह से सर्वोत्तम प्रेम करेगा। अपना क्रूस उठाकर प्रभु यीशु के पीछे चलेगा।

2-उत्तर नहीं मिला।

लूका 14:33

1-एक शिष्य प्रभु यीशु मसीह के पीछे चलने के लिए अपना सब कुछ दे देगा।

2-उत्तर नहीं मिला।

यूहन्ना 8:31-32

1-एक शिष्य निरन्तर प्रभु यीशु मसीह के वचन में बना रहेगा।

2-वह सत्य को जानेगा और सत्य उसे स्वतन्त्र करेगा।

Creation Autonomous Academy

यूहन्ना 13:34-35

1-एक शिष्य दूसरे से प्रेम करता है।

2-दूसरे इससे जानेंगे कि वह प्रभु यीशु मसीह का शिष्य है।

यूहन्ना 15:8

1-एक शिष्य फल लाता है।

2-वह फल लाने के द्वारा परमेश्वर की महिमा करता है।

5-उपसंहारः चरित्र जो मैंने खोजा

एक शिष्य है-

-प्रभु यीशु के समान

-प्रभु यीशु को सर्वोत्तम प्रेम करता है।

-अपना क्रूस उठाकर प्रभु यीशु मसीह के पीछे चलता है।

-प्रभु यीशु मसीह के पीछे चलने के लिए सर्वस्व न्योछावर करता है।

-प्रभु यीशु मसीह के वचन में निरन्तर बना रहता है।

-दूसरों से प्रेम करता है।

-फल लाता है।

परिणाम जो मैंने खोजा-

-वह दुख की आशा रखेगा।

-वह सत्य को जानेगा और सत्य उसे स्वतन्त्र करेगा।

-वह परमेश्वर की महिमा करेगा।

-दूसरे जानेंगे कि वह मसीह का शिष्य है।

6-लागूकरणः-

1-यूहन्ना 8:31-32 पर आधारित

मैं प्रतिदिन परमेश्वर के वचन पर नियमित मनन करुंगा। कल सुबह से आरम्भ करुंगा।

2-यूहन्ना 13:34-35 पर आधारित

मैं सण्डे स्कूल के उस व्यक्ति से प्रेम करुंगा। अपने परिवार में अगले सप्ताह रात्रि भोजन पर बुलाकर। जिसने हमें क्रोधित किया था।

Creation Autonomous Academy

अध्याय-13

जीवनी-आत्मकथा अध्ययन विधि

बाइबल में अनेक स्त्री और पुरुषों की कहानियां हैं। जिसने उन्हें बनाया उस प्रेमी परमेश्वर से उनके सम्बन्ध का विवरण है। इन व्यक्तियों के जीवन का अध्ययन करना अर्थपूर्ण है। हम उनके जीवन से सकारात्मक बातें सीख सकते हैं।

जीवनी अध्ययन विधि क्या है?ः-

जीवनी अध्ययन विधि के उपयोग से हम जानते हैं। कि क्या चीज इन व्यक्तियों के जीवन को सफल अथवा असफल बनाती है। जीवनी का अध्ययन करते समय हम व्यक्ति के आन्तरिक जीवन का अध्ययन करते हैं। उसके बारे में सोचने एवं अनुभव करने के लिए परमेश्वर से सहायता मांगें। जिससे कि आपका अध्ययन एक जीवन परिवर्तन का अनुभव बन जाए। इस अध्ययन विधि में बाइबल के एक व्यक्ति का चुनाव करें। उसके बारे में वचन में खोजें। उसके जीवन और चरित्र का अध्ययन करें।

इस अध्ययन का लागूकरण तब मिलता है। जब आप अपने स्वयं के जीवन की जांच इस अध्ययन के प्रकाश में करते हैं। परमेश्वर से सहायता मांगें कि वह आपके जीवन के कमजोर क्षेत्र में चरित्र का बदलाव करे। इसके परिणाम स्वरुप मसीही परिपक्वता में विकास होगा।

बाइबल के लोगों का महत्वः-

लोग परमेश्वर के लिए महत्वपूर्ण हैं। वे उसके स्वरुप और स्वभाव में बनाए गए हैं। बाइबल स्त्री और पुरुषों के बीच परमेश्वर के कार्य का अभिलेख है। यह परमेश्वर का स्वयं का प्रकाशन है।

आप बाइबल को पूर्णरुप से तभी समझ पाएंगे जब वचन के लोगों को जानेंगे।

पुराने नियम की कहानियों में कई लोगों के जीवन का वर्णन है। उदाहरण के लिए उत्पत्ति की पुस्तक में 6 महान नाम हैं-आदम, नूह, अब्राहम, इसहाक, याकूब और यूसुफ। प्रेरित पौलुस बताते हैं कि परमेश्वर ने पुराने नियम की कहानियों को हमारे शिक्षा के लिए दिया है। (रामि० 15:4)

पुराने नियम के व्यक्ति हमारे लिए उदाहरण हैं। जो हमें चेतावनी देते हैं। (1 कुरि० 10:11)

नये नियम की पुस्तकें शिक्षा और पुराने नियम की पुस्तकें विश्लेषण हैं। दोनों नियमों की पुस्तकों में शिक्षा और विश्लेषण हैं। नया नियम पुराने नियम की व्याख्या करता है। पुराने नियम के लोगों का अध्ययन करना, अध्ययन का एक अच्छा तरीका है। यह वचन को जीवित रुप प्रदान करता है। जब आप इस विधि द्वारा अध्ययन करते हैं। तब आप पाएंगे कि 3000 लोगों का विवरण बाइबल में है। इस विधि द्वारा अध्ययन से जीवनी से सीखने का दरवाजा खोलते हैं। इसके द्वारा हम बाइबल में वर्णित लोगों के जीवन से अपने जीवन के लिए सीखते हैं।

आवश्यक सामग्री :-

1-अध्ययन बाइबल

2-शब्दानुक्रमाणिका

3-विषय बाइबल

4-बाइबल शब्दकोष

Creation Autonomous Academy

एक अच्छे जीवनी अध्ययन के लिए कुछ तरीकेः-

एक अर्थपूर्ण जीवनी अध्ययन के लिए आवश्यक है कि आप अपने मस्तिष्क में कुछ बिन्दु रख लें।

1-एक व्यक्ति से आरम्भ करेंः-

उस एक व्यक्ति से आरम्भ करें जिसके विषय में आप सरलता से अध्ययन कर सकते हैं। उससे आरम्भ करें जिसके बारे में कम से कम उद्धरण हों। कुछ लोग कुछ घंटे अध्ययन करते हैं। कुछ एक सप्ताह अध्ययन करते हैं। अधिकांश जीवन भर अध्ययन करते हैं। इस अध्ययन को ऐसे एक व्यक्ति से न आरम्भ करें जैसे प्रभु यीशु, मूसा अथवा अब्राहम। कुछ महत्वपूर्ण किन्तु छोटे व्यक्तियों से आरम्भ करें जैसे अन्द्रियास अथवा बरनबास।

2-अध्ययन करते समय व्यक्ति के साथ रहें।ः-

एक अच्छे जीवनी अध्ययन का रहस्य है कि अध्ययन करते समय उस व्यक्ति के साथ रहें। उसके जूतों के साथ चलें। उसके मस्तिष्क को समझें कि वह कैसे सोचता है एवं अनुभव करता है। कैसे घटनाओं का प्रतिउत्तर देता है? उसके दृष्टिकोण से चीजों को देखें, उसकी आंखों से देखें, उसके कानों से सुनें, उसके मित्र बनें और उसके शत्रुओं के साथ लड़ें। वह व्यक्ति बन जाएं जिसका आप अध्ययन कर रहे हैं। यह तभी सम्भव है जब आप अधिकांश समय उस व्यक्ति के साथ बिताएं। उसके बारे में जो बाइबल उद्धरण दिए गए हैं उन्हें बार-बार पढ़ें।

3-चुने हुए व्यक्ति से सम्बन्धित पदों का ही अध्ययन करें।ः-

सावधान रहें भ्रमित न हों। जब आप एक ही तरह के नाम वाले व्यक्तियों के बारे में उद्धरणों को देखते हैं। यह निश्चित कर लें कि वे पद उसके विषय में ही हैं जिसे आपने अध्ययन के लिए चुना है। आप भ्रम में न पड़ें यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला और यूहन्ना प्रेरित अथवा यूहन्ना मरकुस ये अलग-अलग व्यक्ति हैं। आपके पद का संदर्भ आपको बताएगा कि वह कौन व्यक्ति है। उदाहरण के लिए निम्नलिखित नाम हैं।-

जकर्याह-30 विभिन्न व्यक्ति
नाथन -20 व्यक्ति
योनातान-15 व्यक्ति
यहूदा-8 व्यक्ति
मरियम-7 औरतें
याकूब-5 व्यक्ति
यूहन्ना -5 व्यक्ति

Creation Autonomous Academy

4-एक व्यक्ति के कई नाम हैं।ः-

सावधान रहें, आप पाएंगे कि एक व्यक्ति के कई नाम हैं। जैसे-जैसे बाइबल इब्रानी, अरामी, यूनानी संदर्भ में आई, कुछ लोगों के नाम अलग-अलग भाषा में बदल गए। ये पुराना नियम और नया नियम दोनों में हैं। उदाहरण के लिए प्रेरित पतरस : पतरस, शिमौन, कैफा के नाम से जाना जाता है। दानिय्येल के तीन मित्र हनन्याह, मेशाएल, अजर्याहः सद्रक, मेशक, अबेदनगो के नाम से जाने जाते हैं। कभी-कभी एक नाम बदल जाता है। क्योंकि व्यक्ति का गुण

बदल जाता है। याकूब का नाम बदल कर इस्राएल हो गया। इसलिए सावधान रहें, उन सभी नामों को खोज लें अपने बाइबल अध्ययन में, जो एक व्यक्ति के बारे में बताते हैं।

5-स्वयं अध्ययन करें।:-

बाइबल के व्यक्तियों पर आप से पहले जिन व्यक्तियों ने पुस्तकें लिखी हैं उनसे दूर रहें। क्योंकि हो सकता है कि वे खण्ड के बाहर कार्य किए हों। आप अपना काम पहले करें, तब दूसरे श्रोतों को देखें।

जीवनी अध्ययन विधि के कदम:-

जीवनी अध्ययन विधि के दस कदम हैं।-

1-व्यक्ति का चुनाव करें।:-

बाइबल के उस व्यक्ति का चुनाव करें जिसका आप अध्ययन करना चाहते हैं। आप उस व्यक्ति के चुनाव द्वारा आरम्भ कर सकते हैं जो अपने अन्दर कमजोरी रखता है। अथवा अपने अन्दर ताकत रखने वाले व्यक्ति का चुनाव कर सकते हैं। व्यक्ति का चुनाव करें। वह व्यक्ति आपको कुछ मूल्यवान जीवन स्तर, परमेश्वर का जीवन स्तर प्रदान करेगा। आप प्रभु यीशु मसीह के समान होते चले जाएंगे।

2-व्यक्ति से सम्बन्धित सभी उद्धरणों की सूची बना लें।:-

उस व्यक्ति के विषय में प्राप्त सभी उद्धरणों की सूची बना लें।

अपने उद्धरण सामग्री का प्रयोग करते हुए, उस व्यक्ति के जीवन से सम्बन्धित सभी उद्धरणों को खोज लें। जैसे कि उसका जन्म, उसके जीवन की मुख्य-मुख्य घटनाएं, उसके जीवन के बारे में दूसरे क्या कहते हैं। उसकी मृत्यु। किसी भी व्यक्ति के बारे में सब कुछ नहीं जान सकते हैं। लेकिन जितना अधिक से अधिक सम्भव हो उस व्यक्ति के बारे में खोजें।

यह भी देखें कि क्या कोई पद उसके जीवन के विषय में ऐतिहासिक पृष्ठभूमि प्रस्तुत करते हैं। यदि आप दानिय्येल का अध्ययन कर रहे हैं। तब आवश्यक है कि उसके दिनों की पृष्ठभूमि बाबुल की गुलामी का अध्ययन करें। यदि आप प्रेरित पौलुस का अध्ययन कर रहे हैं। तब पौलुस की मिशनरी यात्राओं का अध्ययन करें।

Creation Autonomous Academy

3-प्रथम प्रभाव को लिखें।:-

जिन उद्धरणों की आपने सूची बनाया है उनका अध्ययन करें और नोट्स बनाएं। उस व्यक्ति के प्रथम प्रभाव को लिख लें। उसके बाद उस व्यक्ति के विषय में जिन आधारभूत बातों का आपने पता लगाया, निरीक्षण किया और महत्वपूर्ण सूचनाएं प्राप्त की हैं उन्हें लिख लें। अन्त में अध्ययन के समय जो समस्याएं आईं, प्रश्न आए अथवा कठिनाई हुई उन्हें लिख लें।

4-रुपरेखा बनाएं।:-

उस व्यक्ति के बारे में सभी उद्धरणों को पढ़ें और रुपरेखा बनाएं। यह एक अच्छा दृष्टिकोण पाने में और विभिन्न घटनाओं से इसका क्या सम्बन्ध है। यह जानने में आपकी सहायता करेगा। एक बार में सभी उद्धरणों को पढ़ने

का प्रयास करें। यह उस व्यकित के जीवन की धारावाहिकता का अनुभव करने में सहायता करेगा। जब आप उस व्यक्ति के जीवन के स्वाभाविक भागों को पढ़ते हैं। तब उस व्यक्ति के जीवन में उस समय चल रहे व्यवहार की प्रगति और बदलाव को देखें व लिखें। उदाहरण के लिए मूसा के जीवन के प्रसिद्ध भाग।:-

-चालीस साल फिरौन के दरबार में: किसी से सीखना।

-चालीस साल जंगल में: यह सीखना कि परमेश्वर कोई है।

यह चरित्र अध्ययन करने की वास्तविक कुंजी है कि परमेश्वर कैसे उसके जीवन को बदलता है और शैतान कैसे उसे गिराता है।

5-व्यक्ति के अन्दर से कुछ प्राप्त करें।:-

उद्धरणों का पुनः अध्ययन करें, सम्भव उत्तरों को खोजें। प्रश्नों के उत्तर के द्वारा आप जिस व्यक्ति का अध्ययन कर रहे हैं। उसके चरित्र के आन्तरिक भाग को प्राप्त करें।

6-कुछ चरित्र गुणों को चिन्हित करें।:-

एक बार फिर अपने उद्धरणों का अध्ययन करें। उस व्यक्ति के सकारात्मक और नकारात्मक, अच्छा और खराब, गुण और अवगुण अर्थात प्रत्येक गुण की सूची बनाएं। जितने चरित्र गुणों को आपने खोजा है उनके एक-एक पद लिखें।

7-बाइबल के अन्य भाग व्यक्ति के जीवन के बारे में क्या सिखाते हैं उसे लिखें।:-

बाइबल के अन्य भाग कैसे इसके जीवन का विश्लेषण करते हैं। इसे लिखें। व्यक्ति के जीवन की जांच करें कि बाइबल के अन्य खण्ड इस विश्लेषण के विषय में क्या सिखाते हैं।

8-मुख्य शिक्षाओं को एकत्र करके लिखें।:-

इस व्यक्ति के जीवन से क्या मुख्य शिक्षा मिलती है। प्राप्त शिक्षाओं को कुछ वाक्यों में लिखें। क्या कोई शब्द है जो उस व्यक्ति के जीवन के विषय में बताता है? उसके जीवन के चरित्र गुण क्या हैं?

9-व्यक्तिगत लागूकरण लिखें।:-

Creation Autonomous Academy

एक व्यक्तिगत लागूकरण लिखें। स्वयं से इन प्रश्नों को पूछें।-

-क्या मैं अपने जीवन में लागू करने के लिए इस व्यक्ति के जीवन से कुछ देख रहा हूं?

-क्या यह हमारी कोई कमजोरी को दिखाता है?

-क्या यह हमारी कुछ शक्तियों को दिखाता है?

-क्या चीज इस व्यक्ति के जीवन से मुझे प्रभावित करती है?

-इस क्षेत्र में मैं कहां असफल हुआ?

-मैं इसके विषय में क्या कर सकता हूं?

10-अपने अध्ययन को हस्तान्तरण योग्य बनाएं।:-

रुपरेखा से आपने जो कुछ सीखा है वह आपको याद रखने में और दूसरों को बताने में सहायक होगा। दूसरों को बताने के लिए स्वयं से प्रश्न पूछें। इस व्यक्ति के जीवन का दूसरों के लिए क्या अर्थ है? इससे दूसरों को मैं क्या बता सकता हूं?

बरनाबास के जीवन से दूसरों को बताने हेतु रुपरेखा इस प्रकार होगी।-

-कलीसिया के सदस्यों के जीवन में वह **धन लगाने वाला** था। (प्रेरितों० 4:36-37)

-वह प्रेरित पौलुस का **परिचय कराने वाला** था। (प्रेरितों० 26:28)

-अन्ताकिया की नयी कलीसिया का **देखभाल करने वाला** था। (प्रेरितों० 11:22-24)

-नये मसीहियों का **शिक्षक** था। (प्रेरितों० 11:22-26)

-वह उद्धार के सिद्धांत का **अनुवादक** था। (प्रेरितों० 13-14)

उपसंहारः-

अध्ययन की शिक्षाओं को लिखते हुए लागूकरण लिखें।

Creation Autonomous Academy

जीवनी-आत्मकथा अध्ययन विधि चार्ट

1-व्यक्ति का नामः स्तिफनुस

2-वचन के उद्धरणः प्रेरितों० 6:3-8:2
प्रेरितों० 11:19
प्रेरितों० 20:22

3-प्रथम प्रभावः स्तिफनुस नया विश्वासी था जिसने कलीसिया में अद्‌भुत गवाही रखा। वह एक सामर्थी प्रचारक और गवाह था। जो अपने विश्वास के लिए मरने के लिए तैयार था।

4-रुपरेखाः-

क-प्राथमिक कलीसिया द्वारा एक अगुवा चुना गया।
1-समस्या के समाधान में सहायता के लिए। (प्रेरितों० 6:5)
2-भले चरित्र गुण के आधार पर। (प्रेरितों० 6:3,5,8)

ख-उसके पास विस्तृत सेवा है।
1-मेज पर प्रतीक्षा। (प्रेरितों० 6:2,5)
2-आश्चर्यकर्म करना। (प्रेरितों० 6:8)
3-सामर्थ्य के साथ प्रचार करना और शिक्षा देना। (प्रेरितों० 6:10)

ग-उसे सताया गया।
1-यहूदी अगुवों ने विरोध किया। (प्रेरितों० 6:9)
2-झूंठा आरोप लगाया गया। (प्रेरितों० 6:11)
3-गिरफ्तार करके महासभा के सामने लाया गया। (प्रेरितों० 6:12-14)

घ-उसके मृत्यु के बाद कलीसिया फैलती गयी। (प्रेरितों० 8:2-4,11-19)

5-व्यक्ति के अन्दर के सामान्य गुण (प्रश्नों के उत्तर लिखें):-

क-वह एक अगुवा क्यों चुना गया?
-वह पवित्र आत्मा और बुद्धि से परिपूर्ण था। (प्रेरितों० 6:3)
-वह आत्मा और विश्वास से परिपूर्ण था। (प्रेरितों० 6:5)
-वह परमेश्वर के अनुग्रह और सामर्थ्य से परिपूर्ण था। (प्रेरितों० 6:8)
-वह वचन जानता था। (प्रेरितों० 7:2-53)

ख-झूंठे आरोपों के बारे में उसका क्या प्रतिउत्तर था?
वह शांत था और उसने तब उत्तर दिया जब महायाजक ने उसे बोलने के लिए कहा।

ग-क्या यहां प्रभु यीशु के साथ कोई समानता है?
हां, उस पर भी झूंठे आरोप लगाए गए और मारा गया।
उसे भी सताया गया।

Creation Autonomous Academy

घ-सताने वालों के प्रति उसका क्या व्यवहार था?

उसने उन्हें क्षमा किया, परमेश्वर से प्रार्थना किया कि यह पाप उन पर मत लगा।

ङ-उसके सेवा और मृत्यु का लम्बा परिणाम क्या था?

परमेश्वर की योजना को आगे ले जाने वाले शिष्य सताये गए। वे फैल गए और दूसरे जगहों पर सुसमाचार सुनाए। यहूदिया, सामरिया,पलिस्तीन के बाहर भी। (प्रेरितों० 1:8)

पौलुस को प्रभु के पास जाने में उसकी मृत्यु सहायक हुई।

6-चिन्हित चरित्र गुणः प्रेरितों के काम की पुस्तक

-आत्मा से परिपूर्ण (प्रेरितों० 5:10, 6:3)
-बुद्धिमान (प्रेरितों० 6:3,10)
-विश्वासयोग्य (प्रेरितों० 6:5)
-परमेश्वर के लिए उपलब्ध (प्रेरितों० 6:8)
-पवित्र (प्रेरितों० 6:15)
-साहसी (प्रेरितों० 7:51-53)
-बहादुर (प्रेरितों० 7:51-53)
-क्षमा (प्रेरितों० 7:70)
-दूसरों द्वारा सम्मानित (प्रेरितों० 8:2)
-प्रभु यीशु के लिए एक गवाह (प्रेरितों० 22:20)

7-उसके जीवन के विषय में बाइबल के अन्य भागों का विश्लेषणः-

-पवित्र आत्मा की उपस्थिति में जीवन (प्रेरितों० 7:54-55, इब्रा० 13:5-6)
-झूठे आरोप और सताव हमारे जीवन में भी आते हैं। (प्रेरितों० 6:11)
-जब हम प्रभु के साथ चलते हैं परमेश्वर का अनुग्रह पर्याप्त है। (प्रेरितों० 6:10)

8-मुख्य शिक्षाः-

स्तिफनुस के जीवन चरित्र से, चरित्र गुण समर्पण और आज्ञाकारिता। प्रभु यीशु के लिए कुछ भी करने के लिए, यहां तक कि जीवन भी देने के लिए प्राप्त होता है।

उसका समर्पण इस बात में दिखता है कि वह प्रभु के साथ चलने वाला मनुष्य था। कलीसिया में औरों से पहले उसने महान गवाही रखा। उसने अपने जीवन और मृत्यु दोनों से गवाही दिया।

वह वचन का मनुष्य था। वह अपने बाइबल पुराने नियम को वास्तविक रुप से जानता था। उसने वचन अध्ययन में समय लगाया था।

9-व्यक्तिगत लागूकरणः-

स्तिफनुस के समान बनने की आवश्यकता है। एक वचन का व्यक्ति जो प्रभु यीशु मसीह को जानता है और दूसरों के प्रश्न पूछने पर वचन से उत्तर दे सकता है। इस अध्ययन के परिणाम स्वरुप मैं अपने आपको प्रतिदिन मनन के लिए 15 मिनट के लिए समर्पित करुंगा। जिससे कि मैं प्रभु यीशु मसीह को अच्छी तरह जान सकूं। मैं अपने को

Creation Autonomous Academy

वचन याद करने के लिए समर्पित करुंगा। प्रत्येक सप्ताह दो पदों को याद करुंगा। जिससे में लोगों के प्रश्नों का उत्तर दे सकूं।

10-हस्तान्तरण (दूसरों को कैसे बताएंगे):-

निम्नलिखित है।-

1: क-व्यक्तिगत रुप से प्रभु यीशु मसीह के साथ चलने की आवश्यकता है। स्तिफनुस के समान विश्वास और बुद्धि प्राप्त करने के लिए एक मात्र रास्ता है। वह है सांत्वना

ख-निरन्तर वचन में बने रहें। बाइबल अध्ययन करने, वचन याद करने और मनन में समय व्यतीत करने की मुझे आवश्यकता है। जिससे कि मैं दूसरों को सिखा सकूं। आवश्यकता है कि मैं दूसरों को बताऊं।

ग-सताव के समय में उत्साह की आवश्यकता है। मुझे प्रार्थना करने की जरुरत है। जिससे परमेश्वर मुझे साहस दे।

2: कोई व्यक्ति जिसे मैं इस अध्ययन को बता सकूं।

राम, श्याम, मोहन

Creation Autonomous Academy

अध्याय- 14
विषय अध्ययन विधि

बाइबल अध्ययन करने का एक तरीका है विषयों की जांच करना। विषय अयययन विधि विषय वाक्य अध्ययन विधि के समान है। परन्तु इसमें कुछ भिन्नताएं हैं। विषय अध्ययन विधि विषय वाक्य अध्ययन विधि की अपेक्षा अधिक समय लेती है। क्योंकि इसमें आप अधिक पदों का अध्ययन करते हैं। एक विषय में अनेक छोटे-छोटे वाक्य होते हैं। इस अध्ययन विधि में आप सभी विषय वाक्यों से सम्बन्धित अध्ययन कर सकते हैं। इस विधि की दूसरी भिन्नता है कि आपको यह निर्णय नहीं लेना होगा कि अध्ययन के अतिरिक्त क्या प्रश्न पूछना होगा। जैसे विषय वाक्य अध्ययन विधि में चार या पांच प्रश्न पूछना होता था वैसी विषय अध्ययन विधि में सीमा नहीं है।

विषय अध्ययन विधि क्या है?ः-

विषय अध्ययन विधि में पुराने नियम अथवा नये नियम अथवा पूरी बाइबल से बाइबल का एक विषय चुनकर अध्ययन किया जाता है। इस विषय के बारे में परमेश्वर क्या बताता है? यह पता लगाया जाता है। प्रत्येक पुस्तक में कई विषयों की एक संख्या होती है। जिसे लेखक सावधानीपूर्वक रखता है। विषय अध्ययन विधि सिद्धांत अध्ययन के लिए उपयोग की जा सकती है।

विषय अध्ययन विधि का महत्वः-

यह आपको परमेश्वर के वचन का व्यवस्थित अध्ययन प्रदान करता है। यह आपको सही तरीके से बाइबल के सत्य का सन्तुलित अध्ययन प्रदान करता है। इससे आप उन विषयों का अध्ययन कर सकते हैं जिसमें आपकी रुचि है। इसके द्वारा बाइबल के महान सिद्धांतों को सीख सकते हैं। इस विधि से प्राप्त अध्ययन को सरलता से दूसरों को बता सकते हैं। कुछ विषयों का व्यक्तिगत अध्ययन आप अपने जीवन भर कर सकते हैं।

आवश्यक सामग्रीः-

1-अध्ययन बाइबल
2-शब्दानुक्रमाणिका
3-विषय बाइबल

Creation Autonomous Academy

एक अच्छे विषय अध्ययन के लिए कुछ सुझावः-

डा० आर० ए० बेरे एक महान बाइबल शिक्षक हैं। उन्होंने तीन सुझाव दिए हैं-

1-व्यवस्थित हों।ः-

बाइबल का यहां वहां से अध्ययन न करें यह गैर अनुशासित तरीका है। अपने विषय से सम्बन्धित सभी चीजों की सूची बनाएं। जितना सम्भव हो सके इसे पूर्ण कर लें। तब आप इनमें से एक समय में एक को लें और उसका व्यवस्थित अध्ययन करें।

2-पूरी बाइबल पढ़ें।:-

जितना सम्भव हो पता लगाएं और विषय से सम्बन्धित सभी पदों का अध्ययन करें। विषय में परमेश्वर ने क्या कहा है? उसके बारे में सब कुछ जानने का यह एक मात्र तरीका है। विषय से सम्बन्धित खण्ड आपको पूरी बाइबल में मिलेंगे। आप शब्दानुक्रमाणिका का प्रयोग कर सकते हैं।

3-सही अर्थ निकालें।:-

जिन पदों का अध्ययन कर रहे हैं उनका सही अर्थ निकालने का प्रयास करें। प्रत्येक पद का संदर्भ जांचें। गलत अर्थ निकालने से बचें। एक बहुत बड़ी गलती यह हो सकती है कि आप एक पद को उसके संदर्भ के बाहर अध्ययन करें। आवश्यकता है कि आप इस गलती से बचें।

विषय अध्ययन विधि के कदमः-

1-विषयः-

विषय का चुनाव कर लें।

2-शब्दों की सूची बनाएं।:-

अपने विषय से सम्बन्धित शब्दों, घटनाओं इत्यादि की सूची बनाएं। यदि आप दुख के विषय का अध्ययन कर रहे हैं। तब उदाहरण के लिए आप शब्दों की सूची बनाना चाहेंगे-क्रोध, स्वास्थ्य, दर्द, परीक्षाएं आदि। यदि आप देखते हैं कि विषय बहुत बड़ा है तो उसे छोटा करें। मापने योग्य आकार का बनाएं।

3-बाइबल के उद्धरण इकट्ठा करें।:-

अपनी आवश्यक सामग्री का उपयोग करें और विषय से सम्बन्धित सभी पदों को इकट्ठा करें। शब्दों की सूची शब्दानुक्रमाणिका में लिखी हुई है। विषय से सम्बन्धित सभी पदों की सूची बनाएं। पदों को प्राप्त करने के लिए विषय बाइबल का उपयोग कर सकते हैं।

4-व्यक्तिगत रुप से प्रत्येक उद्धरण पर ध्यान दें।:-

Creation Autonomous Academy

प्रत्येक पद का अलग-अलग अध्ययन करें। आपने जो खोज किया है उसे लिख लें। जब आप एक पद का अध्ययन कर रहे हैं तो उसे उसके संदर्भ में देखें और उसका सही अर्थ निकालें। प्रत्येक पद के विषय में अध्ययन करते समय उसके बारे में कई प्रश्न पूछ सकते हैं। छः महान प्रश्नों को याद रखें क्या, क्यों, कब, कहां, कौन, कैसे। कुंजी शब्दों को न भूलें।

5-तुलना करें और उद्धरण समूह बनाएं।:-

प्रत्येक पद का सावधानी से अलग-अलग अध्ययन करने के बाद, आप देखेंगे कि कुछ उद्धरण स्वाभाविक रुप से पूरक हैं। जिस विषय का आप अध्ययन कर रहे हैं उन्हें श्रेणीबद्ध कर लीजिए।

6-रुपरेखा बनाएं।ः-

तैयार की गयी श्रेणी के अनुसार एवं अपने मुख्य विभाजन के अनुसार अपने अध्ययन के लिए रुपरेखा बनाइए। यह कदम आपके अध्ययन को संगठित करेगा। जिससे कि आप इसे दूसरों को बता सकें। मिलते-जुलते पदों को एक स्वाभाविक भाग में रखें। इन्हें एक सैद्धांतिक ढांचे में संगठित करें।

7-उपसंहार लिखें।ः-

निष्कर्ष के दो भाग हैं। एक पैराग्राफ में जो कुछ आपने प्राप्त किया है उसको लिखें। तत्पश्चात व्यवहारिक लागूकरण लिखें। याद रखें आपका लागूकरण व्यक्तिगत, व्यवहारिक, सम्भव और मापने योग्य हो।

विषय अध्ययन विधि चार्ट कैसे बनाएं?ः-

निम्नलिखित का अनुसरण करें।-

1-विषयः- विषय का चुनाव करें और उसे लिखें।

2-शब्दों की सूचीः- विषय से सम्बन्धित शब्दों को लिखें। जो आपको शब्दानुक्रमाणिका और विषय बाइबल में मिलेंगे।

3-बाइबल उद्धरणः- अपने विषय से सम्बन्धित वचन के उद्धरणों की सूची बनाएं।

4-तुलनात्मक चार्टः- निम्न तरीके से चार्ट बनाएं।-

अ-उद्धरणः बाइबल से चुनकर प्रत्येक उद्धरण का पद लिखें।

ब-क्रास रिफरेन्सः जिन पदों का आप अध्ययन कर रहे हैं। बाइबल में खोज कर उससे सम्बन्धित अन्य पदों को लिखें। अथवा उन पदों को लिखें जो पूरक हों।

स-खोजः पदों में जो कुछ खोजकर आपने प्राप्त किया है उसको लिखें।

5-तुलना करना और समूह बनाना।ः- प्रत्येक पद की एक दूसरे से तुलना करें। मिलते- जुलते पदों को एक साथ रखकर समूह बनाएं।

6-रुपरेखाः- जो श्रेणी आपने विकसित किया है उसका उपयोग करते हुए रुपरेखा बनाइए। कोई सिद्ध तरीका नहीं है। जिस तरीके से आपको सरल लगे उस तरीके से रुपरेखा बनाइए।

7-उपसंहारः- निकष्कर्ष लिखें। उसके बाद आपने अपने जीवन के लिए जो शिक्षा प्राप्त किया है उसे अपने जीवन में कैसे लागू करेंगे यह लिखें।

विषय अध्ययन विधि -चार्ट

1-विषय- विश्वास योग्य मनुष्य (2 तीमु० 2:2)

2-शब्दों की सूची:- विश्वास योग्य

3-बाइबल उद्धरण:-

गिनती 12:7	दानिय्येल 6:4	लूका 19:17	कुलुस्सियो 4:7,9
1 शमूएल 2:35	भजन 12:1	1 कुरि० 1:9	1 तीमु० 1:12
1 शमूएल 22:14	नीति० 20:6	1 कुरि० 4:1-2,16-17	2 तीमु० 2:2
नहेम्याह 7:2	नीति० 28:20	1 कुरि० 10:13	1 पत० 5:12
नहेम्याह 13:13	मत्ती 24:45	इफि० 6:21	1 यूहन्ना 1:9
यशायाह 8:2	लूका 16:10-13	कुलुस्सियो 1:7	

4 व 5 -तुलनात्मक अध्ययन चार्ट:-

पद	क्रास रिफरेन्स	खोज
गिनती 12:7		-परमेश्वर ने मूसा को विश्वास योग्य कहा।
1 शमूएल 2:35		-यह भविष्यद्वाणी की गयी थी कि शमूएल एक विश्वास योग्य मनुष्य बनेगा। -एक विश्वास योग्य मनुष्य परमेश्वर की आज्ञा का पालन करेगा।
1 शमूएल 22:14		-दाऊद अहीमेलेक द्वारा एक विश्वास योग्य मनुष्य कहा गया।
नहेम्याह 7:2	मत्ती 24:45	-हनानी नहेम्याह द्वारा एक विश्वास योग्य मनुष्य कहा गया। -एक विश्वास योग्य मनुष्य को अगुवाई की भूमिका दी गयी।
नहेम्याह 9:7-8, नहेम्याह 13:13		-अब्राहम परमेश्वर द्वारा विश्वास योग्य कहा गया। -नहेम्याह के खजांची उसके द्वारा विश्वास योग्य कहे गये। इसलिए वह उन्हें जिम्मेदारी दिया।
यशायाह 8:2		-उरिय्याह और जकर्याह परमेश्वर के प्रति विश्वास योग्य थे।
दानिय्येल 6:4	यूहन्ना 19:4	-फारस के राजा ने दानिय्येल को गलत कार्य करते नहीं पाया। क्योंकि वह विश्वास योग्य मनुष्य था। - एक विश्वास योग्य मनुष्य का जीवन निर्दोष गवाही है।
भजन 12:1	नीति० 20:6, फिलि० 2:19-20	-विश्वास योग्य मनुष्य गिनी चुनी संख्या में कुछ हैं जिन्हें प्राप्त करना कठिन है।
नीति० 20:6	फिलि० 2:19-22	-संसार में अधिकांश मनुष्य विश्वास योग्य नहीं हैं। -विश्वास योग्य मनुष्य अन्यों की रुचि का ख्याल रखता है। जबकि अविश्वास योग्य मनुष्य सब बातों में स्वयं की सेवा

Creation Autonomous Academy

		करता है।
नीति० 28:20		-एक विश्वास योग्य मनुष्य आशीषित होता है। -एक विश्वास योग्य मनुष्य अपने मूल्यों को सही रखता है। इसके विपरीत वह मनुष्य है जो शीघ्र धनी होना चाहता है।
पद	**क्रास रिफरेन्स**	**खोज**
मत्ती 24:45 मत्ती 25:21,23	नहेम्याह 7:2, लूका 19:7	-एक विश्वास योग्य मनुष्य अगुवाई की भूमिका पाता है। -एक विश्वास योग्य मनुष्य महान जिम्मेदारी के साथ स्वर्ग में पुरस्कार पाता है। विश्वास योग्यता में वह प्रभु के आनन्द का अनुभव करता है।
लूका 16:10-13		-एक मनुष्य की विश्वास योग्यता को जांचने के लिए यह खण्ड चार तरीके दिखाता है।- 1-बड़ी वस्तु देने से पहले छोटी वस्तु में जांचें। 2-आत्मिक सत्य देने से पहले आत्मिक बातों में जाचें। 3-जो उसके पास नहीं है उसका मूल्यांकन वह कैसे करता है इस बात में जाचें। 4-परमेश्वर के समर्पण में उसे जांचें।
लूका 19:17	मत्ती 25:21-23	-एक विश्वास योग्य सेवक महान जिम्मेदारी के साथ पुरस्कार पाता है।
1 कुरि० 1:9	1 कुरि० 10:13, 1 यूहन्ना 1-9	-परमेश्वर विश्वास योग्य है।
1 कुरि० 4:1-2, 1 कुरि० 16-17	इफि० 6:21, कुलु० 1:7, 4:7,9	-एक विश्वास योग्य मनुष्य बुद्धिमान भण्डारी होता है -तीमुथियुस पौलुस द्वारा एक विश्वास योग्य मनुष्य कहा गया। -एक विश्वास योग्य मनुष्य का विश्वास उसे भेजे जाने पर दिखता है।
1 कुरि० 10:13	1 कुरि० 1:9, 1 यूहन्ना 1:9	-परमेश्वर विश्वास योग्य है।
इफि० 6:21	कुलु० 4:7	-तीतुस पौलुस द्वारा एक विश्वास योग्य सेवक कहा गया।
कुलुस्सियो 1:7		-इपफ्रास प्रभु यीशु का एक विश्वास योग्य सेवक था।
कुलुस्सियो 4:7,9		-उन्नेसिमुस पौलुस द्वारा विश्वास योग्य स्वीकार किया गया।
1 तीमु० 1:12		-परमेश्वर ने पौलुस को विश्वास योग्य स्वीकार किया। -एक विश्वास योग्य मनुष्य को सेवा दी गयी।
2 तीमु० 2:2		-एक विश्वास योग्य मनुष्य आत्मिक सत्य में रुचि रखता है। -एक विश्वास योग्य मनुष्य जो कुछ शिक्षा प्राप्त किया है उसे औरों को सिखाता है।
1 पत० 5:12		-सिलास पतरस द्वारा विश्वास योग्य कहा गया।
1 यूहन्ना 1:9		

Creation Autonomous Academy

6-रुपरेखाः-

1-विश्वास योग्यता ईश्वरीय गुण है।-

1 कुरि० 1:9,10:13, 1 यूहन्ना 1:9

2-विश्वास योग्य मनुष्य कठिनाई से मिलते हैं।-

भजन 12:1, नीति० 20:6, फिलि० 2:19-20

3-विश्वास योग्य मनुष्य के बाइबल के उदाहरण-

अ-पुराने नियम के उदाहरण

1-अब्राहम - नहेम्याह 9:7-8
2-मूसा - गिनती 12:7
3-शमूएल - 1 शमूएल 2:35
4-दाऊद - 1 शमूएल 22:14
5-हनानी - नहेम्याह 7:2
6-नहेम्याह का खजांची - नहेम्याह 13:13
7-उरिय्याह और जकर्याह - यशा० 8:2
8-दानिय्येल - दानि० 6:4

ब-नये नियम के उदाहरण

1-तीमुथियुस - 1 कुरि० 4:17
2-तीतुस - इफि० 6:21
3-इपफ्रास - कुलु० 1:7
4-उन्नेसिमुस - कुलु० 4:9
5-पौलुस - 1 तीमु० 1:12
6-सिलास - 1 पत० 5:12

स-अन्दर

1-नये नियम में कई मनुष्य विश्वास योग्य कहलाए। जिन्होंने पौलुस से प्रशिक्षण प्राप्त किया था।

Creation Autonomous Academy

2-पौलुस स्वयं विश्वास योग्य मनुष्य था। वह उनके लिए उदाहरण था जिनको उसने प्रशिक्षित किया।

4-एक विश्वास योग्य मनुष्य का चरित्र।ः-

क-वह स्वयं की अपेक्षा औरों की रुचि का ध्यान रखता है। (नीति० 20:6, फिलि० 2:19-22)
ख-वह धनी बनने की अपेक्षा अपने मूल्यों को सही रखता है। (नीति० 28:20)
ग-वह संसार में निर्दोष गवाही का जीवन व्यतीत करता है। (दानि० 6:4)
घ-वह परमेश्वर के प्रति आज्ञाकारी रहता है। (1 शमूएल 2:35)
ङ-वह बुद्धिमान भण्डारी होता है। (1 कुरि० 4:1-2)

च-जो शिक्षा उसने प्राप्त किया है उसे औरों को सिखाता है। (2 तीमु० 2:2)

5-एक व्यक्ति के विश्वास योग्यता को जांचने के तरीके।-

लूका 16:10-13

क-बड़ी जिम्मेदारी देने के पहले छोटी जिम्मेदारी में जांचें। (पद 10)

ख-आत्मिक सत्य देने से पहले गैरआत्मिक मामलों में जाचें। (पद 11)

ग-उसका स्वयं का देने के पहले जो उसके पास नहीं है उन मूल्यों में जाचें। सेवा में भेजने के पहले जांचें कि उसने किस विश्वास योग्यता से दूसरे की सेवा की है। (पद 12)

घ-परमेश्वर के प्रति उसके समर्पण को जांचें। (पद 13)

6-एक विश्वास योग्य मनुष्य बनने के लाभ।-

क-उसे अगुवाई की भूमिका दी जाती है। (नहे० 7:2, मत्ती 24:45)

ख-वह आशीषित होगा। (नीति० 28:20)

ग-वह स्वर्ग में महान जिम्मेदारियों के साथ सम्मानित किया जाएगा। अपनी विश्वास योग्यता द्वारा प्रभु के आनन्द का अनुभव करेगा। (मत्ती 25:21,23, लूका 19:17)

घ-उसे एक सेवा दी जाती है। (1 तीमु० 1:12)

ङ-वह आत्मिक सत्य में रुचि रखता है। (2 तीमु० 2:2)

च-सेवा में भेजने के लिए उसका शिक्षक उस पर विश्वास करता है। (1 कुरि० 4:16-17, फिलि० 2:19-24, इफि० 6:21)

6-उपसंहार (भूमिका और लागूकरण):-

जैसे ही मैंने विश्वास योग्य मनुष्य का इस अध्ययन विधि में अध्ययन किया। परमेश्वर ने विश्वास योग्यता के लिए मुझे दो क्षेत्रों में प्रभावित किया। पहला यह कि मैं अपने प्रार्थना के जीवन में विश्वास योग्य बनूं। आवश्यक है कि मैं प्रतिदिन एकान्त में प्रार्थना करने के लिए अपने आपको अनुशासित करुं। दूसरा क्षेत्र है मैं अपने धन में अधिक विश्वास योग्य बनूं। लूका 16:10 पद की मुझे आवश्यकता है। यह सिखाता है कि यदि मैं धन का सही तरीके से उपयोग नहीं करता, तब परमेश्वर हमें अपना सत्य आत्मिक आशीष के साथ नहीं देगा।

कार्य -

-मैं अगले सप्ताह विश्वास योग्य मनुष्य की जांच का खण्ड लूका 16:10-13 को याद करने की योजना बनाऊंगा।

-मैं अपनी पत्नी के साथ इस सप्ताह एक पारिवारिक वजट बनाऊंगा। मैं अपने पैसे के आय व्यय का अच्छा लेखा जोखा रखना आरम्भ करुंगा। परमेश्वर से प्रार्थना करुंगा कि खर्च, बचत और दान देने में मेरा मार्गदर्शन करे।

-प्रत्येक प्रातः नाश्ते के पहले मैं 20 मिनट अपनी प्रार्थना सूची को देखने और उसके अनुसार प्रार्थना करने में लगाऊंगा।

Creation Autonomous Academy

अध्याय- 15
शब्द अध्ययन विधि

बाइबल शब्द को कैसे खोजें?ः-

मूल बाइबल इब्रानी, अरामी और यूनानी में लिखी गयी। औसत मसीही इन भाषाओं को नहीं जानते है। फिर भी वे शब्द अध्ययन कर सकते हैं। क्योंकि आज कई सर्वोत्तम अनुवाद और उद्धरण सामग्री उपलब्ध है।

भूतकाल में जो लोग व्यक्तिगत बाइबल अध्ययन में रुचि रखते थे वे मूल भाषाएं सीखते थे। मात्र वे लोग जो कई साल यूनानी और इब्रानी सीखने में लगाते थे। वे ही व्यक्तिगत बाइबल अध्ययन का आनन्द उठा सकते थे। जैसे शब्द मूल भाषा में आए थे उनका अध्ययन करने के द्वारा वे आनन्द उठा सकते थे। आजकल शब्द अध्ययन उपलब्ध सामग्री के साथ किया जाता है।

परिभाषाः-

शब्द अध्ययन विधि में शब्द की बनावट जैसा मूल भाषा में है और उस शब्द के विशेष उपयोग का अध्ययन करते हैं। विशेष रुप से वचन के एक खण्ड के संदर्भ में उसका क्या सम्बन्ध है। शब्द अध्ययन का विशेष उद्देश्य जितना सम्भव हो यह सीखना है कि जब लेखक ने इसका उपयोग किया उस समय उसका क्या अर्थ था।

बाइबल शब्द अध्ययन क्यों करें?ः-

बाइबल का महत्वपूर्ण धर्मवैज्ञानिक कथन छोटे से छोटे शब्दों पर निर्भर होता है। ठीक वैसे जैसे पूर्व स्थिति और लेख निर्भर था। परमेश्वर के वचन के प्रमुख महान सिद्धांत एक अकेले शब्द के चारों ओर घूमते हैं। जैसे अनुग्रह, विश्वास इत्यादि। यदि आप वचन के गहरे अर्थ को समझना चाहते हैं। तब आवश्यक है कि जहां विशेष शब्द उपयोग किया गया है, वहां उसका अध्ययन करें।

बाइबल सत्य का सही अर्थानुवाद, सत्य को बताने के लिए जब शब्द का उपयोग किया गया, उसकी सही समझ पर निर्भर करता है।

दाऊद घोषणा करता है, 'यहोवा के वचन तो पवित्र वचन हैं, वे ऐसी चांदी के समान हैं जो भट्ठी में ताई जाकर सात बार शुद्ध की गयी हो।' भजन 12:6 इसी के समान नीतिवचन का लेखक कहता है, 'परमेश्वर का प्रत्येक वचन ताया हुआ हैः जो परमेश्वर की शरण लेते हैं उनके लिए वह ढाल है।' नीति० 30:5

Creation Autonomous Academy

लेकिन ये पवित्र वचन (शब्द) एक मूल भाषा में लिखे गये। हमारी भाषा में अनुवाद करते समय पूर्ण रुप से एवं इनका पूर्ण अर्थ सब जगह संचारित नहीं हो पाता है। यह सत्य तथ्य है कि कोई भी अनुवाद सिद्ध नहीं है। क्योंकि मूल भाषा में जैसा शब्द का अर्थ होता है ठीक वैसे दूसरी भाषाओं में नहीं मिलता है। दो भाषाओं के बीच एक समान शब्द नहीं हैं। इसलिए अनुवाद के लिए जिस खण्ड को चुना है अध्ययन करते समय हम उसका सही एवं पूर्ण अर्थ खोजें।

जब बाइबल का मूल से अंग्रेजी में अनुवाद किया गया। तब इब्रानी, अरामी और यूनानी मूल के 11280 शब्दों का अनुवाद 6000 शब्दों में किया गया। आप 11000 शब्दों को 6000 शब्दों में कैसे रखेंगे? मूल भाषा से अनुवाद करते समय कई भिन्न शब्दों को एक अंग्रेजी शब्द में अनुवाद किया गया है। उदाहरण के लिए नया नियम में सात भिन्न यूनानी शब्दों का अंग्रेजी में सर्वेन्ट अनुवाद किया गया। जबकि इनमें से प्रत्येक भिन्न शब्द हैं जो सर्वेन्ट की

छाया मात्र हैं। हमारी भाषा मूल भाषा से बहुत बाद की भाषा है। इसमें मूल भाषा के शब्दों का पूर्ण अर्थ नहीं मिल सकता है।

जब हम शब्द अध्ययन कर रहे हैं तो दो चीजें अपने मस्तिष्क में अवश्य रखें। पहली आवश्यक है कि हमारा शब्द अध्ययन अंग्रेजी या हिन्दी भाषा पर नहीं, बल्कि मूल भाषा के शब्दों पर आधारित हो। दूसरी हम संदर्भ को अनुमति दें कि वह संकेत दे कि मूल भाषा में शब्द का क्या अर्थ है। अंग्रेजी अथवा हिन्दी भाषा में क्या समानता है इसका कोई मतलब नहीं है।

आवश्यक सामग्रीः-

1-अध्ययन बाइबल
2-कई नये अनुवाद
3-शब्दानुक्रमाणिका
4-बाइबल शब्दकोष अथवा इनसाइक्लोपीडिया
5-शब्द अध्ययन का एक सेट
6-भाषा शब्दकोष- एक अच्छा हिन्दी शब्दकोष
7-यूनानी शब्दानुक्रमाणिका
8-शब्द अध्ययन शब्दानुक्रमाणिका

शब्द अध्ययन की तीन सामान्य कठिनाइयां हैं।ः-

1-कभी-कभी कई यूनानी शब्द, एक शब्द में स्थानीय भाषा में अनुवाद किए गये हैं। जैसे अंग्रेजी में सर्वेन्ट
2-कभी-कभी एक यूनानी अथवा इब्रानी शब्द स्थानीय भाषा में कई तरीके से अनुवाद किया गया है।

ऐसे में आप सावधानी से मूल भाषा के विभिन्न शब्दों का अध्ययन करें। जैसे यूनानी शब्द ‘कोईनोनिया’ का अनुवाद अंग्रेजी किंग जेम्स वर्जन में पांच भिन्न तरीकों से किया गया है। 1-संचार, 2-समुदाय, 3-बांटना, 4-संगति, 5-सहयोग

इस समस्या का हल निकालें।-
-अनुवाद के भिन्न-भिन्न तरीकों की सूची बनाएं।
-प्रत्येक तरीके से कितनी बार कैसे अनुवाद किया गया उसकी सूची बनाएं।
-प्रत्येक अनुवाद का उदाहरण दें।
-सम्बन्धित भिन्न अर्थ को लिखें।
-जब आप लेखक के शब्दों का अध्ययन कर रहे हैं उसे परिभाषित करें।
3-कभी-कभी मूल शब्द एक सम्पूर्ण भाग अनुवाद किया गया है।

शब्द अध्ययन विधि के कदमः-

1-शब्द को चुनें।ः-

एक शब्द को चुनें जिसके विषय में आप रुचि रखते हैं।

Creation Autonomous Academy

2-हिन्दी की परिभाषा प्राप्त करें।:-

अपने हिन्दी शब्दकोष का उपयोग करें और हिन्दी शब्द की परिभाषा प्राप्त करें।

3-अनुवादों की तुलना करें।:-

जहां शब्द भिन्न नये अनुवाद में उपयोग किया गया है खण्ड को पढ़ें। शब्दों की भिन्नता जो आपने प्राप्त किया है उसे लिखें।

4-मूल शब्द की परिभाषा लिखें।:-

शब्दानुक्रमाणिका अथवा शब्द अध्ययन पुस्तक में मूल शब्द क्या है? यह पता लगाएं और उसकी परिभाषा लिखें। आप कई उपयोग पा सकते हैं।

5-बाइबल में सही शब्द को खोजें।:-

शब्दानुक्रमाणिका का पुनः उपयोग करें। पता लगाएं कि बाइबल में शब्द कैसे और कहां उपयोग किया गया है। ये प्रश्न पूछें-

-बाइबल में कितनी बार यह शब्द दिया गया है?
-कौन सी पुस्तक में लिखा गया है?
-लेखक ने क्या शब्द उपयोग किया है?
-कौन सी पुस्तक में प्रमुख रुप से उपयोग किया गया है?
-बाइबल में सबसे पहले कहां यह शब्द उपयोग हुआ है?
-जिस पुस्तक में आप अध्ययन कर रहे हैं उसमें सबसे पहले कहां उपयोग हुआ है?

6-शब्द के मूल अर्थ को खोजें।:-

यह कदम आपको खोज की तरफ ले जाएगा। जिस शब्द का आप अध्ययन कर रहे हैं उसके पूर्ण अर्थ को पाना चाहेंगें। मूल शब्द का मूल अर्थ पाने के लिए बाइबल शब्दकोष, इनसाइक्लोपीडिया, शब्द अध्ययन का सेट अथवा धर्मवैज्ञानिक शब्द पुस्तक का उपयोग करें। इससे आपको शब्द का मूल अर्थ प्राप्त होगा।

7-बाइबल में शब्द के उपयोग को खोजें।:-

खोज करें कि बाइबल में यह शब्द कैसे उपयोग किया गया है। मूल अर्थ का अध्ययन आपको यह बताएगा कि शब्द का मूल अर्थ क्या है? यह कहां से आया है? लेकिन समय के साथ कुछ शब्दों के अर्थ बदल जाते हैं। वे विभिन्न परिस्थितियों में संदर्भ के अनुसार भिन्न अर्थ देते हैं। शब्द के उपयोग में प्रमुख रुप से महत्वपूर्ण तथ्य है शब्द का सही अर्थ बताना। इस कदम को निम्नलिखित तरीके से करें।-

1-जब बाइबल में यह पुस्तक लिखी गयी उस समय इस शब्द का कैसे उपयोग किया गया?:-

पुस्तक को जब लेखक ने लिखा तब शब्द का उपयोग कैसे किया गया। बाइबल के अतिरिक्त अन्य लेखों में कैसे इसका उपयोग किया गया था। जिन सांस्कृतिक दिनों में यह शब्द उपयोग किया गया उस समय इसका क्या अर्थ था।

अतिरिक्त बाइबल सामग्री को देखें उदाहरण के लिए ऐतिहासिक समय। कई बार यह अध्ययन बताता है कि शब्द किस प्रकार उपयोग किया गया। जो व्यक्ति मूल भाषा जानते हैं वे इब्रानी या यूनानी में धर्मवैज्ञानिक सिद्धान्तों की इस सूचना को खोजते हैं।

2-पता लगाएं कि बाइबल में इस शब्द को कैसे उपयोग किया गया है।:-

अपनी शब्दानुक्रमाणिका का उपयोग करते हुए खोजें। प्रत्येक समय जब यह बाइबल में उपयोग किया गया, इस शब्द का अनुवाद कैसे किया गया है। वचन में शब्द के उपयोग और उसकी व्याख्या का पता लगाएं। यह वचन की परिभाषा के पता लगाने का एक तरीका है। आप कुछ प्रश्न पूछ सकते हैं।-

-पुस्तक के अन्य भागों में लेखक ने इस शब्द को कैसे उपयोग किया है?
-लेखक ने अपनी अन्य पुस्तकों में इस शब्द को कैसे उपयोग किया है?
-सम्पूर्ण नियम में इस शब्द का कैसे उपयोग किया गया है?
-क्या इस शब्द का एक से अधिक बार उपयोग किया गया है? यदि हां तो इसके अन्य उपयोग क्या हैं?
- शब्द का महत्वपूर्ण संचार उपयोग क्या है?
-वचन में यह पहली बार कैसे उपयोग किया गया है?

3-पता लगाएं कि खण्ड के संदर्भ प्रसंग में शब्द को कैसे उपयोग किया गया है?:-

यह तात्कालिक जांच है। संदर्भ प्रसंग यह जानने के लिए कि लेखक का वास्तविक अर्थ क्या था महत्वपूर्ण स्रोत है। इसके लिए ये प्रश्न पूछें-

-क्या शब्द के अर्थ का कोई संकेत संदर्भ प्रसंग देता है?
-क्या संदर्भ में तुलना करने पर यह शब्द अन्य शब्दों के साथ विरोधी बात बताता है?
-क्या संदर्भ के विश्लेषण में शब्द के अर्थ का स्पष्टीकरण है?

8-लागूकरण लिखें।:-

शब्द अध्ययन करते समय मन में मात्र अर्थ निकालने का लक्ष्य न हो। बल्कि विशेष रुप से लागूकरण के उद्देश्य को सावधानीपूर्वक रखें। याद रखें कि आप व्यक्तिगत बाइबल अध्ययन कर रहे हैं, यह बौद्धिक अभ्यास मात्र नहीं है। पूर्ण अर्थ प्राप्त कर लेना शब्द अध्ययन का अन्त नहीं है। क्योंकि बिना लागूकरण के शब्द अध्ययन थोड़ा ही महत्व रखता है। अध्ययन करते समय स्वयं से पूछें, 'हमारे आत्मिक जीवन को मजबूत बनाने के लिए इस शब्द की समझ कैसे हमारी सहायता कर सकती है?' इसलिए लागूकरण लिखें। अध्ययन में उपयोग की गयी स्रोत पुस्तकों की सूची बना लें। यह स्रोत पुस्तकें भविष्य में उपयोगी होंगी इन्हें अंतिम खाने में लिख लें।

Creation Autonomous Academy

शब्द अध्ययन विधि चार्ट

1-हिन्दी शब्दः- पश्चाताप

2-हिन्दी परिभाषाः- भूतकाल की बातों से क्षमा, अपने मन में बदलाव

3-अनुवादों की तुलनाः- लूका 13:3

‘पश्चाताप (मन फिराना)’-इन्डिया बाइबल पब्लिसर्स

‘अपने पापों से फिरना’

‘शैतानी रास्तों को छोड़कर परमेश्वर की ओर मुड़ना’

4-मूल शब्द और संक्षिप्त परिभाषाः-

-मेटानोइयो (यूनानी) ‘मन का एक बदलाव’

-मेटामेलोमाई (यूनानी) ‘लौटाना’

5-सही शब्द की जांच (बाइबल में):-

नये नियम में दो भिन्न यूनानी शब्दों का अनुवाद है ‘मन फिराना’

अ-Metanoeo (मेटानोइओ)

मन फिराना (क्रिया)-34 बार

5 बार मत्ती में

2 बार मरकुस में

9 बार लूका में

5 बार प्रेरितों के काम में

1 बार 2 कुरिन्थियों में

12 बार प्रकाशित वाक्य में

पश्चाताप (संज्ञा)-24 बार

3 बार मत्ती में

2 बार मरकुस में

5 बार लूका में

6 बार प्रेरितों के काम में

1 बार रोमियों में

2 बार 2 कुरिन्थियों में

1 बार 2 तीमुथियुस में

3 बार इब्रानियों में

1 बार पतरस में

Creation Autonomous Academy

ब-Metamelomai (मेटामेलोमाई)

मन फिराना (क्रिया)-6 बार

3 बार मत्ती में

2 बार 2 कुरिन्थियों में

1 बार इब्रानियों में

-रुचिप्रद बातें-

-यह शब्द यूहन्ना रचित सुसमाचार में नहीं उपयोग किया गया है। लेकिन प्रकाशित वाक्य में 12 बार उपयोग किया गया है।

-लेखक लूका ने प्रमुख रुप से उपयोग किया है। (लूका रचित सुसमाचार एवं प्रेरितों के काम)

-पश्चाताप पत्रियों में नहीं उपयोग किया गया है क्योंकि यह विश्वासियों के लिए लिखी गयीं हैं।

6-मूल अर्थः-

Metanoeo मेटानोएओ का अर्थ है 'मन का बदलाव' नये नियम में सभी जगह यह बदलाव हृदय और जीवन का पूर्ण परिवर्तन है। मात्र पाप से फिरना (नकारात्मक) ही नहीं बल्कि लौटना (सकारात्मक) सही और ईश्वरीय है। यह गलती के लिए क्षमा मांगने की अपेक्षा अधिक अर्थपूर्ण है। इसका यह भी अर्थ है कि पाप के प्रति आपका पूर्ण मन परिवर्तन हो और अब एक भिन्न रास्ते पर चलें।

Metamelomai मेटामेलोमाई का अर्थ है 'भूतकाल के कार्य के लिए दर्द, परन्तु वास्तविक मन परिवर्तन नहीं। उदाहरण के लिए यहूदा इस्किरियोती मत्ती 27:3

7-कैसे शब्द उपयोग किया गया थाः-

अ-अन्य लेखों में :-

Metanoeo परम्परागत यूनानी साहित्य में इसका अधिक उपयोग नहीं हुआ था। जब यह शब्द उपयोग किया गया इसका अर्थ एक मनुष्य के जीवन में 'गंभीर बदलाव' नहीं था। जैसा कि नया नियम में उपयोग किया गया है।

ब-बाइबल में :-

-'पश्चाताप' यूहन्ना बपतिस्मादाता के संदेश का आधार था। (मत्ती 3:2), यीशु (मत्ती 4:17), 12 शिष्य (मर० 6:12), पेन्तिकुस्त पर पतरस (प्रेरितों० 2:38)

-यह प्रत्येक के लिए परमेश्वर की आज्ञा है। (प्रेरितों० 17:30, 2 पत० 3:9)

-यह बचाने वाले विश्वास का भय है। (लूका 13:5, प्रेरितों० 3:19)

-यह स्वर्ग में आनन्द देता है। (लूका 15:7,10)

-यह हमारे क्रिया द्वारा है। (प्रेरितों० 26:20)

Creation Autonomous Academy

-प्रभु यीशु ने इस शब्द का 17 बार सुसमाचार में और 8 बार प्रकाशित वाक्य में उपयोग किया है।

-पश्चाताप का परिणाम क्या है?

- -परमेश्वर की अच्छाई हमारे साथ है। (रोमि० 2:4)
- -ईश्वरीय क्षमा हमारे पाप के लिए। (2 कुरि० 7:9-10)
- -परमेश्वर का अनुग्रह (2 तीमु० 2:25)

-यह मसीही जीवन का एक बुनियादी सत्य है। (इब्रा० 6:1)

स-खण्डः 2 कुरि० 7:9-10 के संदर्भ में

यह पद वास्तविक पश्चाताप और लौटना के बीच भिन्नता दिखाता है। वास्तविक ईश्वरीय स्वभाव आवश्यक पश्चाताप लाता है। यह लौटना मात्र नहीं है बल्कि यह जीवन में बदलाव लाता है।

8-लागूकरणः-

'क्या तू उसकी कृपा, सहनशीलता और धैर्य रुपी धन को तुच्छ जानता है, और नहीं जानता कि परमेश्वर की कृपा तुझे मन परिवर्तन की ओर ले जाती है?' (रोमि० 2:4)

पाप का अंगीकार/ व्यवहार में बदलावः

मैं राम के प्रति अपने मन में व्यक्तिगत रुप से घृणा रखता हूं। मैं जानता हूं कि मैं पाप में हूं। इस पाप से मैं अभी पश्चाताप करना चाहता हूं। कल दोपहर को मैं राम से मुलाकात करके क्षमा मांगूगा।

उपयोग की गयी सामग्री-

नया नियम का शब्दकोष

शब्दानुक्रमाणिका

नया नियम के धर्मविज्ञान का शब्दकोष

Creation Autonomous Academy

अध्याय- 16

पुस्तक की पृष्ठभूमि अध्ययन विधि

बाइबल की पुस्तक की पृष्ठभूमि कैसे खोजें?:-

जब अभिनेता और पृष्ठभूमि अपने स्थान में होते हैं तो एक अभिनय को समझना अधिक आसान होता है। अभिनेता अपनी पृष्ठभूमि के विपरीत मंच पर दृश्य में अभिनय करते हैं। यही वचन के साथ भी सत्य है। परमेश्वर का प्रकाशन इतिहास के मध्य दिया गया। लेकिन लोग अपनी पृष्ठभूमि के विपरीत परमेश्वर द्वारा दी गयी भूमिका पर उस समय कार्य किए। जब हम अपनी पृष्ठभूमि की अपेक्षा खण्ड की पृष्ठभूमि को देखते हैं, जिन दिनों में यह खण्ड लिखा गया था। तब परमेश्वर के वचन को अधिक स्पष्टता से समझते हैं।

परिभाषा:-

पुस्तक की पृष्ठभूमि अध्ययन विधि एक बाइबल संदेश की अच्छी समझ प्रदान करती है। इसमें खण्ड से सम्बन्धित व्यक्ति, घटना, अथवा विषय की पृष्ठभूमि का अध्ययन करते हैं। यह विधि जब बाइबल का विशेष भाग लिखा गया उसकी भौगोलिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक वातावरण एवं घटनाओं की समझ प्रदान करती है।

पृष्ठभूमि का अध्ययन क्यों?:-

बाइबल का लेखक क्या कह रहा है? इसका पूर्ण प्रभाव जानने के लिए यह आवश्यक है कि अपने आपको उस समय में पीछे ले जाएं। जिस समय में लेखक था। हम वचन के लेखक से शताब्दियों आगे हैं। हम उसके संसार को उसकी आंखों द्वारा देखने का प्रयास करें। अनुभव करें कि वहां क्या था? तब समझें कैसे परमेश्वर का पवित्र आत्मा उन्हें लिखने के लिए उपयोग किया।

अर्थानुवाद का एक प्राथमिक नियम है कि बाइबल एक ऐतिहासिक काल में लिखी गयी। यह उस इतिहास के प्रकाश में ही पूर्ण रुप से समझी जा सकती है। जिस समय बाइबल लिखी गयी उस समय के प्रभाव को नकार कर आप बाइबल का सही अर्थानुवाद नहीं कर सकते हैं। एक गम्भीर बाइबल विद्यार्थी जिस खण्ड अथवा पुस्तक का अध्ययन कर रहा है उसकी भौगोलिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक सभी पृष्ठभूमि को जानना चाहेगा।

आज हमारे लिए संदेश को कैसे लागू करना है? यह समझने के पहले हम यह जानें कि जब खण्ड पहली बार लिखा गया उस समय इसे कैसे लागू किया गया? यदि हम पृष्ठभूमि को जाने बिना वचन का अर्थ निकालने का प्रयास करते हैं एवं वचन को अपने समय और संस्कृति के अनुसार लागू करते हैं। तब हम शीघ्र ही कई कठिनाइयों का सामना करेंगे।

Creation Autonomous Academy

खण्ड के समय के कथन, शब्द, परम्पराओं अथवा घटनाओं से हमारे समय की परम्पराएं, घटनाएं, शब्द व कथन भिन्न होते हैं। जिससे अर्थ निकालने में पृष्ठभूमि के बिना कठिनाई का सामना करना पड़ता है।

बीती शताब्दी की पुरातत्व खोज में बाइबल के समय की भौगोलिक, ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक पृष्ठभूमि की अच्छी समझ हमें प्राप्त होती है। सर्वोत्कृष्ट खोज द्वारा यह महत्वपूर्ण सूचनाएं आपके लिए उपलब्ध हैं।

आर्कियोलोजी (पुरातत्व विज्ञान) का मूल्य:-

कुछ आर्कियोलोजी सूखी, निराशाजनक और कम जानकारी वाली हैं। परन्तु कई गुणवत्तापूर्ण आर्कियोलोजी भी हैं। आधी शताब्दी पहले जो मसीहियों ने किया उसकी अपेक्षा आज हम बाइबल के बारे में अधिक जानते हैं।

जी० डब्ल० वान वीक लिखते हैं,‘बाइबल के इतिहास और संस्कृति को जाने बिना कोई भी बाइबल को नहीं समझ सकता है। बिना आर्कियोलोजी के योगदान को समझे कोई भी बाइबल के इतिहास और संस्कृति को जानने का दावा नहीं कर सकता है। सत्य की खोज के द्वारा बाइबल का ज्ञान प्रकाशित हुआ है’

आवश्यक सामग्रीः-

निम्नलिखित सामग्री सहायक पृष्ठभूमि सामग्री उपलब्ध करायेगी।-

-बाइबल शब्दकोष

-बाइबल हैण्डबुक

-बाइबल एटलस

- आर्कियोलोजी -पुराना एवं नया नियम

-बाइबल के समय में प्रतिदिन का जीवन

-इनसाइक्लोपीडिया

-ऐतिहासिक भूगोल

पुस्तक की पृष्ठभूमि अध्ययन विधि के कदमः-

निम्नलिखित कदम हैं।-

1-बाइबल की पुस्तक को चुनें।ः-

बाइबल के विषय, व्यक्ति, शब्द अथवा पुस्तक को चुनें, जिसका आप अध्ययन करना चाहते हैं। जो खोज आप करना चाहते हैं उसके लिए उद्धरण सामग्री इकट्ठा करना आरम्भ करें। उद्धरण सामग्री आपके अध्ययन में बड़ा भाग होगी।

2-अपने उद्धरण सामग्री की सूची बनाएं।ः-

इस अध्ययन को करने के लिए जो उद्धरण सामग्री आपने इकट्ठा किया है सभी की सूची बनाएं। यह आपको याद रखने में सहायक होगी कि कौन सी उद्धरण सामग्री पुस्तक की पृष्ठभूमि के लिए उपयोगी है। किन पुस्तकों को भविष्य में अध्ययन के लिए उपयोग किया जा सकता है।

Creation Autonomous Academy

3-भौगोलिक परिस्थिति को देखें।ः-

आवश्यक है कि आप पलिस्तीन और पूर्वी भाग के भौगोलक स्थिति के साथ एकरुप हों। वहां विभिन्न प्रकार की भूमि, प्रमुख पर्वत, पहाड़ियां, झरने, समुद्र, झील, नदियां, शहरों और देशों की स्थिति, प्रसिद्ध चिन्हों की स्थिति, शहरों की सीमाएं पायी जाती हैं। जिस समय का आप अध्ययन कर रहे हैं उसकी भौगोलिक पृष्ठभूमि पायी जाती है।

यदि आप पौलुस की मिशनरी यात्रा का अध्ययन कर रहे हैं। तब रोमी साम्राज्य के दिनों में सक्रिय भूमध्य सागर के देशों और शहरों को देखना आवश्यक होगा।

बाइबल की भौगोलिक स्थिति का अध्ययन करते समय आवश्यक है कि निरन्तर इस प्रश्न को पूछें।, ‘जिसका हम अध्ययन कर रहे हैं भौगोलिक स्थिति पर क्या प्रभाव डालती है?’

जिस पुस्तक अथवा विषय का आप अध्ययन कर रहे हैं उसकी हर सम्भव भौगोलिक स्थिति को देखें।

4-इतिहास को देखें।:-

पुराने नियम के इस्राएल राष्ट्र के इतिहास का ज्ञान आपके पास है। इब्रानी राष्ट्र के ऐतिहासिक काल को देखें। मूल इतिहास का पता लगाएं प्रसिद्ध नगरों को देखें। प्रभु यीशु की सेवा के भागों को देखें। पौलुस की मिशनरी यात्रा के चारों तरफ का इतिहास देखें। यह भी देखना सहायक होगा कि जिस समय का आप अध्ययन कर रहे हैं, उस समय विभिन्न भागों में क्या क्या प्रमुख घटनाएं घट रही थीं। इस समय संसार में परमेश्वर क्या कर रहा था?

आप स्वयं से पूछें कि,'यह घटना उस समय के लोगों पर क्या प्रभाव डाल रही थी? जिस खण्ड का हम अध्ययन कर रहे हैं यह उसे कैसे प्रभावित करती है?

वे विशेष घटनाएं जो इतिहास के विकास में प्रभु के संप्रभु नियंत्रण की व्याख्या करती हैं।

जिस पुस्तक अथवा विषय का आप अध्ययन कर रहे हैं उसके ऐतिहासिक स्थिति के विषय में जो कुछ प्राप्त कर सकते हैं सभी की सूची बना लें।

5-संस्कृति की खोज करें।:-

बाइबल में क्या है? यदि आप इसे समझना चाहते हैं तब आवश्यक है कि वचन के व्यक्तियों के सम्पूर्ण जीवन शैली के विषय में सीखें। यहां कुछ क्षेत्र हैं जिनको आप स्वयं से प्रश्न पूछकर खोज सकते हैं। कैसे सभी चीजें सन्देश और उन लोगों को प्रभावित कर रही हैं। जिनका हम अध्ययन कर रहे हैं।

-लोगों का पहिनावाः कपड़े
-बाइबल के समय के व्यवसाय व ट्रेड
-बाइबल में संगीत
-पूरब की निर्माण शैली
-वचन की परम्पराएंः आयात-निर्यात
-उस समय के पुनर्निर्माण
-मध्य पूर्व में पारिवारिक जीवन
-बाइबल में कला
-देशों के चारों तरफ भाषाएं और साहित्य
-इस्राएल व पड़ोसियों में धार्मिक कार्यक्रम
-क्षेत्र के झूठे धर्म
-लोगों द्वारा उपयोग किए गए हथियार-औजार

सांस्कृतिक जीवन की सभी बातों की सूची बनाएं।

Creation Autonomous Academy

6-राजनैतिक वातावरण की खोज करें।:-

पुराने नियम में इस्राएल में क्या हुआ? प्रभु यीशु, पौलुस, प्रेरितों के समय में रामी साम्राज्य का राजनैतिक वातावरण कैसा था? राजा, राज्यपाल, हाकिम और सरकार उस समय के लोगों पर कैसे शासन किया? उदाहरण के लिए इस्राएल के इतिहास का अधिकांश समय विदेशी नियम और बंधुवाई में व्यतीत हुआ। यह अन्य राष्ट्र एवं उनकी राजनीतिक व्यवस्था थी। जिसने परमेश्वर के लोगों के जीवन को प्रभावित किया। परमेश्वर सभी जगह की राजनैतिक परिस्थितियों को नियंत्रित करता है। उन्हें यह ज्ञान प्राप्त हुआ। यहां तक कि राजा नबूकदनेस्सर ने भी यह सत्य जाना। (दानि० 4:34-35)

मिस्र, पलिस्तीन, असीरिया, बाबुल, फारस, यूनान और रोम इन सबने बाइबल में प्रमुख भूमिका निभाया है। ये राष्ट्र क्या चाहते हैं? कैसे वे इस्राएल को प्रभावित करते हैं? अथवा कैसे नये नियम की कलीसियाओं को प्रभावित करते हैं? कई भविष्द्धक्ताओं के सन्देश तात्कालिक राजनैतिक वातावरण के प्रकाश में ही समझे जा सकते हैं।

जिस समय का आप अध्ययन कर रहे हैं उसके विषय में राजनैतिक स्थिति की अपनी खोज की सभी चीजों को सूचीबद्ध करें।

7-अपने खोज को व्यवस्थित करें।:-

अब पीछे जाएं, जहां कदम 3 से 6 में आपने सामग्री एकत्र किया है। निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर देकर अपनी खोज को व्यवस्थित करें।

-जो मैं अध्ययन कर रहा हूं उसको समझने में पृष्ठभूमि की सूचना कैसे सहायक है?

-जिस पुस्तक अथवा विषय का मैं अध्ययन कर रहा हूं इनमें से कोई भी तथ्य उसे कैसे प्रभावित करता है?

8-व्यक्तिगत लागूकरण लिखें।:-

इस प्रकार के अध्ययन में व्यक्तिगत लागूकरण पाना कठिन है। लागूकरण आप उस मूल विषय में पा सकते हैं जिसका आप अध्ययन कर रहे हैं। अपने विषय की पृष्ठभूमि में खोजें। आज जिस लागूकरण की आपको आवश्यकता है उसे पाने में यह सहायता करेगा।

Creation Autonomous Academy

पुस्तक की पृष्ठभूमि अध्ययन विधि -चार्ट

1-विषयः- इफिसुस (इफिसियों की पुस्तक)

2-उद्धरण सामग्रीः-

बाइबल शब्दकोष
बाइबल इनसाइक्लोपीडिया

3-भौगोलिक पृष्ठभूमिः-

यह नगर (शहर) कैस्टर नदी के मुहाने पर एशिया माइनर के पूर्वी भाग में स्थित था। एशियन समुद्र के अन्त में चार में से पूर्व पश्चिम घाटियों में से एक है। यह उस प्रमुख रास्ते के आरम्भ पर है जो एशिया माइनर से सीरिया को जाता है। और तब मेसोपोटामिया, फारस और भारत।

इफिसुस एक बड़ा शहर था। प्रेरित पौलुस के समय उसकी जनसंख्या लगभग ४ लाख थी। एशिया के रोमी साम्राज्य में यह एक महत्वपूर्ण शहर था। यह राजनीतिक स्थिति, भूमि और समुद्री व्यापार के लिए उस समय के संसार के दिनों में मिलन बिन्दु था।

4-ऐतिहासिक पृष्ठभूमिः-

इफिसुस एक महत्वपूर्ण शहर था। यह महत्वपूर्ण पोर्ट शहर के नाम से हित्तयों के दिनों में जाना जाता था। (1300 ईसा पूर्व)

1080 ईसा पूर्व के आस-पास यूनानियों ने लेकर इसे उपनिवेश बनाया। इस पर एशियन समुद्र और यूनानी शैली का प्रभाव पड़ा। पांच शताब्दी बाद यह राजा कोइसुस द्वारा लिया गया। जिसने एशियाई प्रभाव में शहर को पुनः स्थापित किया।

पारसियों ने इफिसुस को 557 ईसा पूर्व में लिया और दो शताब्दी के विरोध के साथ यूनानियों ने लिया। सिकन्दर महान ने शहर पर 335 ईसा पूर्व में कब्जा किया। इस शहर पर यूनानी प्रभाव रोमी साम्राज्य के समय तक बना रहा।

रोमियों ने शहर को 190 ईसा पूर्व में लिया। पौलुस और उसके दिनों में यह रोमी हाथों में चला गया। एशिया में यह रामी साम्राज्य का प्रमुख शहर था।

Creation Autonomous Academy

5-सांस्कृतिक पृष्ठभूमिः-

जब यूनानी लोगों ने 1080 ईसा पूर्व में शहर को लिया। तब एशियन और यूनानी जीवन शैली के बीच विरोधाभाष हुआ। मूल धर्म में मातृ देवी की आराधना होती थी। जिसे बाद में यूनानियों ने अरतिमिस (रोमी साम्राज्य में डाइना) कहकर पुकारा। यूनानियों ने बाद में देवी का महान मन्दिर बनाया। जो सम्पूर्ण मध्य संसार भर में जाना गया।

यूरोप के पार जाने वाले रास्ते पर यह शहर अन्तरराष्ट्रीय शहर के रुप में उभरा। जैसे कई पृष्ठभूमियों वाले लोग, विशेष रुप से व्यापारी और खरीददार स्वतन्त्रता पूर्वक मिले-जुले। यह यूनानी संस्कृति में एक व्यापार केन्द्रित शहर था। एशियन उसी समय में आए। यह अत्याधुनिक एक रोमी शहर के लिए आने -जाने हेतु सरल था। यह जिमनासिज्म, स्टेडियम, कला व केन्द्रीय बाजार के रुप में प्रसिद्ध था।

6-राजनैतिक पृष्ठभूमिः-

पौलुस के दिनों में यह शहर रोम के प्रति स्वामिभक्त था। यह रोमी प्रोकन्सुल पिरगमुन द्वारा शासित था। इसलिए उसके पास अपनी सरकार थी। यह ट्राइब्स में बंटी थी। पौलुस के समय में यहां 6 ट्राइब्स और उनके प्रतिनिधि थे। जो टाऊन कलर्क द्वारा चुने जाते थे। वे जनता की बैठक के लिए जिम्मेदार थे। दूसरे सरकारी अधिकारी एसीअचर्स, रोम के नगर अधिकारी, नेयोकोरोस और मंदिर के अधिकारी थे।

7-खोज की भूमिकाः-

इफिसुस महत्वपूर्ण शहर था। इसके राजनीतिक मूल्य के कारण दूसरी मिशनरी यात्रा के समय में पौलुस और उसकी टीम वहां पहुंचे। पौलुस बाद में तीसरी मिशनरी यात्रा के समय में कुछ समय तक वहां सेवा किया।

मिली-जुली जनसंख्या के कारण यहां कई प्रकार के लोगों के बीच सेवा का अवसर था। रोमी, यूनानी और एशिया के उस भाग के एशियन सभी के बीच सेवा का अवसर था।

यात्रियों और व्यापारियों के बीच भी सेवा की जा सकती थी। जो भूमि और समुद्र दोनों मार्ग से आते थे।

इसका इतिहास और भूगोल इसे रणनीतिक बना दिया। दूसरे स्थानों पर कलीसियाओं की स्थापना और सुसमाचार प्रचार-प्रसार के लिए यह माध्यम बना।

8-व्यक्तिगत लागूकरणः-

बढ़ती जनसंख्या के इन दिनों में संसार के रणनीतिक स्थानों में प्रभु यीशु की गवाही देना मेरी जिम्मेदारी है। इसका अर्थ है अपने शहर में पता लगाने की आवश्यकता है कि कहां राजनीतिक केन्द्र है। जहां लोग इकट्ठा होते हैं। तब परमेश्वर के अनुग्रह और उद्धार को बताने के लिए मैं स्वयं अपनी कलीसिया के साथ वहां जाने की योजना बनाऊंगा। मैं इसके बारे में राम और श्याम से बात करुंगा। अपने समुदाय को सुसमाचार सुनाने के लिए हम साथ मिलकर योजना बनाएंगे।

Creation Autonomous Academy

अध्याय-17
पुस्तक सर्वेक्षण अध्ययन विधि

बाइबल की एक पुस्तक का सारांश कैसे प्राप्त करेंगे?:-

सम्पूर्ण **बाइबल** का अध्ययन	शब्द
सम्पूर्ण **पुस्तक** का अध्ययन	
एक पुस्तक के एक **अध्याय** का अध्ययन	खण्ड वाक्य
खण्ड और वाक्य का अध्ययन	अध्याय
एक **शब्द** का अध्ययन	पुस्तक
	बाइबल

सबसे पहले सम्पूर्ण पुस्तक का अध्ययन करें। तब उसके भागों को सावधानी से जांचें, अन्त में अध्ययन को एक साथ रखकर पुनः सम्पूर्ण को देखें। इसलिए हम सर्वे, विश्लेषण और बनावट का उपयोग कर रहे हैं।

पहले पूरी पुस्तक का सर्वे करें। जब अध्याय-अध्याय का सर्वेक्षण कर लेते हैं। पुस्तक का विस्तृत विश्लेषण करें एवं सभी विवरण को देखें। अन्त में सब कुछ एक साथ रखकर बनावट का अध्ययन करें। पुस्तक की भूमिका बनाएं एवं स्वयं की रुपरेखा तैयार करें।

-सर्वेः पुस्तक का दृष्टिकोण पाने हेतु एक चिड़िया की आंख।

-विश्लेषणः अध्याय में प्रत्येक चीज का विस्तार से अध्ययन करें।

-बनावटः सब कुछ पुनः एक साथ रखें और निष्कर्ष निकालें।

अध्ययन के इस क्रम में हम सबसे पहले पुस्तक सर्वे को देखेंगे।

Creation Autonomous Academy

परिभाषाः-

पुस्तक सर्वे अध्ययन, बाइबल की पूरी पुस्तक का वाह्य दृष्टि प्रदान करता है। यह एक पुस्तक का सूक्ष्म दृष्टिकोण लेता है। विस्तृत की चिन्ता किए बिना एवं बिना रुके निरन्तर अध्ययन द्वारा यह किया जाता है। तब आप पूछ सकते हैं पृष्ठभूमि की धारा एवं संदर्भ के प्रश्नों को और लेखक के उद्देश्य, विषय वाक्य, बनावट व सन्दर्भ की सामान्य समझ प्राप्त करते हुए एक संदर्भ चार्ट बना सकते हैं।

यह अध्ययन विधि क्यों?:-

बाइबल भिन्न-भिन्न पुस्तकों को संग्रह करके एक पुस्तक के रुप में बनायी गयी है। इनमें से प्रत्येक पुस्तक अनोखी है। आज हमारे लिए एक महत्वपूर्ण संदेश देती है। एक पुस्तक का सामान्य संदर्भ पाने के लिए पुस्तक सर्वे एक व्यवहारिक रास्ता है।

पुस्तक सर्वेक्षण विधि का महत्वः-

एक पुस्तक का सर्वे विश्लेषण का पहला भाग है। पुस्तक की बनावट बताती है कि कैसे एक भाग दूसरे भाग से सम्बन्धित है। पुस्तक के विस्तृत संदर्भ द्वारा कठिन पदों को स्पष्टता से समझा जा सकता है। पुस्तक में जिस स्थान पर एक पद है उसे समझने की कुंजी प्रदान करता है। परमेश्वर इसके द्वारा शिक्षा देता है।

एक पुस्तक के सर्वे से पुस्तक के प्रत्येक विन्दु का प्रकाशन प्राप्त होता है। यह सुनने एवं पुस्तक के किसी विन्दु को संक्षिप्त करने में परमेश्वर के वचन के अध्ययन को संतुलित करता है। झूठी शिक्षा तब आती है, जब कोई संदर्भ के बाहर जाकर पद की व्याख्या करता है।

आवश्यक सामग्रीः-

आवश्यक सामग्री निम्नलिखित है।-
-अध्ययन बाइबल
-भिन्न-भिन्न अनुवाद
-बाइबल शब्दकोष/ इनसाइक्लोपीडिया
-बाइबल हैण्डबुक

अतिरिक्त सामग्रीः-

-बाइबल एटलस
-ऐतिहासिक भूगोल
-ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की पुस्तक
-बाइबल सर्वे
अतिरिक्त पुस्तकों को तब उपयोग करें, जब आपने स्वयं की खोज कर लिया है।

Creation Autonomous Academy

पुस्तक सर्वेक्षण अध्ययन विधि के कदम।:-

1-पुस्तक को पढ़ें।:-

कुछ लोग बाइबल के विषय में लिखी पुस्तकों को पढ़ने में अपना समय व्यतीत करते हैं इसकी अपेक्षा कि वे वचन के खण्ड को पढ़ें। आपको जिस सामग्री की आवश्यकता है वह है अध्ययन बाइबल और विभिन्न अनुवाद। कोई भी बाइबल सर्वे, टीका, हैण्डबुक न पढ़ें। इन सात सुझावों का अनुसरण करें।

1-पूरी पुस्तक को एक बार में पढ़ें।

2-नये अनुवाद से पुस्तक को पढ़ें।

3-अध्याय के विभाजन पर ध्यान दिए बिना पुस्तक को तेजी से पढ़ें।

4-दोहराते हुए पुस्तक को पढ़ें।

5-किसी नोट्स अथवा टीका के बिना पुस्तक को पढ़ें।

6-पुस्तक को प्रार्थना पूर्वक पढ़ें।

7-हाथ में पेन या पेन्सिल के साथ पुस्तक को पढ़ें।

2-जो आपने पढ़ा उस पर नोट्स बनाएं।ः-

जब आप पुस्तक को पढ़ रहे हैं तब प्रभावों और महत्वपूर्ण तथ्यों को जिनकी आपने खोज किया है उन्हें लिख लें। निम्नलिखित नौ बातों को देखें।-

1-श्रेणीः-

पुस्तक किस प्रकार का साहित्य है? यह इतिहास, कविता, भविष्यद्वाणी, व्यवस्था, जीवनी या एक पत्र है?

2-प्रथम प्रभावः-

क्या प्रथम प्रभाव है? जो आपने पुस्तक से पाया। क्या आप सोचते हैं कि यह लेखक का उद्देश्य है? इसके पढ़ने से आपने क्या अनुभव प्राप्त किया?

3-कुंजी शब्दः-

लेखक द्वारा उपयोग किए गये विशेष शब्द क्या हैं? वे कौन-कौन से शब्द हैं जो बार-बार दुहराए गए हैं?

4-कुंजी पदः-

कुंजी पद क्या है? लेखक का कुंजी कथन क्या है?

5-साहित्य की शैलीः-

क्या पुस्तक विवरण, कहानी, ड्रामा, व्यक्तिगत पत्र, या कविता है? किस प्रकार का साहित्य है?

6-भावनात्मक तरीकाः-

क्या लेखक क्रोधित है? दुःखी है, खुश है, चिन्तित है, उत्साहित है? हताश है? जब लेखक के लेख को श्रोता सुनेंगे तो क्या परिणाम होगा? यह आपको कैसा अनुभव देता है?

7-मुख्य विषय वाक्यः-

विषय वाक्य पर आपका क्या विश्वास है? उसे लिखें। लेखक क्या कह रहा है? उसका मुख्य उद्देश्य क्या है?

8-पुस्तक की बनावटः-

क्या आप पुस्तक में विचारों का विभाजन देखते हैं? यह पुस्तक कैसे संगठित है? यह लोगों के चारों तरफ संगठित है? अथवा घटनाओं? स्थानों? विचारों या समय के चारों तरफ संगठित है?

Creation Autonomous Academy

9-प्रमुख लोगः-

पुस्तक का मुख्य व्यक्तित्व कौन है? इसमें कौन लोग प्रमुख रुप से शामिल हैं? वे पुस्तक में क्या कर रहे हैं?

3-पृष्ठभूमि का अध्ययन करें।ः-

पुस्तक की ऐतिहासिक, भौगोलिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक स्थिति का पता लगाएं। यह पुस्तक किस पृष्ठभूमि में लिखी गयी? पृष्ठभूमि को प्राप्त करने के लिए कुछ प्रश्नों का उपयोग कर सकते हैं। पुस्तक पृष्ठभूमि अध्ययन विधि का भी उपयोग कर सकते हैं। कुछ प्रश्नों के उत्तर पुस्तक में स्वयं मिल जाएंगे, इसलिए वहां पहले देख लें। जिन प्रश्नों का उत्तर नहीं मिलता उन्हें बाहर के उद्धरणों में खोजें।

-लेखक के विषय में सब कुछ सीखें। वह कौन है?

-पुस्तक कब लिखी गयी? दिनांक

-पुस्तक किसके लिए लिखी गयी? वे कौन थे? वह कौन था? वह कौन थी? इसके ऐतिहासिक एवं भौगोलिक पृष्ठभूमि का पता लगाएं।

-पुस्तक कहां लिखी गयी?

-पुस्तक क्यों लिखी गयी? लेख के उद्देश्य का पता लगाएं।

-पुस्तक में अन्य पृष्ठभूमि की क्या सूचनाएं हैं?

-बाइबल में इस पुस्तक का क्या स्थान है? क्या यह कई समयों के इतिहास के बीच एक पुल है?

-पुस्तक में किन भौगोलिक स्थितियों का वर्णन है? वे कहां हैं? एक मानचित्र बनाएं जो आपकी सहायता करेगा।

4-पुस्तक के संदर्भ का एक चार्ट बनाएं।ः-

पुस्तक के संदर्भ का एक रेखाचित्र बनाएं। यह आपको एक पुस्तक के सन्दर्भ का चित्र प्रदान करेगा। यह आपको पुस्तक का नया दृष्टिकोण प्रदान करेगा। चार्ट के तीन मुख्य भाग हैं।-

1-पुस्तक का प्रमुख विभाजन

2-अध्याय का शीर्षक

3-खण्ड का शीर्षक

इस चार्ट के अनेक लाभ हैं।-

-यह पुस्तक के संदर्भ और मुख्य विचार को व्यवस्थित करने में सहायता करता है।

Creation Autonomous Academy

-सम्पूर्ण पुस्तक के संदर्भ को देखने में सहायक है।

-यह खण्ड और अध्यायों के बीच के सम्बन्धों को खोजने में सहायता करता है।

-यह पुस्तक में दुहराए गए विचारों से आपको बचाता है।

-यह याद रखने में सहायक है। शीघ्र अध्याय के संदर्भ को याद दिला देता है।

-यह पुस्तक से विचार करने और याद रखने में सहायक है।

चार्ट बनाने के लिए तीन सामग्री की आवश्यकता है।-

1-खण्ड विभाजन वाली एक बाइबलः इससे आप विचारों की इकाई को देख सकते हैं।

2-सादा कागज-चार्ट पेपरः चार्ट को एक कागज पर बनाएं। जिससे कि पूरी पुस्तक को एक बार में देख सकें। जब आप लम्बी पुस्तक पर कार्य कर रहे हैं (यशायाह, उत्पत्ति, भजन आदि) तब जितना सम्भव हो कुछ पृष्ठ का उपयोग करने का प्रयास करें। जब आप एक से अधिक कागजों का उपयोग कर रहे हैं। तब सुनिश्चित करें कि कागज एक समान हों। जिससे कि उन्हें एक साथ रख सकें।

3-एक पेन्सिल, और एक स्केल व रबर।

चार्ट को कैसे बनाएं? प्रत्येक चार्ट को बनाते समय निम्नलिखित चार कदमों को अपनाएं।-

1-जिस पुस्तक का आप अध्ययन कर रहे हैं उसमें जितने अध्याय हैं एक सादे कागज पर उतने खाने (कालम) बनाएं।

2-पुस्तक को बार-बार पढ़ें और प्रत्येक अध्याय के शीर्षक पर विचार करें। (लम्बी पुस्तक में अध्यायों के समूंह पर) इनके प्रमुख विभाजनों को प्रत्येक खाने में सबसे ऊपर लिख लें।

कुछ सुझाव-

-एक शब्द का उपयोग करें। चार से अधिक शब्द न हों।
-चित्रात्मक शब्दों का उपयोग करें। जो संदर्भ देखने में सहायता करेंगे।
-खण्ड से सीधे लेकर शब्द का उपयोग करें। यदि सम्भव है।
-अन्य पुस्तकों में जो शीर्षक नहीं दिया गया है वैसे शब्दों का उपयोग करें।
-ऐसे शब्दों का उपयोग करें, जो बताएं कि पुस्तक में आप कहां पर हैं।

3-सम्पूर्ण पुस्तक को पुनः पढ़ें। पुस्तक के खण्डों को पुनः पढ़ें।

4-खण्ड के शीर्षकों को अध्याय के शीर्षक से मिलाने (सम्बन्धित करने) का प्रयास करें।

जब आप इस अभ्यास में विशिष्टता प्राप्त कर लें। तब अपने चार्ट में चीजों को जोड़ें जो आपके अध्ययन को व्यक्तिगत बनाएंगी।

5-पुस्तक की प्रस्तावित रुपरेखा बनाएं।:-

चार्ट बनाने के बाद, अब आप पुस्तक की प्रस्तावित रुपरेखा बनाने के लिए तैयार हैं। पुस्तक की बनावट के अनुसार विस्तार से रुपरेखा बना सकते हैं। सर्वेक्षण विधि में पुस्तक के उच्च बिन्दुओं और उनके एक दूसरे से सम्बन्धों को दिखा सकते हैं। यहां कुछ सुझाव हैं।-

1-रुपरेखा बनाने में चार्ट के विचारों को लें। पुस्तक के स्वाभाविक संगठन को लें। जो चार्ट में दिखाए गए हैं।

2-रुपरेखा बड़े से छोटे की तरफ बनाएं। पहले पुस्तक के बड़े भागों को देखें। तब उपविभागों को और अन्त में भागों के महत्वपूर्ण बिन्दुओं को देखें। लम्बी पुस्तक में आवश्यक है कि इनके अन्तर्गत उपबिन्दु बनाएं।

3-रुपरेखा में अपने खण्ड के भागों को संकेतों के लिए देखें। जैसे कि वे लेख के मूल इकाई के खण्ड में हैं। आप खण्ड के भागों को अध्याय की रुपरेखा बनाने में उपयोग कर सकते हैं। प्रत्येक खण्ड के संदर्भ को लिखें, तब कथन को बड़े बिन्दु के समान रुपरेखा में उपयोग करें।

Creation Autonomous Academy

4-रुपरेखा बनाने के बाद, अपनी अन्य रुपरेखाओं से इसकी तुलना करें। उद्धरण की पुस्तक में देखें और अन्य पुस्तक लेखकों के कार्य से अपने कार्य की तुलना करें। यदि आपकी रुपरेखा उनके समान नहीं है तो चिन्ता न करें। एक पुस्तक की कई तरीके से रुपरेखा हैं। यदि विद्वान एक दूसरे से असहमत हैं तो उसकी खोज करें।

6-व्यक्तिगत लागूकरणः-

पुस्तक सर्वे का मुख्य उद्देश्य है कि आप पुस्तक के सामान्य संदर्भ को प्राप्त कर लें। पुस्तक सर्वेक्षण करते समय आपने जो कुछ खोजा है। लागूकरण बनाते समय उसे याद रखें। अध्ययन से एक चीज चुनें जिससे परमेश्वर ने आपसे बातचीत किया। इस सत्य पर एक व्यक्तिगत, व्यवहारिक, सम्भव एवं मापने योग्य लागूकरण लिखें।

पुस्तक सर्वेक्षण विधि चार्ट कैसे बनाएं?ः-

पुस्तक का नाम लिखें। पुस्तक के संदर्भ के अध्यायों की संख्या लिखें। तब छः कदमों का उपयोग करें।-

1-पुस्तक से जितनी बार आपने पढ़ा है उसकी संख्या लिखें।

2-नोट्स बनाएं, पुस्तक में आपने क्या पढ़ा है? अध्याय में आपने क्या पढ़ा है?

3-पृष्ठभूमि की खोज को लिखें। जिसे आप समझते हैं कि यह पुस्तक को समझने में सहायता करेगी।

4-एक सादे कागज पर चार्ट बनाएं।

5-रुपरेखा में पुस्तक की भूमिका अथवा सामान्य दृष्टिकोण लिखें।

6-व्यक्तिगत लागूकरण लिखें।

Creation Autonomous Academy

पुस्तक सर्वेक्षण अध्ययन विधि चार्ट

पुस्तकः इफिसियों **अध्यायः** 6

1-पढ़ने की संख्याः 5

2-पुस्तक पर नोट्सः-

-श्रेणीः नये नियम का पत्र

-प्रथम प्रभावः यह एक पुस्तक है जिसने मेरे विश्वास को मजबूत किया और मेरी जिम्मेदारियों के लिए मुझे चुनौती दिया। मजबूत सैद्धान्तिक।

-कुंजी शब्दः 'प्रभु यीशु में' और 'चलना'

-कुंजी पदः 1:3 और 4:1

-साहित्यिक शैलीः एक सामान्य पत्र जो दो प्रार्थनाओं द्वारा नियमित किया गया है।

-भावनात्मक तरीकाः पाठकों को दावे के साथ शिक्षा और उनकी जिम्मेदारियों के लिए चुनौती।

-मुख्य विषय वाक्यः हम जो कुछ हैं प्रभु में हैं और जो जिम्मेदारियां हैं वे हमारी हैं।

-बनावट या ढांचाः यहां दो मुख्य अलग-अलग भाग हैं। पहले भाग में दो प्रार्थनाएं लिखी गयी हैं।

-प्रमुख लोगः पौलुस, इफिसियों की कलीसिया, दुष्ट शक्तियां और तीतुस।

उपयोग की गयीं पुस्तकें-

हैण्डबुक

नये नियम का शब्दकोष

3-पुस्तक की पृष्ठभूमिः-

पौलुस ने दूसरी मिशनरी यात्रा के समय इफिसुस में कलीसिया की स्थापना की। विश्वासियों के फालोअप के लिए अक्विला और प्रिसिल्ला को वहां छोड़ा। वहां उन्होंने अपुल्लोस के जीवन को प्रभावित किया।

अपनी तीसरी यात्रा के आरम्भ के पहले पौलुस लौटा और एक लम्बे समय तक शहर में सेवा किया। उस समय सम्पूर्ण एशिया में सुसमाचार फैला।

इसके बाद पौलुस रोम में कैद हो गया। जेल से उसने इस कलीसिया के लिए पत्र लिखा। इस समय में सैद्धान्तिक एवं व्यवहारिक रुप से कलीसिया को मजबूत करने का अवसर था। यह विश्वासियों को मजबूत करने के लिए लिखा गया था। उस कलीसिया में उनके दृष्टिकोण और जिम्मेदारियों को एक मसीही समुदाय में निभाने हेतु वे मजबूत हों।

Creation Autonomous Academy

4-पुस्तक के सन्दर्भ का चार्टः-

कौन कलीसिया के सदस्य हैं? 1:1-3:21			कलीसिया के सदस्य क्या करें? 4:1-6:24		
परमेश्वर द्वारा चुने गए	मसीह द्वारा बचाए गए	पवित्र आत्मा द्वारा सामर्थी	जिम्मेदारियां	सम्बन्ध	विरोधाभाष
1	2	3	4:1-5:21	5:22-6:9	6:10-20
त्रियेकता के कार्य को तीन ने अलग रखा। -पिता (1:4-6) -पुत्र (1:7-12) -पवित्र आत्मा (1:13-14)	मसीह का कार्य अनुग्रह के कार्य में देखा गया। जिसे हमने विश्वास द्वारा प्राप्त किया। -पुनर्जीवन (2:1-10) -मेलमिलाप (2:11-22) यहां प्रत्येक का परिणाम देखा गया।	पवित्र आत्मा की सेवा ने सभी पृष्ठभूमि के सभी विश्वासियों को मसीह में एक किया।	1- हमारे पास एकताबद्ध चाल है। (4:1-16) 2-हमारे पास समझ के साथ चाल है। (4:17-32) 3-हमारे पास पवित्र चाल है। (5:1-14) 4-हमारे पास पवित्र आत्मा की अगुवाई में चाल है। (5:15-21)	विशेषताएं दिया गया है।- 1-पति और पत्नी (5:22-23) 2-माता-पिता और बच्चे (6:1-4) 3-स्वामी और सेवक (6:5-9)	हमारी कठिनाइयों का कारण हमारी जिम्मेदारियां और हमारे सम्बन्ध के बीच हमारे आत्मिक मल्लयुद्ध हैं। लेकिन हमारे पास सुरक्षा के लिए परमेश्वर के हथियार हैं।
पौलुस की प्रथम प्रार्थना (1:15-23)		पौलुस की दूसरी प्रार्थना (3:14-21)			पौलुस का पत्र की समाप्ति पर तुखीकुस को अभिवादन (6:21-24)

Creation Autonomous Academy

5-पुस्तक की प्रस्तावित रुपरेखाः-

1-कौन कलीसिया के सदस्य हैं? (1-3)

क-वे परमेश्वर द्वारा चुने गए हैं। (1) (प्रार्थना के साथ अन्त)

ख-वे मसीह द्वारा बचाए गए हैं। (2)

ग-वे पवित्र आत्मा द्वारा सामर्थी बनाए गए हैं। (3) (प्रार्थना के साथ अन्त)

2-कलीसिया के सदस्य क्या करें? (4-6)

क-उनकी जिम्मेदारियां (4:1-5:21)

ख-तीन स्तरों पर उनके सम्बन्ध (5:22-6:9)

ग-शैतानी ताकत के साथ उनका विरोध (6:10-20)

उपसंहार (6:21-24)

6-व्यक्तिगत लागूकरणः-

इस पुस्तक ने हमें प्रभावित किया कि विश्वास और व्यवहार में निकटता का सम्बन्ध हो। यदि मैं मसीह पर विश्वास करता हूं, तब मैं मसीही व्यवहार करुं। क्योंकि परमेश्वर की तरफ से जो मैं हूं, मेरे सभी सम्बन्धों में कुछ क्रियाएं आवश्यक हैं।

क्योंकि मेरा औरों के साथ मेल-मिलाप हुआ है। (अध्याय 2) जैसे मसीह ने हमें क्षमा किया वैसे मैं दूसरों को क्षमा करुं। (4:32) मैं क्षमाशील नहीं हूं। मैं अपने हृदय को जाचूंगा। जिन्होंने मेरे साथ गलत व्यवहार किया है उन्हें वास्तविक रुप में क्षमा करुंगा। यदि आवश्यक हुआ तो क्षमा मांगने मैं उनके पास जाऊंगा। मैं याद करुंगा इफि० 4:32

Creation Autonomous Academy

अध्याय-18

अध्याय विश्लेषण अध्ययन विधि

बाइबल की एक पुस्तक के एक अध्याय का गहन अध्ययन कैसे करें?ः-

पुस्तक के प्रत्येक अध्याय का विश्लेषण करके अध्याय का गहन अध्ययन कर सकते हैं। सर्वेक्षण अध्ययन के द्वारा पुस्तक का एक अच्छा दृष्टिकोण आपने प्राप्त किया है। अध्याय के प्रत्येक अलग-अलग भाग की जांच करें। इस तरीके से अध्याय के प्रमुख भागों की जांच करें।

परिभाषाः-

अध्याय विश्लेषण प्रत्येक खण्ड, वाक्य व शब्द को विस्तार से एवं व्यवस्थित ढंग से सावधानी पूर्वक देखने के द्वारा, एक पुस्तक के एक अध्याय के सामग्री की समझ प्रदान करता है। इस विधि में तीन भाग हैं।-

1-अध्याय की भूमिका

2-एक-एक पद का विश्लेषण

3-अध्याय का निष्कर्ष

एक अध्याय का विश्लेषण क्यों करें?ः-

जब पुस्तक सर्वेक्षण पूरा कर लिया है। पुस्तक की बनावट का अध्ययन कर लिया है। तब अध्याय विश्लेषण यह समझ प्रदान करता है कि बाइबल कैसे एक पुस्तक के रुप में लिखी गयी। इस विधि में बाहर की सहायता का सीमित उपयोग है। यह आपको तैयार करता है कि आप स्वयं वचन से सीखें।

अध्याय विश्लेषण अध्ययन विधि के कदमः-

इस अध्ययन विधि में आप भूमिका से अध्ययन प्रारम्भ करेंगे, जो पहला कदम है। तब कदम दो से पांच तक एक -एक पद का विश्लेषण करेंगे। अन्त में छठवें और सातवें कदम में निष्कर्ष से समाप्त करेंगे।

1-अध्याय की भूमिका लिखें।ः-

Creation Autonomous Academy

अध्याय को पढ़ने, पुनः पढ़ने, कई बार पढ़ने के द्वारा इस कदम को आरम्भ कर सकते हैं। आप यहां अध्याय पर सामान्य खोज कर रहे हैं। कई बार अध्याय को पढ़ने के बाद सामान्य संदर्भ का पता लगाएं। इस समय आप जो कुछ देख रहे हैं उसका भावार्थ निकालने का प्रयास न करें। आपका उद्देश्य अध्याय के निकट जाना होना चाहिए। एक भूमिका को तीन प्रकार से लिख सकते हैं।-

1-इसे अपने शब्दों में लिखें।ः-

साधारण तरीका है कि इसे अपने शब्दों में लिखें। भूमिका ऐसी लिखें कि आप इसे दूसरों के लिए पढ़ सकें।

2-रुपरेखा बनाएं।:-

दूसरा तरीका है कि अध्याय के खण्ड विभाजन का अनुसरण करते हुए रुपरेखा बनाएं। प्रत्येक खण्ड का एक शीर्षक दें। तब प्रत्येक शीर्षक के अन्तर्गत कुछ उपबिन्दु रखें।

3-बिना परिवर्तित किए इसे पुनः लिखें।:-

अपनी भूमिका में विषय, क्रिया और उद्देश्य का उपयोग करें। यह भूमिका लिखने का अच्छा तरीका है कि पौलुस के लेखों को एक वाक्य में लिखें।

अध्याय की भूमिका पूर्ण करने के बाद, अध्याय का एक शीर्षक दें। पुस्तक सर्वे से शीर्षक का उपयोग कर सकते हैं। अथवा इस अध्ययन द्वारा नया शीर्षक दे सकते हैं।

2-अपने खोजों की सूची बनाएं।:-

अध्याय के एक-एक पद के विश्लेषण से यह कदम आरम्भ होता है। आप खोज की क्रिया के साथ आरम्भ कर सकते हैं। इस कदम में आप विस्तार से प्रत्येक वाक्य, शब्द जो आप देखते हैं लिख लें। आप इस प्रश्न का उत्तर देने का प्रयास कर रहे हैं, 'यह क्या कहता है?'

खण्ड अथवा पद का अर्थ निकालने से पहले देखें कि यह वास्तव में क्या कहता है? खोज का उद्देश्य है कि बाइबल खण्ड के संदर्भ को स्वयं पूर्ण रुप से सामने लाएं। दूसरे लेखकों को देखने से पहले स्वयं प्रयास करें।

बाइबल सत्य के कारण को देखना-क्यों?:-

बाइबल खण्ड को देखने के तीन कारण हैं।-

1-हम बाइबल खण्ड को देख रहे हैं इसलिए आवश्यक है कि धीरे-धीरे चलें तेज गति से न पढ़ें।

2-हम अपने खोजों को न लिखें।

3-हम शीघ्रता से न देखें।

हम एक खण्ड को सौ बार अध्ययन कर सकते हैं। परन्तु हो सकता है कि जो हमें पाना आवश्यक है वह न पाएं। इसलिए अच्छा है कि जब हम लम्बे खण्ड को देख रहे हैं तो तेज गति से न बढ़ें।

प्रश्न पूछना:-

एक अच्छे बाइबल अध्ययन का रहस्य है सही प्रश्नों को पूछकर सीखना। सीमित संख्या में प्रश्नों को पूछकर आप खण्ड का अध्ययन कर सकते हैं। जब आप निरन्तर बाइबल अध्ययन में बढ़ रहे हैं। तब कई प्रकार के कई प्रश्न पूछकर अध्ययन में उन्नति कर सकते हैं। आप अधिक से अधिक खोज कर सकते हैं। एक अच्छे खोज की कुंजी है धैर्य के साथ कई प्रश्नों को पूछना और प्रत्येक चीज जो आपने खोजा है उसे लिख लेना।

Creation Autonomous Academy

3-अर्थानुवाद हेतु प्रश्नों को पूछें।:-

खोज के बाद अब आप भावार्थ निकालने की तरफ जाने के लिए तैयार हैं। इस कदम में भावार्थ हेतु प्रश्न पूछना है। तब उनके उत्तर खोजने का प्रयास करना है। इस अभ्यास में आप बाइबल लेखक के उद्देश्य, सन्देश एवं उसके विचारों के भावार्थ को पा सकते हैं।

-लेखक ने यह क्यों कहा?

-इसका क्या अर्थ है?
-इसके आश्चर्य क्या हैं?
-इसका लागूकरण क्या है?
-यह क्यों महत्वपूर्ण है?

आप कई भावार्थ प्रश्नों को सोच सकते हैं। यह कभी न सोचें कि पूछने के लिए कोई प्रश्न खराब है। हो सकता है सभी प्रश्नों का उत्तर तुरन्त न पाएं। परन्तु सम्भव है कि दूसरे अध्याय का अध्ययन करते समय आपको उत्तर मिले। यदि अध्याय के अध्ययन के समय उत्तर मिलता है तो उसे लिख लें। जितना आप प्रश्न पूछेंगे उतना ही खण्ड को जान सकेंगे।

कठिनाइयों को देखना।ः-

जब आप खण्ड के अर्थ पर प्रश्नों को लिख रहे हैं। यह एक अच्छा विचार है कि खण्ड को समझने में जो कठिनाइयां आ रही हैं उन्हें लिख लें। दो सामान्य कठिनाइयां हैं।

क-व्यक्तिगत कठिनाइयांः-

जिन प्रश्नों का उत्तर आप भविष्य में देना चाहते हैं। अथवा वे चीजें जिनका आप भविष्य में अध्ययन करना चाहते हैं।

ख-सम्भव कठिनाइयांः-

वे समस्याएं व चीजें जिनको अभी अध्ययन करना अच्छा है।

खण्ड का सही अर्थ खोजनाः-

अर्थानुवाद के प्रश्नों की सूची बनाने के बाद, आप कुछ प्रश्नों के उत्तर खोजना आरम्भ कर सकते हैं। आप इसे कई तरीके से कर सकते हैं।

1-सन्दर्भ को देखें।ः-

खण्ड के पद में से अपने प्रश्नों के उत्तर खोजना आरम्भ कर सकते हैं। खण्ड का अर्थ संदर्भ के प्रकाश में निकालें। खण्ड का पुनः निरीक्षण करें। अपने खोज में पीछे जाकर अथवा पुस्तक सर्वे में जाकर इन प्रश्नों के उत्तर पा सकते हैं।

-कौन बोल रहा है?
-किससे बोला जा रहा है?
-यह कब बोला गया?
-यह कहां बोला गया?
-क्या समय है?
-संदेश का मुख्य विषय क्या है?
-क्या उद्देश्य प्रकट किया गया है?
-दूसरे कथन इस कथन के बारे में क्या स्पष्टीकरण देते हैं?

Creation Autonomous Academy

पद का संदर्भ देखते समय गलत अर्थ निकालने से बचें।

2-उपयोग किए गए शब्दों को परिभाषित करें।:-

खण्ड का भावार्थ शब्दों के सही अर्थ के साथ और सही तरीके से करें। महत्वपूर्ण शब्दों को बाइबल शब्दकोष में देखें।

3-वाक्यों की बनावट और व्याकरण का अध्ययन करें।:-

एक वाक्य के अध्ययन में भावार्थ निकालते समय कभी-कभी एक समस्या आती है कि लेखक ने क्या व्याकरण उपयोग किया है।

4-खण्ड के अनुवादों को एक दूसरे से तुलना करें।:-

विभिन्न अनुवादों में विशेष शब्द व खण्ड के बीच क्या सम्बन्ध है। इनका उपयोग कैसे किया गया है। यह देखने के लिए विभिन्न अनुवादों का उपयोग करें।

5-खण्ड की पृष्ठभूमि का अध्ययन करें।:-

पुस्तक के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक, आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं तात्कालिक घटनाओं की पृष्ठभूमि के प्रकाश में खण्ड का भावार्थ निकालें। अध्याय विश्लेषण के पहले पुस्तक सर्वेक्षण इसे आपको दिखा देगा। उद्धरण सामग्री का उपयोग करते हुए पृष्ठभूमि, लेखक के लिखने का उद्देश्य एवं सत्यों को देखें।

6-खण्ड को वचन के अन्य खण्डों से तुलना करें।:-

वचन का वचन से तुलना करने पर आपको भावार्थ के प्रश्नों का उत्तर प्राप्त होगा।

7-अन्त में टीका देखें।:-

स्वयं से खण्ड के भावार्थ की खोज करने के बाद, बाइबल के विद्वानों के कार्य टीका को देखें। टीका का एक अपना स्थान है, परन्तु यह तब आता है जब आपने स्वयं अपना कार्य पूरा कर लिया है। अपने भावार्थ को टीका में मिलाकर देखें कि क्या वह आपसे सहमत है। यदि कोई भी सहमत नहीं है तो आपने गलत भावार्थ प्राप्त किया है।

Creation Autonomous Academy

4-अपने अध्याय को अन्य वचनों से सम्बन्धित करें।:-

इस कदम में क्रास रिफरेन्स प्राप्त होता है। जो अध्याय के खण्ड के अर्थ की व्याख्या करने में सहायता करता है। यह इस सिद्धांत पर आधारित है कि, ‘बाइबल अपना अनुवाद स्वयं करती है। वचन अच्छी तरह से वचन की व्याख्या करता है।’ यदि आपने जो अर्थ निकाला है दूसरे खण्ड वैसा स्पष्टीकरण नहीं करते तो स्वयं से पूछें, ‘दूसरे वचन कैसे इससे सम्बन्धित हैं और वे कैसे इसकी व्याख्या करते है?’

क्रास रिफरेन्स के कदम-

1-क्रास रिफरेन्स के लिए उसी पुस्तक में देखें जिसमें आप अध्ययन कर रहे हैं। यह आन्तरिक सम्बन्ध है।

2-लेख के कथन की तुलना दूसरे समान लेख के साथ करें। यह वाह्य सम्बन्ध है।

3-उसी नियम की दूसरी पुस्तकों के साथ तुलना करें।

4-सम्पूर्ण बाइबल के रिफरेन्स से तुलना करें।

आप क्रास रिफरेन्स अध्ययन बाइबल, रिफरेन्स बाइबल एवं शब्दानुक्रमाणिका में पाएंगे।

क्रास रिफरेन्स के प्रकारः-

विभिन्न प्रकार के क्रास रिफरेन्स हैं। कुछ निम्नलिखित हैं।-

-शुद्ध क्रास रिफरेन्सः इसे कभी-कभी समानान्तर क्रास रिफरेन्स भी कहा जाता है। क्योंकि यह वही करता है जिस पद का आप विश्लेषण कर रहे हैं।

-उदाहरण क्रास रिफरेन्सः यह क्रास रिफरेन्स वास्तविक घटना के इतिहास में वैसे ही उदाहरण होता है, जैसे कि जिस पद का आप अध्ययन कर रहे हैं वह कह रहा है।

-विरोधी क्रास रिफरेन्सः आपका पद जो कह रहा है यह क्रास रिफरेन्स ठीक उसका उलटा कहता है। यह विरोधाभाषी लगता है लेकिन वास्तव में विषय को भिन्न दृष्टिकोण प्रदान करता है।

क्रास रिफरेन्स देखते समय सावधानी वरतें। जिस पद को क्रास रिफरेन्स के रुप में चुन रहे हैं उसे उसके संदर्भ में देखें। अन्यथा जो लेखक नहीं कह रहा है वह आप बनाएंगे।

5-कुछ सम्भव लागूकरणों की सूची बनाएं।ः-

अध्याय विश्लेषण का अन्तिम भाग है कि कुछ सम्भव लागूकरण लिखें। अध्ययन का उद्देश्य मात्र अर्थ निकालना नहीं बल्कि लागूकरण है। एक अध्याय में कई लागूकरण होते हैं। आप यहां मात्र उनकी सूची बनाएं। बाद में सातवें कदम में इस सप्ताह एक लागूकरण लिखने का चुनाव करें। एक सप्ताह में एक से अधिक लागूकरण पर कार्य नहीं कर सकते हैं। अच्छा होगा कि एक लागूकरण लिखें और उसे अपने जीवन में लागू करें। यदि आपने कई लागूकरण लिखा है तब जीवन में लागू करना कठिन होगा। आप किसी को भी लागू नहीं कर पाएंगे।

6-निष्कर्ष के कुछ विचारों को लिखें।ः-

पिछले पांचों कदमों का पुनः अवलोकन करें। अध्याय पर कुछ निष्कर्ष के विचार लिखें। यह अतिरिक्त खोजों को जोड़ेगा, जिसे बाद में लोग अध्ययन करेंगे। अन्य विचार जो आपके मस्तिष्क में आएं उन्हें लिखें।

7-व्यक्तिगत लागूकरण लिखें।ः-

Creation Autonomous Academy

पांचवें कदम से सम्भव लागूकरणों में से एक को चुनें जिस पर इस सप्ताह कार्य करेंगे। आपका लागूकरण व्यक्तिगत, व्यवहारिक, सम्भव एवं मापने योग्य हो।

अध्याय विश्लेषण अध्ययन विधि चार्ट

अध्यायः इफिसियों 1 अध्याय

अध्याय का शीर्षकः 'हमारे जीवन के लिए परमेश्वर के महान उद्देश्य।'

1-अध्याय की भूमिकाः

परिचय (1:1-2)

1-परमेश्वर के महान उद्देश्य का प्रकाशन (1:3-14)

- क-भूमिका कथन -उसने हमें क्या दिया। (1:3)
- ख-हमारे उद्धार का आधार (पिता परमेश्वर का कार्य) (1:4-6)
  - 1-पवित्र और निर्दोष होने के लिए चुने गये। (1:4)
  - 2-उसके पुत्र के समान गोद लिए गये। (1:5)
  - 3-अनुग्रह मुफ्त में हमें दिया गया। (1:6)
- ग-हमारे उद्धार के लाभ (पुत्र परमेश्वर का कार्य) (1:7-12)
  - 1-उसने हमारे लिए स्वयं का बलिदान दिया। (1:7)
  - 2-उसने हमारे लिए अनुग्रह दिया। (1:8)
  - 3-उसने अपनी आज्ञा हमारे लिए प्रकाशित किया।(1:9-10)
  - 4-उसने अपने उत्सव में हमें भागीदार बनाया। (1:11-12)
- घ-हमारे उद्धार का पूर्ण होना (पवित्र आत्मा परमेश्वर का कार्य) (1:13-14)
  - 1-उसने हमारे लिए मसीह को प्रकाशित किया। (1:13)
  - 2-उसने परमेश्वर के बच्चों जैसे हम पर मुहर लगाया। (1:13)
  - 3-वह हमारे उत्सव का बयाना है। (1:14)

2-परमेश्वर से प्रार्थना का प्रतिउत्तर (1:15-23)

Creation Autonomous Academy

- क-प्रार्थना की बुनियाद (1:15-17)
  - 1-विश्वासयोग्य और प्रेमी विश्वासियों के लिए। (1:15)
  - 2-विश्वासयोग्य और प्रेमी परमेश्वर के लिए। (1:16-17)
- ख-प्रार्थना के सूत्र (1:17-20)
  - 1-बुद्धि के लिए प्रार्थना (1:17)
  - 2-प्रकाशन के लिए प्रार्थना (1:18)
  - 3-अनुभवी ज्ञान के लिए प्रार्थना (1:18-20)
- ग-प्रार्थना का अन्त (1:20-23)
  - उत्तर------

1-मसीह का पुनरुत्थान (1:20)
2-मसीह का सब जगह वास (1:21)
3-मसीह की सब जगह सर्वोच्चता (1:22)
4-सम्पूर्ण कलीसिया में मसीह की प्रभुता (1:23)

2-खोज		**3-अर्थानुवाद**		**4-सम्बन्ध**		**5-लागूकरण**
यह क्या कहता है?		इसका क्या अर्थ है?		दूसरी जगह इसकी कहां व्याख्या है		इसके विषय में मैं क्या सीखूंगा?
इफि० 1:3	परमेश्वर ने हमें प्रत्येक आशीषों से आशीषित किया।	पद 3	परमेश्वर ने हमारे संसार के बारे में सोचा।	पद 3	1 पत० 1:3 2पत० 1:4	परमेश्वर ने जो हमारे लिए किया उसके लिए परमेश्वर का धन्यवाद।
4	परमेश्वर ने मुझे पवित्र जीवन जीने के लिए चुना।	4	मैं परमेश्वर व उसकी आज्ञाओं के प्रति आज्ञाकारी रहूंगा।	4	रोमि० 8:29 निर्ग० 20:1-17	मैं निश्चित रुप से एक पवित्र जीवन की अगुवाई में हूं।
5	परमेश्वर ने हमें अपने परिवार में गोद लिया है।	5	इसका अर्थ है कि मैं वहां सर्वदा रहूंगा।	5	गल० 4:5 फिलि० 2:13	मुझे परमेश्वर के परिवार की तरह से कार्य करने की आवश्यकता है।
7	मैं मसीह में क्षमा किया गया हूं।	7	मसीह मात्र एक है जो पाप क्षमा कर सकता है।	7	मर० 10:45 रोमि० 3:23	क्षमा के लिए मैं परमेश्वर का अवश्य धन्यवाद करुंगा।
9	परमेश्वर ने प्रभु यीशु मसीह द्वारा हमारे लिए आज्ञा दिया है।	9	मसीह परमेश्वर के स्वयं का प्रकाशन है।	9	गल० 1:15 इफि० 3:9 इब्रा० 1:1-2	परमेश्वर की इच्छा जानने के लिए बाइबल अध्ययन आवश्यक है।
11	मैं परमेश्वर को सुनने के लिए मसीह में बनाया गया हूं।	11	मेरे पास सुनने के लिए सारे अवसर हैं।	11	रोमि० 8:16-17 प्रेरितों० 20:32	मैं परमेश्वर के महान उपकार के लिए उसका धन्यवाद कर सकता हूं।
13-14	मेरे उद्धार और स्वीकार किए जाने के लिए पवित्र आत्मा हमारा बयाना है।	13-14	परमेश्वर ने हमारे लिए महत्वपूर्ण बयाना दिया है।	13-14	यूहन्ना 3:23 इफि० 4:30 2 कुरि० 5:5	आवश्यक है कि मैं अपना जीवन पवित्र आत्मा के अनुसार व्यतीत करुं।
16	पौलुस ने इफिसियों के लिए	16	आवश्यक है कि मैं मसीही मित्रों के	16	फिलि० 1:3 रोमि० 1:8-10	आवश्यकता है कि मैं राम के लिए प्रार्थना करुं।

Creation Autonomous Academy

	प्रार्थना किया।		लिए प्रार्थना करुं।			
18	पौलुस ने दूसरों के लिए प्रार्थना किया।	18	आवश्यक है कि मैं दूसरों के लिए प्रार्थना करुँ कि वे परमेश्वर की इच्छा को जानें।	18	प्रेरितो० 26:18	आवश्यकता है कि मैं श्याम के लिए प्रार्थना करुं कि वह परमेश्वर की इच्छा को जाने।

6-उपसंहार (निष्कर्ष):-

यह अध्ययन दिखाता है कि परमेश्वर ने अपने लोगों को क्या दिया। उसने प्रत्येक आत्मिक आशीषों से आशीषित किया। कई आशीषों की सूची है जो त्रियेक परमेश्वर में उद्धार का कार्य है। यह वह है जो त्रियेक परमेश्वर ने हमारे लिए पूरा किया। वचन को पढ़ने से यह समझ प्राप्त होती है कि परमेश्वर अपने लोगों के लिए क्या सोचता है।

इस महान प्रकाशन का सही प्रतिउत्तर हो सकता है स्तुति और धन्यवाद की प्रार्थना। जो पौलुस ने अध्याय के अन्त में किया है।

7-व्यक्तिगत लागूकरण:-

आवश्यक है कि पौलुस की तरह मैं भी प्रार्थना की आत्मा विकसित करुं। परमेश्वर ने हमारे लिए जो कुछ किया उसने उसके लिए प्रार्थना की। आवश्यक है कि मैं परमेश्वर के कार्य पर मनन करुं और स्तुति प्रार्थना द्वारा उसका प्रतिउत्तर दूं।

मैं परमेश्वर की महिमा और उसके द्वारा हमारे लिए किए गए कार्य के लिए धन्यवाद की प्रार्थना करुंगा।

Creation Autonomous Academy

अध्याय- 19

पुस्तक की संरचना (बनावट) अध्ययन विधि

बाइबल की एक सम्पूर्ण पुस्तक को कैसे एक साथ रख सकते हैं?ः-

बाइबल की एक पुस्तक के अध्ययन को पुस्तक सर्वेक्षण के साथ आरम्भ करेंगे। जो सम्पूर्ण पुस्तक की जांच करेगा और तब एक सम्भावित रुपरेखा पुस्तक की मिलेगी। तब हम सावधानी पूर्वक एक-एक अध्याय लेकर पुस्तक की जांच करेंगे। प्रत्येक अध्याय के प्रत्येक पद का विश्लेषण करेंगे। तत्पश्चात बाइबल की एक पुस्तक के अध्ययन का भाग आएगा।

परिभाषाः-

पुस्तक की संरचना अध्ययन विधि पुस्तक को कई बार पढ़ने, प्रत्येक अध्याय का अध्ययन एवं विश्लेषण करने के आधार पर भूमिका और संदर्भ की खोज करते हुए, एक पुस्तक को सम्पूर्ण इकाई में अध्ययन करती है।

पुस्तक संरचना अध्ययन विधि क्यों?ः-

यह बाइबल की एक पुस्तक के गहन अध्ययन का स्वाभाविक निष्कर्ष देती है। इसके पहले कि इसके भागों का विस्तार से अध्ययन करें, यह विधि पिछली दो विधियों को मिलाकर पूरी पुस्तक का एक बार पुनः अध्ययन कराती है। आप पुस्तक को एक साथ रखकर पुस्तक के सही दृष्टिकोण से सभी विस्तार को देख सकते हैं। पुस्तक को पढ़ें, पुस्तक की रुपरेखा बनाएं, शीर्षक खोजें, उपसंहार लिखते हुए व्यक्तिगत लागूकरण लिखें।

आवश्यक सामग्रीः-

-अध्ययन बाइबल
-भिन्न-भिन्न अनुवाद
-बाइबल शब्दकोष/ इनसाइक्लोपीडिया
-बाइबल हैण्डबुक
-बाइबल एटलस
-ऐतिहासिक भूगोल
-ऐतिहासिक पृष्ठभूमि की पुस्तक
-बाइबल सर्वे

Creation Autonomous Academy

पुस्तक संरचना अध्ययन विधि के कदमः-

इस विधि के निम्नलिखित छः कदम हैं।-

1-पुस्तक को बार-बार पढ़ें।ः-

पुस्तक को कई बार पढ़ें। एक बार पढ़ें, नये अनुवाद में पढ़ें, शीघ्रता से पढ़ें, दोहराते हुए पढ़ें, प्रार्थना पूर्वक पढ़ें, बिना रुके पढ़ें, बिना टीका में देखे पढ़ें। पढ़ते समय आपके हाथ में एक पेन अथवा पेन्सिल हो।

2-एक विस्तृत अंतिम रुपरेखा निकालें।:-

पुस्तक सर्वेक्षण की रुपरेखा के होरीजेन्टल चार्ट की तुलना अध्याय विश्लेषण की भूमिका के साथ करें। तुलना एवं पुनः अध्ययन के पश्चात पुस्तक की एक विस्तृत अंतिम रुपरेखा लिखें।

3-पुस्तक का शीर्षक लिखें।:-

पुस्तक सर्वेक्षण होरीजेन्टल चार्ट एवं विस्तृत अंतिम रुपरेखा के अध्ययन के आधार पर पुस्तक का एक शीर्षक लिखें। मूल शीर्षक पर विचार करें जो कुछ शब्दों में बना है उस सब के बारे में पुस्तक में क्या है। अध्याय के शीर्षक से मिलाएं और तब उसकी बनावट का अध्ययन करें।

4-एक भूमिका बनाएं।:-

अपने प्रत्येक अध्याय विश्लेषण के निष्कर्ष के विचारों को पुनः देखें और तुलना करें। पुस्तक के प्रमुख विषय वाक्य व निष्कर्ष के विषय में आप क्या विश्वास करते हैं। टीकाओं को न देखें क्योंकि यह परमेश्वर के वचन का आपका स्वयं का अध्ययन है। अध्ययन में नयी खोज प्राप्त करना सम्मिलित है।

5-व्यक्तिगत लागूकरण लिखें।:-

पुस्तक सर्वेक्षण एवं अध्याय विश्लेषण में जो सम्भव लागूकरणों की सूची आपने बनाया है उन सभी लागूकरणों को पुनः देखें। उनमें से एक लागूकरण लिख लें।

6-अपने अध्ययन के परिणाम को दूसरों को बताएं।:-

बाइबल अध्ययन मात्र आपकी आत्मा के लिए भोजन और परमेश्वर के वचन की समझ बढ़ाने के लिए नहीं है। बाइबल अध्ययन के परिणाम को लागूकरण सहित आवश्यक है कि दूसरों को बताएं। आप इसे दो तरीके से कर सकते हैं।-

1-प्रत्येक स्थिति में अपनी गवाही दें।:-

जब आप अपने चेलों (तिमुथी) के साथ एकत्र होते हैं। आप उन्हें बताएं कि आपने बाइबल अध्ययन से क्या सीखा? किस लागूकरण पर आप कार्य कर रहे हैं? कैसे यह उनके अपने अध्ययन के लिए लाभदायक है? जितना अधिक आप दूसरों को बताएंगे उतना अधिक आप स्वयं सीखेंगे।

Creation Autonomous Academy

2-अपने बाइबल अध्ययन समूह में बांटें।:-

जब आप समूह में अध्ययन के लिए एकत्र होते हैं तब शिक्षा और लागूकरण को बांटें। इस तरह से आप बाइबल अध्ययन में एक दूसरे को मजबूत बनाएंगे।

पुस्तक की संरचना अध्ययन विधि चार्ट

पुस्तकः इफिसियो **अध्यायः** 6

1-कितनी बार पढ़ाः 5

2-विस्तृत अंतिम रुपरेखाः-
प्रस्तावना (१:१-२)

1-लेखक (1:1)
2-प्राप्तकर्ता (1:1)
3-समाधान (1:2)

1-कलीसिया के लिए परमेश्वर की योजना (1:3-3:21)

(परमेश्वर की तरफ हम कौन हैं।)

अ-कलीसिया का चुनाव (1:3-23)

1-परमेश्वर के उद्देश्य का प्रकाशन (1:3-14)

क-भूमिका कथन (1:3)
ख-हमारे उद्धार का आधार-परमेश्वर पिता का कार्य (1:4-6)
ग-हमारे उद्धार के लाभ-परमेश्वर पुत्र का कार्य (1:7-12)
घ-हमारे उद्धार का कार्य पूर्ण होना-परमेश्वर पवित्र आत्मा का कार्य (1:13-14)

2-परमेश्वर से प्रार्थना का प्रतिउत्तर (1:15-23)

Creation Autonomous Academy

ब-कलीसिया का उद्धार (2:1-22)

1-पुनः सृष्टि में मसीह का कार्य (2:1-10)

क-हम क्या थे? (2:1-3)
ख-उसने क्या किया? (2:4-9)
ग-उसने हमें क्या बनाया? (2:10)

2-मेल-मिलाप में मसीह का कार्य (2:11-22)

क-हम क्या थे? (2:11-12)
ख-उसने क्या किया? (2:13-18)
ग-उसने हमें क्या बनाया? (2:19-22)

स-कलीसिया का रहस्य (3:1-21)

1-महिमा का प्रकाशन (3:1-13)

क-सभी बचाए हुए लोग एक साथ सुनेंगे। (3:1-6)

ख-प्रत्येक को प्रचार करने की आवश्यकता है। (3:7-13)

2-परमेश्वर से प्रार्थना का प्रतिउत्तर (3:14-21)

क-दूसरों के लिए प्रार्थना कि वे यह जानें। (3:14-19)

ख-मसीह की महिमा होती रहे। (3:20-21)

2-कलीसिया का संचालन (4:1-6:20)

(परमेश्वर के प्रति हमारी क्या जिम्मेदारियां हैं।)

अ-कलीसिया की जिम्मेदारियां (4:1-5:21)

1-एकताबद्ध चाल चलें। (4:1-16)

2-समझदारी से चलें। (4:17-32)

3-निःस्वार्थ चाल चलें। (5:1-4)

4-बुद्धिमानों के सदृश चलें। (5:5-21)

ब-कलीसिया में आपसी सम्बन्ध (5:21-6:9)

1-वैवाहिक सम्बन्ध (5:21-33)

2-पारिवारिक सम्बन्ध (6:1-4)

3-व्यवसायिक सम्बन्ध (6:5-9)

स-कलीसिया के स्रोत (6:10-20)

1-प्रभु की सामर्थ्य में बलवान बनों। (6:10)

2-परमेश्वर के अस्त्र-शस्त्र धारण करो। (6:11-12)

3-अस्त्र-शस्त्र (6:13-17)

4-निरन्तर प्रार्थना करते रहो। (6:18)

5-राजदूत (6:19-20)

Creation Autonomous Academy

उपसंहार (निष्कर्ष) (६:२१-२४)

1-संदेशवाहक (6:21-22)

2-अभिवादन (6:23-24)

3-शीर्षकः 'परमेश्वर की योजना को जानें व उसके अनुसार जीवन जिएं।'

4-भूमिकाः-

क-उद्धार का लेखक परमेश्वर है। उसने आरम्भ में ही यह योजना बनाया। यह उसकी योजना है इसलिए वह कार्य करता है।

ख-प्रभु यीशु ने हमें हमारे पापों से छुड़ाकर परमेश्वर से व एक दूसरे से मिलाया। कोई दूसरा रास्ता नहीं है। पृष्ठभूमि, धर्म, संस्कृति की चिन्ता न करें। मसीह द्वारा हम एक दूसरे को स्वीकार कर सकते हैं और मेल-मिलाप कर सकते हैं।

ग-पवित्र आत्मा हमारे अन्दर वास करता है। वह हमें समझ प्रदान करता है कि हम मसीह में क्या हैं। वह हमारे उद्धार का बयाना है जिससे कि हम अपना जीवन परमेश्वर के तरीके से जिएं।

घ-हम परमेश्वर की सन्तान हैं। इसलिए हम पवित्र जीवन जिएं और उसके समान बनें। परमेश्वर ने हमारे लिए क्या किया 1-3 अध्याय में दिया गया है। हम क्या हैं अध्याय 4-6 में दिया गया है। हम जिम्मेदारियों को गम्भीरता से लें।

च-सभी लोगों के लिए परमेश्वर की योजना है कि वे सेवा कार्य में लगें। क्योंकि सभी को आत्मिक आशीषें दी गयी हैं। इसलिए दूसरों की सेवा करने , सुसमाचार सुनाने, लोगों की परमेश्वर की तरफ अगुवाई करने, उन्हें अनुशासित करने की प्रत्येक की जिम्मेदारी है।

छ-हमारे महत्वपूर्ण सम्बन्धों विवाह, परिवार और कार्य में परमेश्वर एक प्रकार के व्यवहार की आशा हमसे करता है। सभी सम्बन्धों में सावधानी पूर्वक जिम्मेदारियों को निभाएं। हमारे आधारभूत सम्बन्धों द्वारा हमारा विश्वास प्रकट हो।

ज-परमेश्वर की इच्छानुसार जीवन जीना स्वयं की सामर्थ्य से सम्भव नहीं है। इसलिए परमेश्वर के अनुसार जीवन जीने के लिए परमेश्वर ने हमें पवित्र आत्मा और अपने अस्त्र-शस्त्र दिए हैं। परमेश्वर के स्रोत अस्त्र-शस्त्र उतने ही अच्छे हैं जितनी कि आशीषें। विजयी जीवन जीने के लिए आवश्यक है कि हम सम्पूर्ण अस्त्र-शस्त्र धारण करें।

झ-परमेश्वर बताता है कि हमारे बारे में वह क्या सोचता है।

5-व्यक्तिगत लागूकरणः-

यह पुस्तक जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में हमारी जिम्मेदारियों को बताती है। मैं जान गया हूं कि परमेश्वर चाहता है कि मैं एक अच्छा कार्यकर्ता बनूं। उसकी आज्ञा का पालन करुं, और अपने आपको उसके लिए समर्पित करुं।

मैं एक अच्छा कार्यकर्ता नहीं हूं। इफि० 6:5-9 ने मुझे कायल किया कि मैं एक अच्छा सेवक बनूं। मैं दिल्ली बाइबल इन्स्टीट्यूट के अपने अधिकारी के लिए अच्छा सेवक बनूंगा। इस बात को मैं अपने व्यवहार से प्रदर्शित करुंगा।

मैं सहकर्मी फूलचन्द तिग्गा के साथ मिलकर प्रार्थना करुंगा कि हम दोनों अपने जीवन से अच्छे सेवक की गवाही रख सके।

6-लोग जिनके साथ इस अध्ययन को बताएंगे।ः-

-फूलचन्द तिग्गा, पूनम लामा, रामचरन सिंह।

-मेरे बाइबल अध्ययन समूह के लोग।

Creation Autonomous Academy

अध्याय- 20

एक -एक पद का विश्लेषण अध्ययन विधि

एक -एक पद करके बाइबल के एक खण्ड का अध्ययन कैसे करें?ः-

यह अध्ययन अध्याय विश्लेषण का विकल्प है। जहां आप व्यवस्थित रुप से खोज के सिद्धान्तों, अर्थानुवाद, सम्बन्ध, लागूकरण का उपयोग करते हैं। जब आपके पास गहन अध्ययन का समय नहीं है। तब खण्ड के एक-एक पद का विश्लेषण विधि उपयोगी है।

प्रत्येक पद के साथ पांच बातें करें।-

-पद को अपने व्यक्तिगत शब्दों में लिखें।

-कुछ प्रश्नों की सूची बनाएं और उनका उत्तर खोजकर लिखें।

-पद के लिए क्रास रिफरेन्स खोजें।

-खोज से आपने जो पाया है उसे लिख लें।

-एक व्यक्तिगत लागूकरण लिखें।

परिभाषाः-

एक -एक पद विश्लेषण विधि में शामिल है वचन से एक खण्ड का चुनाव, प्रश्न पूछकर विस्तार की जांच, क्रास रिफरेन्स खोजना, और पद को स्पष्ट लिखना। प्रत्येक पद का जिसका आप अध्ययन कर रहे हैं सम्भव, व्यक्तिगत, मापनेयोग्य लागूकरण लिखें।

एक -एक पद का विश्लेषण अध्ययन विधि क्यों?ः-

यह विधि दो भिन्न प्रकार से उपयोग की जाती है।-

1-यह अध्याय विश्लेषण के विकल्प के रुप में उपयोग की जाती है। जब आप एक अध्याय अथवा एक खण्ड पर व्यवस्थित रुप से कार्य करना चाहते हैं। यह उस समय उपयोगी है जब आपके पास सीमित समय है। एक बार में पूरे अध्याय का अध्ययन नहीं कर सकते हैं। इस विधि में एक खण्ड के कुछ पदों को चुनकर, निर्धारित समय में आप विश्लेषण कर सकते हैं।

2-यह अतिरिक्त विषय अध्ययन में उपयोग की जा सकती है। इसमें एक-एक पद के चार्ट को तुलनात्मक चार्ट के रुप में उपयोग कर सकते हैं।

Creation Autonomous Academy

यह विधि बिना उद्धरण सामग्री के उपयोग की जा सकती है। अथवा गहन अध्ययन में सामग्री उपयोग कर सकते हैं।

गहन अध्ययन के लिए आवश्यक सामग्री।ः-

1-अध्ययन बाइबल

2-शब्दानुक्रमाणिका

3-बाइबल शब्दकोष/ इनसाइक्लोपीडिया

4-शब्द अध्ययन

एक -एक पद विश्लेषण अध्ययन विधि के कदम।:-

1-पद को अपने शब्दों में लिखें।:-

पद को अपने शब्दों में लिखें। अन्य से विचार न लें बल्कि जिस पद को आप अपने शब्दों में लिख रहे हैं उसी में समय व्यतीत करें।

2-कुछ प्रश्नों की सूची बनाएं व उनके उत्तरों को खोजकर लिखें।:-

पद पर प्रश्नों की सूची बनाएं। उनके उत्तरों की खोज करें। जिन प्रश्नों के उत्तर आपने प्राप्त कर लिया है उन्हें लिख लें। पद पर अपनी खोज को लिख लें।

-प्र-प्रश्न

-उ-उत्तर

-ख-खोज

उक्त के द्वारा चिन्हित कर सकते हैं।

3-प्रत्येक पद के लिए क्रास रिफरेन्स खोजें।:-

जो पद आप अध्ययन कर रहे हैं उसके लिए अध्ययन बाइबल अथवा वचन की अपनी स्मरण शक्ति का उपयोग करके कुछ क्रास रिफरेन्स लिखें। (कम से कम एक) यदि आपके पास क्रास रिफरेन्स बाइबल नहीं है तो शब्दानुक्रमाणिका का उपयोग करें।

4-प्रत्येक पद से आपने जो पाया है उसे लिख लें।:-

शब्द, खण्ड, सन्दर्भ के द्वारा आपने पद से जो विचार प्राप्त किया है उसे लिख लें। यह विचारों की खोज है।

5-व्यक्तिगत लागूकरण लिखें।:-

आप कई पदों का अध्ययन कर रहे हैं। तब प्रत्येक पद के लिए लागूकरण नहीं निकाल पाएंगे। ऐसे में कुछ भक्ति के विचारों को लिखने का प्रयास करें। एक विचार को लें और उस पर कार्य करने की योजना बनाएं। एक लागूकरण लिखें जो सम्भव, व्यवहारिक, व्यक्तिगत और मापनेयोग्य हो।

Creation Autonomous Academy

एक -एक पद का विश्लेषण अध्ययन विधि चार्ट

पुस्तक या विषयः 1 तीमुथियुस 1:1-3

पद	अपने शब्दों में पद को लिखना	प्रश्न और उत्तर	क्रास रिफरेन्स	अन्दर (खोज)	लागूकरण
1 तीमु०1:1	पौलुस परमेश्वर की आज्ञा से मसीह का एक सन्त है। जिसने हमें बचाया और मसीह हमारी आशा है।	प्र०-प्रेरित शब्द का क्या अर्थ है? उ०-भेजा हुआ।	प्रेरित 2 कुरि० 1:1 उद्धारकर्ता लूका 1:47 तीतुस 1:3 मसीह हमारी आशा कुलु० 1:27	1-पौलुस का अर्थ है छोटा। 2-तीमुथियुस का अर्थ है परमेश्वर को महिमा देने वाला। 3-पौलुस तीमुथियुस को यह नहीं बताना चाहता था कि वह प्रेरित है।	मैं अपने को मसीह का राजदूत के समान देखने से आरम्भ करुंगा। जो सुसमाचार सुनाने व गवाही देने के लिए अधिकृत है।
1 तीमु० 1:2	तीमुथी मेरे बच्चे मसीही विश्वास में प्रेम,दया, शान्ति का दाता परमेश्वर और प्रभु यीशु हमारा आपका प्रभु है।	प्र०-क्या तीमुथी नाम का कोई विशेष अर्थ है? उ०-तिमुथी का अर्थ है परमेश्वर को महिमा देने वाला।	मेरे बच्चे 2 तीमु० 1:2 प्रभु यीशु 1 तीमु० 1:15	1-मसीह का अर्थ है परमेश्वर का अभिषिक्त। 2-यीशु का अर्थ है यहोवा ने बचाया।	मैं भी तीमुथियुस जैसा हूं।
1 तीमु० 1:3	मैं मकिदुनिया जाते समय तुझे इफिसुस में छोंड़ आया कि कुछ लोगों को सिखाए कि वे गैर मसीही सिद्धान्तों को न सिखाएं।	प्र०-इन लोगों द्वारा क्या सिद्धान्त सिखाए जा रहे थे? उ०-झूठी शिक्षा	झूठी शिक्षा 1 तीमु० 6:3 2 कुरि० 11:4	१-पौलुस कुरिन्थ में झूठी शिक्षा के साथ व्यवहार समझाते समय मसीहियों का विरोध करता है। २कुरि०११:४	मैं मसीही सिद्धान्तों को जानूंगा। जिससे मैं सत्य और झूंठी शिक्षा में भेद कर सकूं। यहोवा विटनेस और ब्रन्हम के बारे में समझने की आवश्यकता है।

Creation Autonomous Academy

अध्याय- 21
प्रेरक बाइबल अध्ययन विधि

अध्ययन कैसे करें?

वास्तविक अध्ययन को प्राप्त करने के लिए कुछ विशेष सुझाव निम्नलिखित हैं।-

1-अपने अध्ययन की योजना बनाएं।:-

आवश्यक है कि आप अपने अध्ययन की योजना बनाएं। एक बहुत अच्छी योजना है कि एक समय में एक पुस्तक का अध्ययन करें।

2-प्रार्थना करें।:-

परमेश्वर से प्रार्थना करें कि वह अपने पवित्र आत्मा के द्वारा आपको सिखाए।

3-पढ़ें।:-

यह अच्छा है कि पूरी पुस्तक को पढ़ें।

4-अवलोकन करें।:-

जब हम बाइबल पढ़ते हैं तो सावधानी पूर्वक खोजें।

1-खण्ड का साहित्यिक स्वरुप
2-दोहराए गए शब्द खण्ड
3-जोड़ने वाले या सम्बन्ध बताने वाले शब्द
4-समय बताने वाले शब्द
5-क्षेत्र या स्थान बताने वाले शब्द
6-विरोध और तुलना
7-अपरिचित शब्द
8-प्रत्येक वाक्य का महत्व
9- चित्रात्मक भाव
10- सिद्धान्त
11-अदभुत, जिनकी आशा न हो, अव्यवहारिक चीजें
12-सम्बन्धित बातें
13-व्याकरण के तत्व
14-विरामचिन्ह
15-भिन्नताएं और समानताएं

Creation Autonomous Academy

5-नोट्स बनाएं।:-

जो आपने खोज किया है उसे लिख लें।

6-मनन करें, विचार करें और विश्लेषण करें।:-

जब आप पर्याप्त समय तक खण्ड को पढ़ लेते हैं तो पर्याप्त खोज करें। उन खोजों को आप लिख लें। तब आप उन पर मनन कर सकते हैं। अर्थ के कई तथ्यों को प्राप्त करें।

1-आप इसके विषय में विचार कर सकते हैं।

2-आप लेख से जोड़ सकते हैं।

3-आप वातावरण के बारे में जान सकते हैं।

7-अर्थानुवाद के सिद्धान्तों का उपयोग करें।:-

आप भावार्थ निकालने के सिद्धान्तों का प्रयोग करें।

8-अपने स्वयं के जीवन और कलीसिया में खण्ड के अर्थ को लागू करें।:-

जो अर्थ या शिक्षा आपने वचन से प्राप्त किया है उसे अपने स्वयं के जीवन में व कलीसिया में लागू करें।

प्रेरक बाइबल अध्ययन

प्रेरक कारण अथवा प्रेरक का अर्थ है तथ्यों की एक संख्या लेना और उन तथ्यों से निष्कर्ष निकालना। यह प्रेरक के साथ अप्रेरक की तुलना करके अधिक सरलता से समझा जा सकता है।

प्रेरक का अर्थ है सबसे पहले अनेक तथ्यों की जांच करें और तब उन तथ्यों से भविष्य के लिए निष्कर्ष निकालें। अप्रेरक का अर्थ है एक विचार अथवा एक कथन के साथ आरम्भ और तब विभिन्न तथ्यों को खोजना, जो प्रमाणित करता है कि कथन अथवा विचार सत्य है। मेरिल सी० टेन्नी ने स्पष्टता से दो विरोधी प्रकार का अध्ययन किया: प्रेरक **खोज का नियम** है, अप्रेरक **प्रमाण का नियम** है।

प्रेरक बाइबल अध्ययन के तीन कदम।:-

प्रेरक बाइबल अध्ययन तीन कदमों की मांग करता है: अवलोकन, अर्थानुवाद और लागूकरण। इरविन जेनसेन ने प्रेरक बाइबल अध्ययन के तीन कदमों को इस प्रकार से प्रस्तुत किया है।-

Creation Autonomous Academy

बाइबल अध्ययन की प्रेरक विधि कार्यवाही के क्रम में वैज्ञानिक विधि है:

1-यह अवलोकन योग्य के साथ आरम्भ होती है-आप यहां क्या देखते हैं?

2-यह अर्थ बताने के साथ अनुसरण करती है- इसका क्या अर्थ है?

3-यह लागूकरण के लिए होता है- कैसे यह आपको प्रभावित करता है?

इन कदमों को निकटता से देखें, हम पाते हैं कि ये बाइबल अध्ययन के तीन मुख्य प्रश्नों के उत्तर देते हैं।

1-अवलोकन

हम क्या देखें? सत्य की जांच करना प्रेरक बाइबल अध्ययन की बुनियाद है। अवलोकन एक खण्ड में तथ्यों की जांच में साधारण से विशिष्ट की तरफ जाता है। अच्छे प्रेरक बाइबल अध्ययन की कुंजी अच्छा अवलोकन है। यदि इस कदम को सावधानी पूर्वक पूरा नहीं किया गया है तो सम्पूर्ण अध्ययन कमजोर होगा। हमारी रुचि इसमें है कि खण्ड क्या कहता है, न कि हम क्या सोचते हैं।

अवलोकन के तीन कदम।:-

अवलोकन की प्रक्रिया को अध्ययन के तीन कदमों में नियमानुसार विभाजित कर सकते हैं।

1-हम सम्पूर्ण को देखें।

2-उसको भागों में विभाजित करें।

3-अन्त में विस्तार को पुनः जांचें।

सम्पूर्ण का अवलोकन करना।:-

सम्पूर्ण के अवलोकन में सर्वप्रथम सावधानी से पढ़ना है। उसके सत्य के पन्नों में समय बिताना प्रभु यीशु के साथ हमारे सम्बन्ध को विकसित करेगा। यदि हम यह करते हैं, तब हम शान्त और केन्द्रित अध्ययन में समय व्यतीत कर रहे हैं। पढ़ने का यहां कोई विकल्प नहीं है।

संदर्भ को पूर्णतया पाने के लिए हम दोहराते हुए पढ़ें, पढ़ने में समय लगाएं क्योंकि खण्ड को पढ़ने में समय लगता है। हम विचार पूर्वक भी पढ़ें, जिन विचारों को हम पढ़ और अध्ययन कर रहे हैं उन पर ध्यान केन्द्रित करें। ध्यान केन्द्रित करने के लिए यह बहुत ही प्रभावशाली तरीका है। हम सही तरीके से भी पढ़ें, परमेश्वर के साथ संगति में समय बिताएं। इरविंग जेनसेन ने अपनी पुस्तक में लिखा है, अपनी बाइबल में आनन्द लें:

कहां एक बाइबल पढ़ने का समय पाएंगे?
फालतू समय बहुत सारे मसीहियों को चाहिए वह कहीं नहीं मिलता है।
इसलिए हम बाइबल पढ़ने में समय बिताएं,
यदि सम्भव है तो प्रत्येक दिन का, नियमित समय का कार्यक्रम बनाएं,
किसी ने कहा है हमारे पास अपने बाइबल अध्ययन के लिए
एक समय है जो बदला नहीं जा सकता।

खण्ड को पढ़ना पूर्ण करने के बाद, हम अपने प्रभाव को नीचे करें। यह ऐसा बिन्दु है जहां हम प्रथम प्रभाव को बना रहे हैं और खण्ड के संदर्भ के लिए प्रतीक्षा कर रहे हैं। यह ऐसा है जैसे कि हम एक व्यक्ति से पहली बार मिल रहे हैं। जब हम बाहर जाकर अपने मन में व्यक्ति के अपने प्रथम प्रभाव को सुनना आरम्भ करते हैं,। हम उस व्यक्ति का अवलोकन कर रहे हैं। हमने पूर्ण चित्र नहीं प्राप्त किया है, लेकिन यह व्यक्ति को समझने का आरम्भ है। फिलि० 2:1-11 का उपयोग करते हुए अभ्यास करें।

बड़े तथ्य को लिखें।:-

एक बार जब हम अपने व्यक्तिगत प्रभाव को लिख लेते हैं, तब हम वापस जाकर और अधिक देख सकते हैं। अवलोकन को दूसरे शब्दों में कह सकते हैं खण्ड पर प्रश्नों का हमला। मुख्य प्रश्नों का उत्तर देने के द्वारा तथ्य को एकत्र

Creation Autonomous Academy

कर सकते हैं। चार जांचने वाले शब्द सूचीबद्ध हैं और इस भाग में उनकी व्याख्या की गयी है ये शब्द बाइबल अध्ययन के लिए बहुत महत्वपूर्ण हैं।

कौन? कौन बोल रहा है और कौन सुन रहे हैं? कौन चरित्र भाग ले रहे हैं, और हम उनके विषय में क्या सीख सकते हैं? हम खण्ड के सभी प्रमुख चरित्रों को चिन्हित कर सकते हैं।

क्या? क्या हो रहा है? क्या खण्ड घटना के बारे में है या विचार के बारे में है? क्या मुख्य विषय है और कौन से मुख्य शब्द हैं? खण्ड के कहने का तरीका क्या है? क्या यह आनन्द, दुःख, महिमा और पराजय को दिखाता है? क्या स्थान लेता है जो घटना लिखी गयी है इस खण्ड में उसके पहले अथवा बाद में जो उसे समझने में हमारी सहायता करेगा?

कहां? यदि खण्ड एक कहानी है तो क्रिया के क्षेत्र को लिखें। लेखक जब लिख रहा है वह कहां है और प्राप्त करने वाले कहां हैं? क्या वहां कुंजी भौगोलिक क्षेत्र की स्थिति है जिसे खण्ड की बनावट को हमें समझने के लिए एक मानचित्र पर चिन्हित करने की आवश्यकता है।

कब? ये घटनाएं कब हुईं? क्या समय के संकेत हैं? इस्राएल अथवा कलीसिया के इतिहास में क्या बिन्दु हैं जब यह घटना हो रही है? क्या लेखक के जीवन में अथवा प्राप्तकर्ताओं के जीवन में समय महत्वपूर्ण है?

भागों का अध्ययनः-

वचन का प्रत्येक भाग , जहां विचार अथवा घटना के साथ कार्य कर रहा है, संगठित है। यह संगठन विभागों अथवा भागों में बंटा हुआ है। अब हम देखेंगे कि कैसे लेखक ने इस प्रस्तुति को संगठित किया है? उसके विचार में क्या सैद्धान्तिक विकास है? ढांचा विचार अथवा क्रिया के सम्बन्ध को स्पष्ट करता है जो एक खण्ड अथवा एक पुस्तक के साथ है।

विस्तार का अवलोकनः-

अवलोकन में अंतिम कदम है विस्तार का अध्ययन करना। हम वचन के एक खण्ड में विस्तार को देखना आरम्भ करने के लिए अब तैयार हैं। अब हम यहां एक कुंजी शब्द अथवा एक रुचिकर चरित्र को लिखें। यह हमेशा क्रास रिफरेन्स को जांचने के लिए और शब्दानुक्रमाणिका में देखने के लिए फलदायी होता है। अवलोकन के इस कदम में हम निकटता से जांच करते हैं उन क्रियाओं का जो खण्ड को अर्थपूर्ण बनाते हैं।

अवलोकन के इस कदम के दौरान , उन विस्तारों को सामने लाते हैं जो खण्ड में हमारे मस्तिष्क में उठ खड़े होते हैं-विस्तार जो प्रश्न खड़ा करते हैं अथवा उनको पूर्ण रुप से समझने के लिए व्याख्या करने की आवश्यकता है। इसको दूसरे अवलोकन बाइबल अध्ययन के दौरान हम करेंगे।

Creation Autonomous Academy

खण्ड का अर्थानुवाद -अब हम छिपे प्रश्नों का उत्तर प्राप्त करेंगे। निम्नलिखित प्रश्नों की सूची एक खण्ड के विस्तार से सम्बन्धित है।

कौन? (चरित्र-पात्र)

-लेखक
-प्राप्तकर्त्ता
-क्रिया में सम्मिलित चरित्र-पात्र
-वे चरित्र-पात्र जो सीधे क्रिया में सम्मिलित नहीं हैं
-खण्ड में प्रस्तुत विशेष लोग

क्या? (मुख्य सत्य अथवा घटनाएं)

-मुख्य विचार
-धर्मवैज्ञानिक शर्तें
-मुख्य घटनाएं
-महत्वपूर्ण शब्द
-वक्तव्य के आंकड़े
-वातावरण

कहां? (भूगोल और क्षेत्र)

-लिखे गए स्थान
-भवन
-शहर
-राष्ट्र
-चिन्ह

कब? (समय के तथ्य)

-लिखने का दिनांक
-क्रिया का समय
-कलीसिया के किस काल में
-इस्राएल के जीवन के किस काल में
-भूत, वर्तमान अथवा भविष्य

2-अर्थानुवाद

इसका क्या अर्थ है? संदर्भ निकालना हमारे तथ्यों के अध्ययन पर आधारित है, इस प्रक्रिया को अर्थानुवाद कहा जाता है। इस स्तर पर लेखक के अर्थ को पता लगाते हैं जो उसने खण्ड में रखा है। यह लेखक के मूल अर्थ की खोज करना है जैसा उसने पवित्र आत्मा के अर्थानुवाद के अन्तर्गत वचन को लिखा है।

Creation Autonomous Academy

अर्थानुवाद तथ्य के अर्थ को लाता है। फिलि० 2:1-11 के संदर्भ को देखें। क्या यहां कई संदेश हैं? क्या हम महत्वपूर्ण शब्दों के अर्थ के विषय में खोज सकते हैं? जब एक साथ रखते हैं तो इस दिशा में कौन से तथ्य अगुवाई करते हैं?

इस पाठ की शिक्षा क्या है जो अर्थानुवाद प्रदान करता है, वचन का ठीक-ठीक अर्थ निकालने की आवश्यकता है।

जब हम देखते हैं एक कार्य की कला, एक कविता, एक संदेश, अथवा वचन का एक खण्ड, अर्थ के लिए यहां एक सैद्धान्तिक मांग है कि प्रश्नों का उत्तर दें, लेखक अथवा कलाकार क्या कहना चाहता है? वचन के मामले में तात्कालिक प्रश्न यह है कि परमेश्वर मुझे क्या बता रहा है?

लेखक के साथ पहचान शान्त बाइबल अध्ययन है। जैसा लेखक ने स्वयं लिखा है उसकी पुनः रचना नहीं की जा सकती।

वचन के अर्थानुवाद में हमारा उद्देश्य लेखक के संदेश को लाना है, हम बाद में हैं। और लेखक के पीछे स्वयं प्रभु यीशु खड़ा है, अपने दास के द्वारा अपने सत्य को बताने के लिए। वचन के अन्दर नया और अदभुत है हमारा लक्ष्य। हम अर्थानुवाद के प्रश्नों का उत्तर देकर इसकी रचना कर सकते हैं।

बाइबल आधारित अर्थानुवाद का विज्ञान सरल नहीं है। वेस्टमिनिस्टर अंगीकार के अनुसार, वचन में सभी चीजें समतल नहीं हैं, अथवा सभी चीजें स्पष्ट हैं। चार्ल्स स्पर्जन ने कहा, ' जब वे वचन को नहीं समझते तो वे घुटनों पर आ जाते हैं और परमेश्वर की आराधना करते हैं। बरनार्ड राएम ने कहा, 'सब कुछ व्यक्तिगत है उद्धार के लिए, और मसीही जीवन वचन में स्पष्टता से प्रकाशित है।

अर्थानुवाद का विज्ञान भाष्य विज्ञान के तकनीकि द्वारा जाना जाता है जो यूनानी शब्द, 'हरमेनेइयो' से आता है जिसका अर्थ है, अर्थ, अर्थानुवाद, व्याख्या जैसे कि लूका रचित सुसमाचार में पाया जाता है। और जैसा मूसा और सभी भविष्यद्वक्ताओं के साथ आरम्भ हुआ, उसने सभी वचन में अपने स्वयं के बारे में उसे समझाया। (लूका 24:27)

यह शब्द यूनानी देवता हरमेस के नाम से आता है, देवताओं का मिथक संदेशवाहक। यह उसका कार्य था कि वह लोगों के लिए देवता ने जो कहा है उसकी व्याख्या करे। इस संदर्भ में हरमेनियुटिक्स -भाष्य विज्ञान उत्पन्न हुआ था-अर्थनुवाद का विज्ञान। यह संदेश के पुनः प्रसारण का विज्ञान है जो साधारण रुप से समझा जा सकता है।

भाष्य विज्ञान चार बुनियादी सिद्धान्तों पर आधारित है। ये चार सिद्धान्त हमारी परमेश्वर के संदेश की समझ जो हम उसके वचन से पाते हैं पर आधारित हैं।

1-वचन वचन का अथानुवाद करता है। बाइबल स्वयं अपना विरोध नहीं करती है। क्याकि वचन का लेखक परमेश्वर है, वचन अपने साथ पूर्णतया सहमत है।

2-बाइबल का साहित्यिक अर्थानुवाद करें। शब्द पहले उसके समय के मूल्य में लिया गया। नवीनीकरण के दौरान यह आत्मीकरण मिथकीकरण के संदर्भ में आया इसे हम शाब्दिक रुप में जानें। यह लैटिन से आया। यह शब्द लिटरल लैटिन के लिटेरा से आया जिसका अर्थ है 'बाद में'। यह खण्ड के ठीक शब्द पर ध्यान देता है, यह उस अर्थ को लाता है जो उस समय था जब खण्ड लिखा गया।

3-बाइबल का अर्थानुवाद व्याकरण के आधार पर करें। वचन का अर्थानुवाद उसके स्वाभाविक, शाब्दिक अर्थ, व्याकरण के सामान्य नियमों के अनुसार करें।

-एक शब्द का मात्र एक शाब्दिक अर्थ है जब वह एक वाक्य में बोला गया।
-एक शब्द का अर्थ व्याकरण के नियमों में बंधा हुआ है।
-शब्द का अर्थ उसके संदर्भ में आता है।

3-लागूकरण

Creation Autonomous Academy

बाइबल अध्ययन का लक्ष्य है लागूकरण। प्रेरक प्रक्रिया के इस भाग में, हम वचन से सिद्धान्त को निकालेंगे जो हमारे मसीही व्यवहार पर प्रभाव डालेगा। एक बार जब हमने खण्ड का अध्ययन कर लिया है तब इस अध्ययन को अपने जीवन में लागू करें। तत्काल वचन हमारे व्यवहार को प्रभावित करता है, हमारे सभी प्रश्नों का उत्तर नहीं देता। वचन दिया गया है 'शिक्षा के लिए, पुनः प्रमाण के लिए, सुधारने के लिए, धार्मिकता की शिक्षा के लिए ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए।

लागूकरण हमारे सभी बाइबल अध्ययन में आवश्यक है। लागूकरण में, हम इस प्रश्न का उत्तर देते हैं, 'मैं कैसे प्रतिउत्तर दे सकता हूं?' अथवा 'जो कुछ हमने सीखा है उसके साथ हम क्या करें? बाइबल अध्ययन का उद्देश्य है एक परिवर्तित जीवन। अवलोकन और अर्थानुवाद के दौरान बाइबल अध्ययन के इस स्तर पर, हम परमेश्वर के वचन का अध्ययन करते हैं, लागूकरण में परमेश्वर का वचन हमारा अध्ययन करता है।

लागूकरण बाइबल अध्ययन से सम्बन्धित है, क्या हम पता लगा सकते हैं: 'वचन में सत्य के सिद्धान्त के खोज की प्रक्रिया का, इसका अर्थ है कि जो एक व्यवहार को प्रभावित करेगा और एक जीवन के अभ्यास में सत्य को रखेगा।' लागूकरण की प्रक्रिया में, हम अपनी खोज की भूमिका बनाते हैं और हमारे प्रतिदिन के जीवन में लागू करने के सिद्धान्तों को देखते हैं। हमारा लागूकरण स्वाभाविक रुप से हमारे खण्ड से आएगा। ये लागूकरण मसीह के लिए हमारी आज्ञाकारिता की बूनियाद डालेगा।

Creation Autonomous Academy

प्रेरक बाइबल अध्ययन विधि चार्ट

1-अवलोकन
2-अर्थानुवाद
3-लागूकरण

भजन 77 अध्याय

1-अवलोकन-

1-आसाप संकट में है। 77:2
2-आसाप अशान्त है। 77:2
3-आसाप चिंता अधिक कर रहा है। 77:3
4-आसाप घबराया हुआ है। 77:4
5-परमेश्वर ने आसाप की प्रार्थना का जबाब नहीं दिया। 77:3

आसाप परमेश्वर से सात सवाल करता है- 77:7-10 पद

1-क्या प्रभु मुझे युग-युग के लिए छोड़ देगा?
2-क्या परमेश्वर का वचन पीढ़ी-पीढ़ी के लिए निष्फल हो गया?
3-क्या परमेश्वर अनुग्रह करना भूल गया है?
4-क्या परमेश्वर मुझसे फिर कभी प्रसन्न न होगा?
5-क्या परमेश्वर की करूणा सदा के लिए समाप्त हो गयी है?
6-क्या परमेश्वर क्रोध करके अपनी सब दया को रोक रखा है?
7-क्या परमप्रधान का दाहिना हाथ बदल गया है?

2-अर्थानुवाद-

हम भी अनेको बार संकट, अशान्ति, अध्यात्मिक चिन्ता और घबराहट से होकर गुजरते रहते हैं। परमेश्वर कई बार हमारी प्रार्थनाओं का जबाब हमें नहीं देता है। कई बार हम भी परमेश्वर से सवाल करते हैं। इस्राएलियों के जीवन में लाल समुद्र का दो भागों में बंटना उनके लिए सबसे महत्वपूर्ण घटना थी और उन्होंने जल में मूसा का बपतिस्मा लिया था।

Creation Autonomous Academy

3-लागूकरण-

1-ऐसी परिस्थिति में हम भी भजन कार के साथ निम्न कार्य करें।
-परमेश्वर के कार्यो पर ध्यान देना।
-परमेश्वर के अद्भुत कार्यो पर ध्यान देना।

2-भजनकार आसाप का महान कार्य लाल समुद्र को दो भागों में बंटने की घटना को याद करना है। आज हम मसीहियों को परमेश्वर के सबसे बड़े काम क्रूस पर अपने पुत्र के बलिदान की घटना को याद करना है।

3-परमेश्वर के कार्यो को जो उसने हमारे जीवन मे किया है उसको हमें याद करना है।

लागूकरण-

एक डायरी बनायें और उसमें परमेश्वर के कार्यो को लिखें और उसे धन्यवाद दें।

परिभाषिक शब्दावली

अमल में लाना- लागूकरण, शिक्षाओं को अपने व्यवहारिक जीवन में लागू करना।

चिताना-चेतावनी देना

अभिप्राय-इच्छा

फलवन्त-फल लाना

गारन्टी-निश्चित

चौकस- सावधान

मीरास- उत्तराधिकार

डोकीमोस- ग्रहणयोग्य

तसल्ली-शान्ति

नामधराई-निन्दा

मनन- ध्यान लगाना

लेखन- लिखना

अवलोकन-देखना

मातृ भाषा- अपनी बोलचाल की भाषा

संचारण-बातचीत

संयोजित-जुड़े

व्याख्यान-भावार्थ

हिस्सा-खण्ड या भाग

मतलब-अर्थ

अलंकारिक- सजावटी

सामन्जस्यता-तालमेल

श्रोता-सुनने वाले

निवृत्त- स्वतन्त्र होकर

मधुर-मीठा

परिवर्तन- बदलाव

हिचकिचाहट- शंका

विभाजन-बांटना

चंगुल-हाथ, पकड़

वर्ण-अक्षर

मापने-जांचने

उत्कृष्ट-सबसे अच्छा

उद्धरण- पद जैसे उत्पत्ति 3:15

श्रंखला- प्रश्नों की सूची

आत्मकथा- अपनी स्वयं के जीवन की कहानी

श्रोत-सामग्री

रुचि-इच्छा

एकान्त- अकेले में

Creation Autonomous Academy

वजट- जमा खर्च की योजना
मार्गदर्शन- रास्ता दिखाना
मूल भाषा- लेखक की भाषा
संरचना- बनावट
विश्लेषण- छानबीन
निरीक्षण- जांच
रिफरेन्स- उद्धरण
गहन- गहरा
प्रेरक- उकसाने वाला, प्रेरित करने वाला
आर्कियोलोजी- पुरातत्व शास्त्र
होरीजेन्टल- समानान्तर

Creation Autonomous Academy

Bibliography

1 -12 Dynamic Bible Study Methods , Other-Richard Warren
1986 Zondervan Bible Publishers USA,SP Publications

2-How to Understand your Bible, Other-T.Norton Sterrett
1985 Published by Gospel Literature Service Bombay,Udyog Bhavan,250-D,Bombay-400025

3-How to read the Bible its worth, Other-FEE, Gordon D& STUART, Douglas
1983 Second Edition, Seconderabad, Ben Publishing

4-Opening up the Bible, Other-David Jackman
Scripture Union, 207-209 Queensway, Bletchley, MK2 2EB, England, UK

5-Interpreting God,s Plan, Other- Gibson,RJ
Paternoster,1997

6- Introduction to Biblical Interpretation, Other- Klein,William W, Blombrg, Craig L and Hubbard, Robert L Jr
Dallas: Word 1994

7-Let the Reader Understand, Other-Mc Cartney, Dan and Clayton, Charles
Wheaton: Victor Books, 1994

8-The Bible: Book for Today, Other- Stott, John RW
Leicester: Inter-Varsity Press, 1983

9-Hermeneutics, Principles and Processes of Biblical Interpretation, Other- Henry A.Virkler
Baker Books a division of Baker Book House Company, Grand Rapids, Michigan 49516-6287

10-The Topical Bible Concordance, Other- DM Milar
Lutterworth Press London, Masihi Sahitya Sanstha 70 JanPath, New Delhi

11-Introduction to Hermeneutics, Other-Mark, Rene
New York: Herder and Herder, 1967

12-Hermeneutics, Other-Palmer,R.E.
Evanston,Ill: Northwestern University Press, 1969

13-The Authority and Interpretation of the Bible, Other- Donald K.Mckim
San Francisco: Harper & Row, 1979

14-Principles of Biblical Interpretation, Other- Berkhof,Louis
Grand Rapids: Baker, 1950

15-Interpreting the Bible, Other- Mickelsen,A.Berkeley
Grand Rapids: Erdmans, 1963

Creation Autonomous Academy

16-Hermeneutics, Other-Ramm, Bernard
Grand Rapids: Baker, 1971

17-Biblical Hermeneutics, Other- Terry, Milton S.
Grand Rapids: Zondervan, 1974

18-Interpretation, Other- Roy B.Zuck
OM 2002 Secandrabad

19-The Holy Bible-Hindi
India Bible Publishers, C-3/10 DDA Flats, East of Kailash, New Delhi-110065

20-The Holy Bible-Hindi
The Bible Society of India, # 206 LOGOS, Mahatma Gandhi Road Bangalore-560001

21-Bible Dictionary, Other-Don Flaming

22-Bible Comentry, Other-Don Flaming

23-New Testament Comentry,
OM ,Secandrabad

Creation Autonomous Academy

भाष्य विज्ञान

Dr. Ram Raj David

Duluvamai, Manikpur, Pratapgarh,
Uttar Pradesh – 230202
Email: drramraj64@gmail.com

Creation Autonomous Academy